सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते ।
"सब दानों में ब्रह्म दान श्रेष्ठ है ।" [मनु]

॥ ओ३म् ॥

हरिद्वार के समीप आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब
द्वारा स्थापित ।

गुरुकुल महाविद्यालय

का

वृत्तान्त ।

जिसमें संवत् १९६६-१९६७ का वृत्तान्त, अधिकारी परीक्षा तथा स्नातक परीक्षा के नियम, और प्रबन्धादि के विधान, सम्मिलित हैं ।

श्री० महात्मा मुन्शीरामजी, मुख्याधिष्ठाता,
गुरुकुल कांगड़ी द्वारा प्रकाशित ।

पंडित अनन्तराम, प्रबन्धकर्त्ता
द्वारा
सद्धर्म-प्रचारक यन्त्रालय, गुरुकुल कांगड़ी में मुद्रित ।

संवत् १९६८ विक्रमी] दयानन्दाब्द. २८ [१९११ ई०]

गुरुकुलग्रन्थावली ।

संस्कृत

ओ३म् ।

भूमिका

(महोपाध्याय रामदेव जी लिखित)

सभ्य जगत् पर गुरुकुल के अधिकार

अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थितिः ।
ब्रह्मचर्य्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः ॥ योग २ । ३७ ॥

जब अभिलाषी जन अस्तेय धर्म्म में निश्चयात्मा और दृढ़ हो जाता है, और उस का मन परकीय धन हरण कुविचारों से सर्वथा मुक्ति प्राप्त करलेता है, तो संसार के सर्व रत्न और उत्तम से उत्तम प्राकृतिक पदार्थ उस के सन्मुख उपस्थित होजाते हैं । जिस समय वह पूर्ण ब्रह्मचर्य्य व्रत को धारण करलेता है, तो वह अतुल शक्ति और बल का भण्डार बनजाता है ॥ (पांतञ्जल योग सूत्र)

सारा प्राकृतिक संसार पृथ्वि, वायु, जलादि गुप्त रहस्यों से भरा पड़ा है—मनुष्य को खोज करने की आवश्यकता है । इसी प्रकार मानसिक संसार के पवित्र आत्माओं के पास मनुष्य जीवन के भेदों की चाबी है, उन को ढूंड कर उस चाबी के पता लगाने की ज़रूरत है । परन्तु उपरोक्त रहस्यों की प्राप्ति के लिये प्रथम मनुष्य को अपनी वाह्य इन्द्रियों की सांसारिक इच्छाओं के दमन की ज़रूरत है । (The light on the Path) ।

"शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शिष्टाचार है । प्रबल, दुर्निग्रह इन्द्रियों का दमन करना, शयित भावों को उत्तेजित करना, नवजात ज्ञान के अनुभवों को दृढ़ करना और सुरुचियों को मनोमय करना, एक सुविचार

को पुष्ट करना और उस के विपरीत विचार का दलन करना, यहां तक कि अन्त में एक बालक को सतुलता और समता युक्तस्वभावसम्पन्न मनुष्य बनादेना, यह माता पिता तथा प्रकृति देवि का समान उद्देश्य है।

हर्बर्टस्पेन्सर

आज कल का समय सभ्यता और ज्ञानोदीप्ति का समय है। प्राकृतिक शक्तियों पर मनुष्य का विजय और प्रचण्ड दुर्दान्त और दुरुपचार मायावी पंचभूतों पर उस का राज्य, वर्त्तमान समय की यह आश्चर्य जनक बातें हैं। अग्नि नौकाएं समुद्र को चीरती हैं, विमान वायुमंडल का अवगाहन करते हैं। भूमि मनुष्य के इशारे मात्र पर ही अपने सर्व रत्नमय कोष उस की भेट करदेती है। रेलवे मोटोकार और अन्य विद्युत यानों ने समय और दूरी को करीब २ बिलकुल भुला दिया है। कलाओं के आविष्कार ने मानवी परिश्रम को ही निरर्थक करादिया है। कला युक्त शताग्नियें अग्नि और धूवां बाहर फेंक कर मानवी मस्तिष्क की अद्भुत शक्तियों की घोषणा कर रही है। कारखानों से निकलने वाली काले धूयें की पेचदार लहरें, यद्यपि वे वायु को गंदा करती हैं और स्वतन्त्र श्वांस को रोकती हैं, तथापि मानासिक उच्चता के क्षेत्र में मानवी उन्नति का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत कर रही हैं। किन्तु इन सब सर्वशंसित आविष्कारों की विद्यमानता में भी जिन्होंने विज्ञानकों के विज्ञान रूपी मुकट के मणियों की उज्ज्वलता को द्विगुण कर दिया है, मनुष्य समाज की दशा किसी प्रकार भी पूर्व की अपेक्षा संतोष जनक नहीं है। दुःखितों के भयानक आर्तनाद, निर्धन और दीनों का करुणामय आक्रोश शिक्षितों की असंतुष्ट मंद ध्वनि पुलिस, और सफ्राजिस्टों (राजकीय कार्य्यों में स्वाधिकार चाहने वाली इङ्गलेण्ड की स्त्रीयें) में खुल्लम खुल्ला दैनिक युद्ध, कार्य्यभ्रष्टों के भयावह सभाएं, बम के गोले, जिन का फूटना

यूरोप की राजधानीयों की दैनिक घटनायें हैं, यह सब घटनाएं एक स्वर से घोषणा कर रही हैं कि उन्मार्ग राज्य में कोई न कोई पापमय गुप्त हाथ काम कर रहा है। आज कल के सभ्यजगत् में मनुष्य समाज का एक बड़ा भाग दुःख सागर में गोते खा रहा है। और जब एक सम्पति शास्त्र वेत्ता किसी जाति के धनवान होने का कथन करता है तो उस के कथन का अभिप्राय केवल यही हो सक्ता है कि उस जाति में बहुत से परिपुष्ट लक्षपति हैं जो सांसारिक भोगों में लिप्त जीवन व्यतीत करते हैं जब कि उन के लक्षों भाई कीचड़ में लोटते और धूलि में हाथ पांव मारते हैं। और भूमि माता को अपने दुःख जन्य नेत्रजल से सींच रहे हैं और वायु मंडल को अपने दीर्घ निश्वासों से परिपूर्ण कर रहे हैं। और अपने आर्तनादों से आकाश को फाड़ रहे हैं। इस महात्रास के भयानक दृश्य पर विचार करते हुवे लेकी (Lecky) जैसे गम्भीर और स्थिरबुद्धि मनुष्य के मन की अभ्यस्त समता भी अस्तव्यस्त होजाती है और विवशतः निम्न वाक्य उन की लेखनी से निकल पड़ते हैं।

"यह अत्यन्त स्वार्थ युक्त और अत्यन्तनीच प्रकार की सामाजिक प्रसिद्धि की प्राप्ति के लिये उन साधनों का महान् निरर्थक व्यय ही है, जो साधन अन्यथा मनुष्य समाज के लिये सुखवर्धक हो सक्ते हैं और जो साधन अराज्यकीय भावों के औचित्यर्थ का कारण बनते हैं जो भाव हमारी भविष्यत् की सारी सभ्यता के नष्ट भ्रष्ट करदेने का डर उत्पन्न करते हैं। ऐसीही बातें हैं जो पारस्परिक जातीय घृणाओं को उत्तेजित करती हैं और जातीय अन्तरों को विस्तार देती हैं और यदि लोकमत ने इनका कोई प्रतिकारक उपाय नहीं सोचा। तो एक दिन यह बातें अपने पक्षपाती समाज को एक भीषण और उचित दंड दिलायेगी।"

इस समय सारी की सारी राज्यनैतिक शक्ति अतिशिक्षित मनुष्यों के हाथ में है जिन्हों ने कुलीन धनिकों के साथ संधि की हुई है। वास्तविक बात यह है कि सरस्वती देवि और लक्ष्मी देवि में इस समय अटूट मैत्रि और अखंड प्रेम है । पाश्चात्य कई देशों में न्याय केवल दार्शनिकों की विचारकोटि में एक कल्पना मात्र ही रह गया है । न्याय केवल विचारशीलों से लक्षण किये जाने के ही योग्य विषय है। अन्य उसका कोई प्रयोग नहीं। योरुप के एक अनुभवी लेखक ने किसी अपने ग्रन्थ में लिखा है कि आनन्द पर धनाड्यों का अनन्य मुक्त अधिकार है और दुःख निर्धनों का भाग्य है और वर्त्तमान नामधारी न्याय का पवित्र कर्त्तव्य इन अवस्थाओं को स्थिरता देना है यह कथन सर्वथा सत्य है यद्यपि इस से निन्दाशीलताकी गंध आती है । उपरोक्त इतिहास वेत्ता तथा दार्शनिक के एक सर्वप्रिय ग्रन्थ के निम्न उद्धरण से स्पष्ट होजायगा कि सर्व साधारण प्रजा के अधिकार उन के प्रतिनिधियों तथा न्यायाधीशों द्वारा कहां तक सुरक्षित हैं:—

कई एक अत्यन्त घृणित कर्म जो मनुष्य कर सक्ता है न्याय नियम से प्रायः अस्पर्षित रहते हैं और लोक मत की धिक्कार भी नाम मात्र की ही उन पर पड़ती है । राज्यनैतिक अपराध जिन को एक मिथ्या, जीवन—हीन भाव ऐसी शीघ्रता के साथ क्षमा करदेने को उद्यत है, अधिकतः उन पुरुषों में पाये जाते हैं जो सर्वसाधारण के जीवनों तथा उन के धन को निज सम्पत्ति तथा शक्ति बढ़ाने में व्यय करते हैं । ऐसे ही पुरुष हैं जो अपनी निज आकांक्षाओं के पूर्णार्थ अपने देश के उन अधिकारों तक को जिन पर देश का जीवन और मृत्यु निर्भर होता है, निछावर करने को तय्यार रहते हैं । वे पुरुष जो किसी बड़ी जातीय आपत्ति तथा घबराहट के समय अपनी स्वार्थ सिद्धि

के लिये समाचार पत्रों में झूठ पर झूठ उड़ाते हैं । (इस निश्चय के साथ कि उनकी झूठों के उत्तर प्रकाशित होने तक वे अपने मनोरथों में कृतकार्य्य हो जांयगे) राज्यसभा के भवनों में तथा अन्य उत्सवों में बिना किसी प्रकार भी लज्जा अनुभव किये के सम्मिलित होते हैं । इस संसार में बहुत सा झूठ जिस की ठीक मात्र नियत करना एक कठिन कार्य्य है ऐसा है जिस का कारण केवल असावधानता, भूल और अत्युक्ति नहीं हो सक्ते, प्रत्युत सपष्टतया ऐसे झूठ जान बूझ कर द्वेषवश फैलाये जाते हैं । कभी तो स्वार्थ सिद्धि के लिये लोगों में घबराहट फैलाना ऐसे झूठ का कारण होता है । कभी व्यक्तिगत द्वेष को पूरा करना और कभी निष्प्रयोजन ही ऐसे झूठ फैलाये जाते हैं जिस से सर्वसाधारण को कष्ट में पड़े देख कर दुष्ट मनुष्यों को आनन्द आता है । यह एक बड़ा महान् प्रश्न है कि क्या बड़े से बड़े अपराधी कारागार की चार दिवारी में ही मिलते हैं । अल्प पापी पुरुष तो सदैव दंड पाता रहता है । परन्तु एक आडंबरी पापी दंड से वंचित ही रहता है ।

गठकतरे और संध लगाने वाले कभी न कभी न्याय के पंजे में फंस जाते हैं और अपने दावों का उचित दंड भुक्त लेते हैं, परन्तु बड़ी २ कम्पनियों के प्रबन्धकर्त्ता और व्यवसाय के चलाने वाले, कापटिक साधनों से जो न्याय की मार में नहीं आ सकते, लाखों मनुष्यों के धन का नाश करके बहुत सी सम्पत्ति एकत्रित कर लेते हैं । प्रायः ऐसे पाप कर्म्म उन शिक्षित पुरुषों द्वारा ही होते हैं जिन के पास सर्व आवश्यकीय सामग्री सर्व प्रकार के सुख और सांसारिक भोग उपस्थित हैं, इन में जो बहुत गिरे हुये हैं वर्त्तमान सभ्यता भी उन्हीं की बहुधा पक्षपातिनी है ।

इस विषय में भारतीय शिक्षित पुरुष भी अपने पाश्चात्य पथदर्शक

से किसी अंश में कम नहीं, जिसका अनुकरण करना यह अपना परम सौभाग्य समझता है। जो सुप्रसिद्ध प्राडविवाक (Lawyer) लोक-व्याख्यान वेदि पर खड़ा होकर भारत दारिद्रय पर अति मर्मस्पर्शी तथा वाक्पाटव पूर्ण और प्रभावशाली व्याख्यान देता है संभव है वह स्वयं ही प्राडविवाक रूप में एक ऐसा पिशाच हो, जो अज्ञानी ग्रामीणों को बहका कर 'मुकद्दमा बाज़ी' द्वारा और चोर हिंसकादि पुरुषों को सहायता देकर न्याय के उद्देश्यों को पूरा न होने देने के यत्नों द्वारा जाति का हृदय–रक्त पीता है। वह प्राडविवाक जो सत्यता के नाम पर शासकों से अपील करता है और उन नित्य सत्ताओं पर जिन्हों ने प्रकृति तथा तज्जन्य पदार्थों में गहरा प्रवेश किया हुवा है व्याख्यान देते हुवे अपनी सारी वाक्पटुता को समाप्त कर देता है, समय पड़ने पर न्यायालय में अपना सारा बल और शक्ति उस अभियोग के जिसकी उसने फीस ली हुई है, सत्य सिद्ध करने में लगा देगा, यह जानता हुआ भी कि वह अभियोग असत्य है। एक प्रकार का ऐसा उत्साह और निश्चय प्रकट करेगा जिसको वह हृदय से बिल्कुल भी अनुभव नहीं करता। अपने विपक्षी की अशुद्धि अथवा भूल का, किसी पारिभाषिक नियम का जो हानीकारक साक्षी को रोक सके, और उन सर्व साधनों का जिनके द्वारा ऐसी 'कानूनी' सूक्ष्मता तथा तीक्ष्ण समालोचना प्राप्त हो सके जो हानिकारक परिणामों का विनाश करें, प्रतिकूल तथ्यों को तुच्छ तथा अस्पष्ट सिद्ध कर सकें, और विपक्षी साक्षीयों को झूठला सकें, बड़ी बुद्धिमत्ता से अपने पक्ष के सिद्धचर्थ काम में उठायेगा। वह अपने अभियोग की सहायतार्थ हर प्रकार के पक्षपातीय भाव को अपील करेगा। तत्क्षण के लिये उस अभियोग को सर्वथा अपना व्यक्तिगत कार्य्य समझता हुआ प्रतीत होगा। और उसकी सिद्धि को अपना

परम उद्देश्य प्रकट करता हुआ उस में दत्तचित्त होजायेगा। और यदि अपनी बुद्धिमत्ता तथा वाक्पटुता युक्त विवाद द्वारा अपराधी को दंड से बचा लेता है अथवा साक्षि के विरुद्ध न्यायाधीश से आज्ञा प्राप्त कर लेता है, तो अपने आप को बड़ा विजयता अनुभव करता है। अतथ्यता, कपट, मिथ्याभाषण, तथ्यभग्नता, उद्धरणों की विकृति, उदाहरणों का असत्य प्रयोग, और एक दुष्ट पुरुष के दण्ड पा जाने पर बनावटी क्रोध, यह सब कुछ एक 'वकीली सभ्यता' और वकीली अन्तःकरण के आश्रित रहते हुवे अपृष्टव्य है। जो सभ्य पुरुष एक दीन फेरी वाले को जो क्षुधा वाणों से वेधित और कई निस्सहाय क्षुधा पीड़ित संबन्धियों के दुःख से दुःखित असत्य कथन द्वारा आने की एक तुच्छ रकम कमा लेता है घृणा–दृष्टि से देखते हैं, वे एक धर्मच्युत वकील को जिस ने शुद्धवस्त्र पहने हुवे हो, प्रति दिन मूछ दाड़ी का क्षौर करता हो, सुनहरी ऐनक चढ़ाये हुवे हो, और चांदी की घड़ी पाकेट में रखता हो, अपनी सभाओं में अतुल प्रशंसा करते हैं–पब्लिक सभाओं में सादर उसका स्वागत करते हैं–वे उसको दुःखित देश निवासी के अधिकारों और भारतमाता के गौरव का रक्षक समझते हैं। और उस कृत्रिम–पवित्रता–धारी और धर्मविश्वास शून्य पुरुष को "स्वर्ग का राज्य" तथा "परमात्मा की सर्व व्यापकता" आदि विषयों पर उपदेश देने की आज्ञा देकर धर्म की वेदि को अपवित्र कराया जाता है। एक पुलिस के प्यादे को थोड़ी रिशवत के कारण समाचार पत्रों तथा राजकीय सभाओं में पतित सिद्ध किया जाता है, परन्तु रक्षक पत्र के संपादक की पूजा होती है और उसको जातीय गौरव का रक्षक समझा जाता है जो दक्षिणा और मित्र के उपहारों की खातिर अपने अन्तःकरण को बेचकर अपनी बुद्धि का दारोपयोग करता है।

एक गठकतरे से परे २ हटते हैं एफ कम्पनी संचालक को जो झूठे हिसाब बनाता है, झूठी बचत दिखाता है, और अङ्कों के चातुर्य्य हेर फेर से हिस्सेदारों का धन स्वयं हड़प कर डालता है । बड़ा दक्ष तथा बुद्धिमान् व्यवसाय कुशल मानते हैं। एक धनाढ्य मनुष्य एक राजनीति में आवश्यकीय स्थिति रखने वाली उस जाति की मानसिक दासता को तोड़ने वाली पार्टी का नेता समझा जाता है जिस जाति का प्रवर्त्तक 'बुत शकनों' का शाहजादा था और सर्व प्रकार के मिथ्या ढकोसलों का परम शत्रु था-क्योंकि वह धनाढ्य मनुष्य अपने आप को विष्णु का अवतार बताकर अपने सहस्त्रों साथियों के मनों को दासता की जंजीर से बांधने और उनकी बुद्धियों को ताले लगाने में कृत कार्य्य हुआ है, और क्योंकि वह रुपये के बदले अपने शिष्यों को मुक्ति दिलाने का ठेका उठाता है, नियत धन राशी लेकर स्वर्ग में प्रवेशार्थ मार्गपत्र प्रदान करता है, और क्योंकि वह अपनी आधीनता में आये हुए सरल हृदय परन्तु अविद्या ग्रस्त मनुष्यों के मास्तिष्कों को जकड़ने के लिये प्रति दिन नई बेड़ियें घड़ता रहता है । एक समाज संशोधक जो बालविवाह के विरुद्ध धुरंधर वक्तृतायें करता है और बालविवाह के दुःखों का ऐसे हृदयवेधक तथा मर्मस्पर्शी शब्दों में चित्र खींचता है कि स्वभावतः श्रोताओं के अश्रुपात होजाते हैं । वह अपनी निज धर्म्मपत्नी से इतना दबा हुआ रहता है कि अपनी पुत्री का विवाह ८ वर्षों की ही आयु में करके उसको १२ वर्ष की आयु में निरन्तर अनिश्चित वैधव्य के दुःखों में फैंक देता है । एक राजनैतिक नेता जो अपने पब्लिक व्याख्यानों में ही स्वदेश सम्बन्धी सब युद्धों की समाप्ति कर डालता है और राजा की सर्व प्रजा—क्या गोरा और क्या काला के साथ समान वर्त्ताव के लिये चातुर्य युक्त युक्तियें प्रस्तुत करता है

और जो ट्रान्सवाल में रहने वाले भारतवासियों के दुःखों का बड़े करुणामय शब्दों में वर्णन करता है, अपनी माता और धर्म्मपत्नी को घर की चारदीवारी में बन्द रखता है और एक अन्त्यज से स्पर्श होने पर स्नान करता है जिन ६ करोड़ अन्त्यजों पर वह स्वराज्य स्थापन करना चाहता है क्योंकि विदेशी राज्य जो अन्त्यजों पर वे रोक टोक अत्याचार बन्ध करता है, वस्तुतः हितकर नहीं है और वह उस विदेशी राज्य के स्थान में अपना जन्मक्रमागत वर्णव्यवस्था पर निर्धारित स्वदेशी राज्य जमाने की इच्छा रखता है ।

यहां तक तो हमने उस रोग के चिन्हों को दर्शाया है जो सभ्य समाज के जीवन को खा रहा है और जिस ने सभ्य मनुष्य समाज को अपने लोहसदृश दृढ़ चुङ्गल में दबोच कर उस के सर्वथा नाश कर देने की सीमा तक पहुंचता प्रतीत होता है । अब हम इस रोग की औषधि के विषय में कहेंगे । हमारी सम्मति में इस रोग का कारण दो शब्दों में 'धार्म्मिक अधःपतन' कहा जा सकता है । मनुष्य समाज के सर्व दुःखों का कारण सदाचार और स्वात्मनिग्रह का अभाव है। ऐसा क्यों है ? यह इस लिये है। कि हम ने शिक्षा की विधियों तथा उद्देश्यों को ठीक नहीं समझा है । बहुत से मनुष्य अपने माता पिता तथा नगर निवासी के रूप में प्राप्त अनुभवों की विद्यमानता में भी आशाएं बनाए रखते हैं और यह भूल जाते हैं कि केवल बुद्धि की उन्नति आचार पर बहुत कम प्रभाव डाल सकती है और मन पर मुलम्मा किये हुए मत मतान्तर के संस्कार रटे हुए सदाचार के नियम और सद सद्विवेचन के पाठ मानासिक कुवासनाओं का समूल नाश नहीं कर सकते । बुद्धि कोई शक्ति नहीं किन्तु एक उपकरण है बुद्धि कोई ऐसा पदार्थ नहीं है जो प्रेरणा करता है और स्वयं कार्य कर्त्ता है परन्तु वह एक ऐसा पदार्थ है जो अन्य शक्तियों

से प्रेरणा किया जाता है और जिस से कार्य किया जाता है । यह कहना कि मनुष्य बुद्धि द्वारा शासित होता है ऐसा ही अयुक्त है जैसा कि यह कहना कि मनुष्य आंख द्वारा शासित है । बुद्धि आंख है, वह एक ऐसी आंख है जिस के द्वारा मनुष्य की इच्छाएं अपनी तृप्ति का मार्ग देखती हैं, और शिक्षा इसे केवल एक अपेक्षया अधिक उत्तम आंख बना देती है-अर्थात् उसे एक विस्तृत तथा शुद्ध जांचने वाली दृष्टि दे देती है परन्तु वह उस की (बुद्धि की) अभिलाषाओं को नहीं बदलती । तुम चाहे इसे कितना ही दूरदर्शी बना दो, मनोविकार फिर भी उसके झुकाव की दिशा निश्चित् कर देंगे अर्थात् उसकी ध्येय वस्तु को निश्चित कर देंगे । नैसर्गिक बुद्धि वा मानसिक भाव जिन परिणामों को निश्चित कर देंगे बस बुद्धि उनको पूर्ण करने में लग जायगी । जहां आचार दोषयुक्त है तो वहां बुद्धि चाहे कितनी भी उच्च क्यों न हो मनुष्य को ठीक मार्ग पर ले जाने में अकृत कृत्य होती है क्यों कि प्रबल इच्छाएं उसके सब अनुमानों को झूठ कर देती हैं नहीं २ बुराइयों को पहले से देख लेने वाली विशिष्ट से विशिष्ट दृष्टिएं भी मनुष्य को नहीं रोक सकतीं जब कि प्रबल मनोविकार अपना कार्य कर रहे होते हैं । स्पेन्सर ने ठीक कहा है (जिस के लेख हम अभी उद्धृत कर आए हैं) कि हम कोई भी सदाचार सम्बन्धी लाभ-बुद्धि की अपेक्षा उत्तेजक शिक्षा से अधिक उठा सकते हैं । यदि एक बालक को यह बताने के स्थान में कि यह ठीक है और यह अशुद्ध तुम उसके अन्दर सदाचार के प्रति प्रेम तथा दुराचार के प्रति घृणा के भाव उत्पन्न करते हो,-उच्च इच्छाएं उत्पन्न करते हो तथा बुरी इच्छाएं नष्ट करते हो, पहिले से उसके अन्दर विलीन सद्भावों को पुनरुज्जीवित करते हो और यदि एक स्वार्थी को अधिक

उत्तम बनने के लिये प्रोत्साहित करते हो और संक्षेप से कहें तो यदि तुम ऐसी अवस्था उत्पन्न करते हो जिस से कि उचित आचार स्वाभाविक अन्तरीय तथा अकृत्रिम हो जाता है तो तुम बहुत कुछ लाभ पहुंचाते हो । परन्तु धार्मिक प्रश्नोत्तर मालाओं का अभ्यास और सदाचार के नियमों का शिक्षणमात्र कभी यह प्रभाव उत्पन्न नहीं कर सकते केवल बारम्बार योग्य उत्तेजनाओं का उद्बोधन आचार में परिवर्त्तन कर सकता है । केवल बुद्धि से लब्ध विचार जिन के लिये अन्तरात्मा से कोई उत्तर नहीं मिलता आचार पर कोई प्रभाव नहीं डालते और सांसारिक जीवन में प्रवेश करने पर बड़ा जल्दी भूल जाते हैं । दूसरे शब्दों में ऐसे कह सकते हैं कि केवल बुद्धि की उन्नति वर के स्थान में शाप होजाती है यदि वह आत्मिक उन्नति के साथ २ न चले, आत्मा इच्छा शक्ति का आसन है । यदि मनुष्य की इच्छानुरूप स्फूर्त्ति को ठीक ठीक ओर चलाना हो जिस के कि बुद्धि और अन्य शक्तियें आधीन हैं, तो धार्मिक नियमों का अभ्यास तथा आत्मिक साधनों की आवश्यकता है । आत्मिक शक्तियों को भी इस से पहिले कि वह पुष्ट तथा दृढ़ हो निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है । यह केवल सत्यधर्म ही है जो कि आत्मिक नियमों के लिये उत्तेजना उत्पन्न करता है । भारतवर्ष के स्कूलों में धार्मिक शिक्षा नहीं दीजाती । पश्चिम में भी शिक्षा को धर्म से पृथक् करने के लिये आन्दोलन बढ़रहा है । अब धर्म का चारों ओर अनादर है, जिस का कारण बहुत सरल है और वह यह कि अनेक सम्प्रदाय तथा उनका कर्मकाण्ड रूपी शरीर अब अन्तरात्मा के न रहने से निर्जीवित होकर गल सड़ रहा है और लोगों को दूर भगा रहा है पवित्र तथा सत्य धर्म का स्थान अब आत्मोच्छेदक नास्तिकता पूर्ण स्वाच्छन्द्यवाद ने तथा अपवित्र धर्म विरोधी दर्शन ने ले लिया है ।

प्रधानता पर पहुंची हुई बुद्धिदेवी की दृष्टि ऊपरी बातों से परे नहीं जा सकती और पदार्थों के स्थिर सम्बन्ध को नहीं देख सकती और अतएव यह स्वाभाविक ही है कि वह उस से सम्बन्ध नहीं रखती जो कुछ वास्तव में है किन्तु वह उससे सम्बन्ध रखती है कुछ दीखता है अर्थात् तथ्यों से सम्बन्ध नहीं रखती किन्तु प्रतीतियों से सम्बन्ध रखती है। इस सभ्यता के काल में इसका जो हमारे सदाचार के व्यवहार पर प्रभाव हुआ है उसे कार्डनिल न्यूमैन महोदय ने इन शब्दों में प्रकाशित किया है।

"पाप अपराध नहीं है किन्तु पाप का पकड़ा जाना अपराध है निज जीवन चाहे कैसा भी हो पवित्र है परन्तु उसकी खोज करना असह्य है और बाह्यशिष्टा चार ही सद्गुण है अफवाहें उड़ाना, ग्राम्यता, बड़े २ भयानक कार्य, घृणित आचरण परले दर्जे के अपराध हैं। शराब पीना, कसमखाना, अत्यन्त दरिद्रता, अदूर दर्शिता, आलस्य अनियम स्वच्छन्द आचार को दिखाने के लिये पर्याप्त है, कवि लोग निरङ्कुशता से जो चाहें कह सकते हैं चाहै वह बात कैसी ही पापमय क्यों न हो प्रतिभाशाली मनुष्यों की पुस्तकें भय लज्जा तथा शङ्का के विना पढ़ी जा सकती हैं चाहें उनके सिद्धान्त उनका रहन सहन तथा उनकी विख्याति कुछ भी हो किसी मनुष्य में रूप सौन्दर्य तथा वीरता का होना जाति पर कोई भी बुरा प्रभाव डाल सकने के लिये पर्याप्त है। राज दर्बार के ठाट बाट सभ्यजाति के अमोद प्रमोद प्रतिभा, कल्पना शक्ति रुचि कुलीनता तथा पद के रोब की आड़ में कैसे भी पापमय तथा नीच कर्म किये जा सकते हैं।

सच्चा धर्म शनैः २ बढ़ता है परन्तु जब एक बार रोप दिया जाता है तो इस का उखाड़ फेंकना बड़ा कठिन है। परन्तु इस की बुद्धि

निर्मित नकल निर्मूल होती है वह बड़ी जल्दी फूट पड़ती है परन्तु उतनी ही जल्दी मुरझा भी जाती है.... परन्तु जब वास्तविक शक्ति नष्ट हो जाती है तो फिर राजसिंहासनच्युत राजाओं की न्याई उस के केवल श्री और मानमात्र शेष रह जाते हैं। कुरूपता इस को घृणास्पद बना देती है अतएव क्यों कि यह मनुष्यों को पाप से नहीं हटा सकती इस लिये कुरूपता से बचने के लिये भूषणों से अपना शरीर सजाती है। वह व्रण युक्त स्थानों को जिन्हें वह खोज नहीं सकती और ठीक नहीं कर सकती उन्हें खुर्च कर लेप चढ़ा देती है, जब कि परिपक्व जाल-साज़ी, अन्तःकरण को सुरङ्ग लगा कर छिपे २ दूषित कर देती है। केवल बुद्धि विषयक शिक्षा ने स्वार्थ, ईर्षा, तथा जातीय द्वेष के उन्मूलन के स्थान में अपने उपासकों को अपनी शक्ति के सङ्गठन करने और द्विगुणित शक्ति से कार्य करने तथा न्यूनतम यत्न से जातियों की अधिक तम हानि करने के लिये समर्थ बना दिया है। शक्तिशाली लोगों ने उस शक्ति का लाभ उठाया जो कि उन्हें विद्या से प्राप्त हुई और उस शक्ति का एक बड़े भारी मनुष्य समाज को उस के सुखोपभोगों से बञ्चित रखने में उपयोग लिया। उन्हों ने इस शक्ति के स्रोत पर अपना सिक्का जमा लिया है और बुद्धि के उपलब्धि क्षेत्र में सर्वाधिकार अपना लिये हैं। शिक्षा को इतना अधिक धनोपलभ्य बना दिया गया है वह उस की कभी अभिलाषा भी नहीं करते। जातीय द्वेष ने पार्टी गवर्नमेण्ट नेशनल् लीगुस् और ट्रेड युनियन में पर्याप्त भार हलका करने वाले यन्त्र और उपकरण पा लिये हैं। असभ्य जङ्गली जातियों के सब दोष परिपूर्ण कर दिये गये हैं। यद्यपि उन्हें सुधार कर महत्व का रूप दे दिया गया है और उन में से प्रत्यक्षतः घृणास्पद तथा भद्दी बातें निकाल दी गई हैं। पेप्टोनाइट पिल्स सुगर कोटिड किनाइन

पिल्स और स्कौट्स एमल्शन की तथा अन्य पेटेण्ट औषधियों की न्याईं जो अपने समय की रुचि की अधिकता और अन्तर्भूत आत्म संयम के अभाव को स्पष्टतया दिखाती हैं। हमारे पास नीचता का एमल्शन है स्वार्थ की सुगर कोटिड गोलियां हैं जातीय द्वेष की पेप्टो नाइज्ड गोलियां हैं और ईर्ष्या का विष है जिस का कटु प्रभाव छिपा दिया गया है।

यह हत्या करने का प्रकार अभी भी निःशेष नहीं हो गया है केवल इस ने ललितकला का रूप धारण कर लिया है और "प्रयाण युद्ध" (aggressive war) के नाम से पुकारा जाता है। वह मनुष्य जो अपने उपायों का पूर्ण सङ्गठन करके बहुत बड़े परिणाम में हत्या करते हैं उन का वीर कह कर स्वागत किया जाता है और वह देवता मान कर पूजे जाते हैं। व्यभिचार की रुचि बन्द नहीं हुई केवल उसे सुधारा हुआ रूप दे दिया गया है और " जङ्गली ओट का बोना, " " स्वतन्त्र प्रेम," "स्त्री का प्रत्येक अवस्था में बच्चे का पिता चुन सकने का नैसर्गिक अधिकार " इत्यादि विशेषणों से उच्च पद पर पहुंचा दिया गया है। अधर्म से उत्पन्न बालक " प्रेम के बालक " कहलाते हैं। अधार्मिक स्त्रियें " समाज प्रिय स्त्रियें " कहलाती हैं। धनी दुर्व्यसनी व्यक्तियों को " चतुर समुदाय" कहा जाता है।

इस लिये वर्त्तमान समय में सब से बड़ी आवश्यकता जितेन्द्रियता की है। यदि समाज में आत्मसंयम नहीं होगा तो वह अपनी अन्तिम गति पर पहुंच जायगा और युद्ध सामग्री की दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि और विशाल भयङ्कर " ट्रेड नाटो " का उपयोग अन्त को एक दूसरे महाभारत में परिणत हो जायगा। प्रकृति इन असह्य

बातों से छुटकारा पाने के लिये बड़े निष्ठुर उपायों को काम में लायेगी वह किन्हीं विशेष राष्ट्रों वा सभ्यताओं की परवाह नहीं करती।

यदि समाज को सड़ने गलने तथा टुकड़े टुकड़े होने से बचाना है तो शिक्षा प्रणाली समूल बदल देनी चाहिये। प्राचीन आर्य्य शिक्षा के ठीक सिद्धान्त को समझते थे और प्राचीन स्मृतिकार मनु भगवान् यद्यपि वह बुद्धि की उन्नति के सत्फलों से पूर्णतया अभिज्ञ थे, लिखते हैं* कि गुरु शिष्य को उपनयन के पश्चात् प्रारम्भ से ही शौच, आचार अग्नि कार्य और सन्ध्योपासन की शिक्षा दे।

अतः शिक्षा का प्रारम्भ प्रार्थना के लाभों पर विवाद करने से प्रारम्भ नहीं होना चाहिये किन्तु शिष्योंसे ऐसा करवानेसे होना चाहिये। और फिर शारीरिक स्फूर्त्ति जो कि आत्मिक प्रवृत्तियों का दिग्दर्शक यन्त्र है वश में होनी चाहिये और इस प्रकार अनभीष्ट प्रवृत्तियें उन्हें प्रकट न होने देकर और इस प्रकार भूखा मार कर उखाड़ फैंकनी चाहियें। महर्षि कहते हैं:—

† उस के हाथ पांव और नेत्र चञ्चल नहीं होने चाहियें, उस का स्वभाव सीधा होना चाहिये उसे वाक् चपल भी न होना चाहिये और न उस की बुद्धि सदा पर द्रोह के कर्मों में लगी रहनी चाहिये।

निरर्थक चेष्टाएं निर्बल इच्छा शक्ति और निरर्थक विचारों के चिन्ह हैं। इच्छा शक्ति को निर्बलता के सब चिन्हों के दबाने द्वारा दृढ़ करना

---

* उपनीय गुरुः शिष्यं शिक्षयेच्छौच मादितः।
आचार मग्नि कार्यंच सन्ध्योपासन मेव च ॥ मनु० ॥ २ ॥ ६७ ॥

† न पाणिपादचपलो न नेत्रचपलोऽनृजुः। न स्याद्वाक्चपलश्चैव न परद्रोहकर्मधीः।

चाहिये यह प्रकार आधुनिक मनोविज्ञान द्वारा भी अनुमोदित है यह बात महाशय मरे के निम्नलिखित कथनों से स्पष्ट हो जायगी।

उत्तेजनाओं का संयम उस के सब विलीन चिन्हों का दबाना ही है। उत्तेजनामय जीवन अपनी विलीन इच्छा पूर्त्तियों से ही जीवित रहता है और उस के विना स्थिर नहीं रह सकता। धार्मिक स्मृतियों में धार्मिक विचारों के दृढ़ करने के लिये निज रूप से परिश्रम करने की आवश्यकता की अपेक्षा कोई बात बारम्बार नहीं कही गई स्मृतिकारों की यह उत्तेजनोन्नति विषयक आज्ञाएं इस सर्वतन्त्र सिद्धान्त पर निर्भर हैं कि कोई भी अन्तरीय उत्तेजना उस के चञ्चल रूपों के रोक रखने से वश में की जासकती है और वहिर्मुख वृत्तियों की पूर्ति के निषेध के अभ्यास से भूखी मारी जा सकती हैं।

स्वार्थ वृत्ति का बालक के कोमल हृदय में उस के प्रति घृणा उत्पन्न कराकर नष्ट कर देनी चाहिये क्यों कि दूसरों को निर्मूल करने और ईर्ष्या से हानि पहुंचाने की इच्छा एक ऐसी इच्छा है जो अर्वाचीन मनुष्य समाज के दुःखों की उत्तरदात्री है। परन्तु नीच प्रकृति इतनी सुगमता से नहीं सधाई जा सकती। अतः आत्मसंयम की एक प्रबल तर विधि की आवश्यकता है इस बात को महर्षि इस प्रकार कहते हैं:—

* जिस प्रकार तपाये जाने से धातुओं के मलदग्ध हो जाते हैं इसी प्रकार प्राणों के निग्रह से इन्द्रियों के दोषदग्ध हो जाते हैं मनुष्य प्राणायाम से दोषों को, धारणा से पापों को, प्रत्याहार से नीच वृत्तियों के संसर्ग को और ध्यान से प्राकृतिक आकर्षण को दग्ध करे।

*दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः। तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात्। प्राणायामैर्दहेद्दोषान् धारणाभिश्च किल्बिषान्। प्रत्याहारेण संसर्गान् ध्यानेनानीश्वरान्गुणान्। मनु ६। ७२॥

उसे गुरु तथा अपने लिये भिक्षा से मनुष्यता गुरु सेवा से विनय और अत्यन्त सरलता के जीवन से परोपकार व्रत की शिक्षा दी जानी चाहिये। इस का परिणाम यह होता है कि जब वह ब्राह्मण बनता है तो वह अपनी इच्छा पूर्त्ति के लिये युद्ध जागृत करने और रक्तपात कराने का अपराधी नहीं बनता और नाहीं अपनी तृष्णा के प्रबल होने पर राष्ट्रों को अराजकता में डालने के दोष का भागी होता है किन्तु उस से आशा की जाती है कि वह *सम्मान से ऐसे दूर भागे जैसे कि विष से और अपमान को सदा अमृत की न्याईं आकांक्षा करे। अपमानित ब्राह्मण सुख से सोता है सुख से उठता है और सुख से लोक में विचरता है हां अपमान करने वाला अवश्य नष्ट हो जाता है।

प्राचीन आर्यों ने इस से आगे इतना और जाना था कि विद्या एक शक्ति है और उस से अच्छे बुरे दोनों उपयोग समानतया लिए जा सकते हैं और जब तक विद्यार्थी ने प्रबल आत्म संयमन की विधि से एक ऐसी आवश्यक आचार शक्ति नहीं प्राप्त करली जो उसे अधार्मिक वृत्तियों की ओर ले जाने वाले सब प्रलोभनों में न फंसने के लिए समर्थ बनादे और इस बात का अपने गुरु को भी विश्वास न करा दिया तब तक वह विद्या दान के योग्य नहीं होता। हमने मनुस्मृति में पढ़ा है:—

† विद्या देवी ब्राह्मण के पास आ कर बोली कि मैं तेरा कोष हूं मेरी रक्षा कर मुझे कभी असूयक (ईर्ष्या) पुरुष के प्रति मत दे।

* संमानाद्ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव।
अपमानस्य चाकांक्षेदमृतस्येव सर्वदा
सुखं शेते ह्यवमतः सुखं च प्रतिबुध्यते।
सुखं चरति लोकेऽस्मिन्नवमंता विनश्यति॥

† विद्या ब्राह्मण मेत्याह शेवधिस्तेऽस्मि रक्षमाम्।
असूयकाय मां मादास्तथास्यां वीर्यवत्तमा॥ मनु० २, ११४॥

जब इसी विषय में हम और पढ़ते हैं तो प्रश्नोपनिषद् में महर्षि पिप्पलाद् का भारद्वाज सत्यकाम गार्ग्य आश्वलायन और कबन्धी ऋषि के प्रति उत्तर पढ़ते हैं जो ब्रह्मज्ञान में दृढ़ होते हुवे भी उस सेभी अधिक उच्च योग ज्ञान प्राप्त करने के लिए उन के पास आये थे और हम उसे अत्यन्त परिष्कृत शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्तों पर स्थित पाते हैं ।

भूय एव तपसा । ब्रह्मचर्येण श्रद्धया संवत्सरं संवत्स्यथ यथाकामं प्रश्नान्पृच्छथ यदि विज्ञास्यामः सर्वं ह वो वक्ष्याम इति ।

"एक वर्ष तप और श्रद्धा के साथ रहो और फिर इच्छानुसार प्रश्न पूछो यदि हमें उस का कुछ ज्ञान होगा तो सब बता देंगे ।

निस्सन्देह कोई मी मनुष्य ऐसी शक्तियों के दान में जिन का दुरुपयोग अपार हानि कर सकता है और ऐसी शक्तियों में गति उत्पन्न कर सकता है जो आगामी सन्ततियों के आचार और आत्मा के घात का कारण बन सकती हैं इस से अधिक सावधान नहीं हो सकता संस्कृत श्लोक में रसायन पर निम्नलिखित आज्ञाएं आधुनिक भारतीय विद्यार्थियों के किसी भी समूह में निस्सन्देह हास्य का विषय होंगी ।

निर्लोभाः सव्यवक्तारो देवब्राह्मणपूजकाः ।
यमिनः पथ्यभोक्तारो भोजनीया रसायणे ।

"निर्लोभ सत्यवक्ता देव और ब्राह्मणों की पूजा करने वाले जितेन्द्रिय पथ्य भोक्ता मनुष्य ही रसायण के योग्य हैं" ।

परन्तु वह जो यह जानते हैं कि संसार में अपरिपक्व बाल बुद्धि मार्ग भ्रष्ट अभी कौलेज से निकले हुए, अराजकों के हाथ में गिरते हुए तथा समाज को बम् के प्रयोग से फिर आदर्श के अनुसार संगठित करने की चेष्टा करने वाले युवकों ने कितनी बड़ी भारी हानि की है उक्त

पद्य में एक बहुत उत्तम उपदेश का परिचय पायेंगे। बुद्धिमत्ता की भूमि मनुष्य समाज की धर्म गुरु भारत भूमि की उन्नति इस सिद्धान्त का ध्यान न रखने से कि विज्ञान की शिक्षा केवल उन्हीं को दी जानी चाहिये जिन का आचार तथा आत्मा दोनों से इस के प्राप्त करने की योग्य हो, शताब्दियों के पीछे जा पड़ी है ।

प्राचीन आर्य्यों ने यह भी जाना था कि इस लिये कि गुरु शिष्य के मन में ठीक२ अनुभव और अभीष्ट प्रेम और घृणा उत्पन्न करसके, उच्च इच्छाओं को जागृत तथा नीच भावों को विध्वस्त कर सके, स्वार्थ के भावों से निकल कर अधिक उत्तम भावों की ओर जाने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित कर सके, और पहले से विलीन सद्भावों को पुनरुद्भूत कर सके, यह आवश्यक है कि वह एक ऐसी अवस्था में रहे जिस से कि वह उन की शक्तियों के विकास को, उत्तेजनाओं की उत्पत्ति और परिपुष्टि को प्रत्यक्ष जीवन में पैतृक संस्कारों के और नैसर्गिक पक्षपातों के रूपों को, दृष्टि में रख सके और मार्ग पर ला सके और हानिकारक साधनों के नाश से अपने लोकोपकारी कार्य्य में आने वाले प्रतिबन्धों को रोक सके। और यह तभी हो सकता है कि जब गुरु शिष्यों के लिये पितृस्थानीय हो। और इसी लिये हमारे पूर्वजों ने गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली प्रचलित की थी । शिष्य गुरु के साथ दिन रात सदा उस की दृष्टि तथा उस की आधीनता में रहता था। जो एक ऐसी शिक्षाप्रणाली है जो मैचीवली और बिस्मार्कों के मस्तिष्क की उपज नहीं किन्तु पुण्यात्मा वशिष्ठ और विश्वामित्र जैसे नीतिज्ञों ने प्रचलित की है जो अपने तपोबल से राजाओं और सामन्तों को सम्मति देते थे और प्रजा पालन में बाधित करतें थे । राम और लक्ष्मण वशिष्ठ और विश्वामित्र के इशारे मात्र से अपने पिता की अनुमति के अभाव की विद्यमानता

१२ डा. सत्यपाल बी० ए० एम० बी० चिकित्सक, अमृतसर
१३ म० नन्दलाल, स० मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी
१४ म० नारायणदास, बी० ए० एल० एल० बी० प्लीडर जालन्धर नगर
१५ ला० रलाराम, रीटायर्ड पर्मानन्ट वे इन्सपेक्टर गुजरांवाला
१६ ला० काशीराम वैद्य, लाहौर
१७ ला० कर्मचन्द बी० ए० प्लीडर, जालन्धर नगर
१८ ला० बद्रीदास एम० ए० प्लीडर जालन्धर नगर,
१९ ला० गंगाराम बी० ए० प्लीडर, स्यालकोट
२० म० उमरावसिंह, प्रधान आर्यसमाज, लुधियाना
२१ म० वज़ीरचन्द्र बी० ए० प्लीडर रावलपिंडी

शासनाधिकार का मुख्य कार्यालय लाहौर

(भाटी दर्वाज़ा लाहौर)

शिक्षा अधिकार

१ म० मुंशीराम प्रधान
२ पं० काशीनाथ शास्त्री संस्कृत साहित्य तथा दर्शन अध्यापक
३ पं० शिवशंकर काव्यतीर्थ, वैदिक साहित्य अध्यापक
४ म० बालकृष्ण एम०ए० इतिहास तथा अर्थशास्त्र अध्यापक
५ म० रामदेव बी०ए० आङ्गलभाषा साहित्य अध्यापक
६ पं० तुलसीराम एम०ए० M. R. A.S, पाश्चात्य दर्शनाध्यापक
७ म० गणेश विनायक साठे एम० ए० रसायनविद्या अध्यापक
८ म० महेशचरण सिंह बी० ए० एम० एस० सी० (ओरीगन यु० एस० अमूीका) सहकारी आंगल साहित्य तथा कृषि विद्या अध्यापक

९ म० लक्ष्मणदास बी० ए० मुख्याध्यापक (विद्यालय विभाग)
डा० सुखदेव, चिकित्सक,

प्रबन्धाधिकार

१ म. मुंशीराम, मुख्याधिष्ठाता
२ म० रामदेव, उपाध्यक्ष
३ म० नन्दलाल, स० मुख्याधिष्ठाता
४ म० बीरबल कार्यालयाध्यक्ष
५ म० मुरारीलाल, सहकारी कार्यालयाध्यक्ष

स्थान हरिद्वार से ५ मील और कनखल से ३ मील की दूरी पर गंगा के दक्षिण तट पर गिरिराज हिमालय के चरणों में एक स्वस्थ मैदान में कांगड़ी ग्राम के समीप गुरुकुल विद्यालय के भवन स्थित हैं। यह ग्राम जिसका मूल्य लगभग २००००) मुद्रा है एक परोपकारी महात्मा श्रीमान् मुंशी अमनसिंह जी का दान है जिन्हों- ने अपनी सर्वसम्पत्ति आर्यप्रतिनिधिसभा पञ्जाब को अर्पण करके उक्त सभा को सदैव के लिये एक महती कृतज्ञता का ऋणी बना लिया है। निश्चय यह निष्काम आत्मसमर्पण भावी सन्तति की सुशिक्षा के अनुरागियों के लिये श्रीमान् मुंशीजी का नाम प्रिय बनाता रहेगा। इस स्थान का जल वायु बलदायक, मन विकाशक और एवं हर्षोत्पादक है। प्राकृतिक दृश्य बड़ा रमणीय और मनुष्यों के हृदयों को अपनी ओर आकर्षित करने वाला है।

समीपवर्ती वन और पर्वतों के शान्तिमय अनेक एकान्त स्थान तथा गङ्गा के पवित्र प्रवाह का अत्यन्त सान्निकर्ष जो सब के शरीर को संस्पर्श करने वाले वायु को ग्रीष्म काल में भी शीतलता प्रदान करता है, ब्रह्मचारियों के भावों पर गम्भीर संस्कार डाले विना नहीं रह सक्ते। और उनको परमात्मा और उसकी सृष्टि के लिये गहरे सत्कार का भाव धारण करने योग्य, गम्भीर विचार तथा समाधिस्थ होने के अभ्यासी, तथा न केवल तत्वान्वेषण अर्थात् प्राकृतिक विज्ञान के आन्दोलन के ही योग्य प्रत्युत जीवन और मृत्यु के गहन प्रश्नों पर (जिनका विवेचन विद्वज्जन एकान्त में ही किया करते हैं) विचार करने के योग्य भी बनाये विना नहीं रह सक्ते।

गुरुकुलवाटिका

गुरुकुल विद्यालय आश्रम के मुख्य संमुख-द्वार में खड़े हो कर गुरुकुल बाटिका का अति सुन्दर और मनोहर दृश्य दृष्टि गोचर होता है। इस बाटिका में शाक मूलादि उत्पन्न होते हैं। और कुछ फल देने वाले वृक्ष भी लगाये गये हैं। अब यह वाटिका प्रो० एम० सी० सिंहा के आधीन है—और वह कृषि की वैज्ञानिक विधियें प्रचलित करने का यत्न कर रहे हैं। वर्त्तमान वर्ष के आरम्भ से कृषि सम्बन्धिब्रह्मचारियों की एक श्रेणी खुली हुई है। जो प्रतिदिन सायंकाल एक घंटा प्रो० सिंहाजी के निरीक्षण में बाटिका में कार्य करती है। कृषि संबन्धी सर्वकार्य अर्थात् भूमि का तय्यार करना, बीज बोना, पानी देना, नलाई आदि सब कार्य ब्रह्मचारी गण ही करते हैं। गुरुकुल के अधिकारियों का विचार है कि बाटिका को धीरे २ उन्नत करके ब्रह्मचारियों को बनस्पति विद्या की व्यवहारिक शिक्षा देने के उपयोगी बना दिया जाय—बाटिका में २ कूप हैं। एक पर रहट चलता है। जिस से गुरुकुल के सर्व स्थानों में नलों द्वारा

जल पहुंचता है। वाटिका के भीतर ही एक विशाल स्नानागारम् है। जिसमें ९० ब्रह्मचारीगण एक वार स्नान कर सक्ते हैं।

अचिर-स्थाईभवन

गुरुकुल विद्यालय विभाग के लिये अभी तक चिरस्थाई भवन नहीं बनाया गया है। ब्रह्मचारी गण अचिरस्थाई मकानों में निवास करते और पठन का काम करते हैं यह अचिरस्थाई भवन अनुमान ३९०००) की लागत के है। एक पर्याप्त चौड़ा आश्रम है जिस के आङ्गन के मध्य में एक अष्टभुजी यज्ञशाला है जहां ब्रह्मचारी नियम पूर्वक दोनों समय हवन करते हैं। विद्यालय भवन, औषधालय और पाकशाला और उसके साथ ही दो लम्बे चौड़े भोजनशाला के कमरे हैं। एक वस्तुभंडार का कमरा है। इन भवनों से कुछ दूरी पर गङ्गातटस्थ एक छोटा परन्तु सुन्दर भवन है जो आनन्दाश्रम के नाम से प्रसिद्ध है और जहां परिवार रहित अध्यापक गण रहते हैं इन अचिरस्थाई भवनों के अतिरिक्त कुछ दूरी पर एक बहुत उत्तम पक्की धर्मशाला कूप सहित स्थित है यह धर्मशाला और कूप ला० परमेश्वरीदास सुपर्वाइज़र देहली निवासी ने ४०००) मुद्रा की लागत में बनवाई है। जो दर्शक सज्जन सपरिवार गुरुकुल अवलोकनार्थ पधारते हैं उन्हें यहीं विश्राम दिया जाता है। अन्य कई भवन और हैं। महाविद्यालय तथा विद्यालय के अध्यापकों के निवास गृह हैं। एक उत्तम भवन गङ्गा के तट पर मुख्याधिष्ठाता के लिये है। गुरुकुल के यात्रियों के उतारार्थ एक मकान ला० जीवाराम थापर रावलपिंडी निवासी और अन्य महाशयों के दान से अनुमान ३९००) की लागत से तय्यार हुआ है। गोशाला भवन भी काफ़ी मज़बूत और चौड़ा गत वर्ष तय्यार किया गया है जिसमें अनुमान २०० गाय भैंसे भली प्रकार वर्षा शीतादि से सुरक्षित रह सक्ती हैं।

यह भवन सर्वथा पक्का है । और ४००००) से अधिक की लागत से पूर्ण हुआ है । इस में २२ कमरे हैं-जिन में दो बड़े विस्तृत हाल हैं-एक पुस्तकालय है और दूसरा रस-क्रिया-भवन । महाविद्यालय भवन के ऊपरी भाग में कुछ परिवर्त्तन कर के इस वर्ष की एकादश श्रेणी के विद्यार्थियों को वहां ठहराया गया है ।

महाविद्यालय भवन

गुरुकुल के संचालकों का विचार है कि ६०० छात्रों के लिये चिरस्थाई भवन तय्यार किये जाने चाहियें। ऐसे भवनों के तय्यार करने के लिये अनुमानिक व्यय ९ लक्ष मुद्रा होगा । इस राशी में एक वेधशाला तथा क्रीड़ा भवन का ख़र्च भी सम्मिलित है । गुरुकुल के नेतागण इस बात के महान गौरव को भली भांति अनुभव करते हैं कि चिरस्थाई भवनों की बनावट प्रकांड हो जिस में विद्यार्थियों के हृदय विद्यालय के पवित्र भवनों से नित्य' प्रतिदिन प्राभावितहों और अपनी शिक्षा समाप्ति पर विदा होने के पश्चात् अपने विद्यालय [alma mater] का आनन्द दायक विचारों के साथ स्मरण किया करें । इस के अतिरिक्त ऐसे प्रकांड भवनों में शिक्षा ग्रहण करने के साथ साथ सरल जीवन व्यतीत करते हुवे ब्रह्मचारियों को "सरल जीवन तथा उच्च विचार" की प्रयोजक शिक्षा भी मिलेगी ।-कोई भी विद्यालय स्थिर नहीं कहा जा सक्ता है जब तक उस का निज स्थिर भवन न हो । युक्तप्रान्तके लाट महोदयने उक्त प्रान्त के भावी चिकित्सा शिक्षालय के विषय में उस समय तक गम्भीर विचार नहीं किया था जब तक कि उसके मकान तथा आवश्यक यन्त्रों के प्रबन्ध के लिये धन निधि का निश्चय न हो गया । उक्त महोदय का यह विचार सर्वथा उचित था—

चिरस्थाई भवन

हम भी आशा करते हैं कि आर्ष संस्कृत भाषा के पुनर्जीवित करने, प्राचीन ब्रह्मचर्य्य में पुनः जीवन डालने, वैदिक धर्म्म का सार्वभौम प्रचार करने, अपनी संतान में अपूर्व अनुसन्धान का चाव उत्पन्न कराने तथा शुद्ध शिक्षा [जो कि यथार्थतः सब मानसिक शक्तियों के समान-आविर्भाव का नाम है] फैलाने के अभिलाषी सज्जन गुरुकुल मंदिर निधि की पूरी सहायता करेंगे ।

श्रेणियों की संख्या

गुरुकुल विद्यालय ४ श्रेणियों से आरम्भ किया गया था—जिन में ५३ छात्र थे । ९ वें वर्ष के अन्त पर १० श्रेणियें थीं जिन में १८७ विद्यार्थी थे १म चैत्र, १९६६ को श्रेणियों की संख्या १२ होगई और इन में २४९ ब्रह्मचारी थे । प्रथम चैत्र, सं० १९६७, को १३ श्रेणियें, और २७४ ब्रह्मचारी थे । यदि सारे प्रार्थी महाशयों के बालक प्रवेश हो सक्ते—तो इस समय गुरुकुल में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या १०१० होती—परन्तु धन के अभाव से सारे बालक प्रविष्ट न हो सके । केवल $\frac{१}{३}$ से कम ही बालक लिये जा सके । सामान्यतः, प्रति वर्ष एक श्रेणी बढ़ाई जाती है । इस समय कुल १३ श्रेणियें हैं । ३ श्रेणियें महाविद्यालय में और १० विद्यालय में हैं। महाविद्यालय विभाग में १४ ब्रह्मचारी हैं । ३, ब्रह्मचारी ४र्थ वर्ष श्रेणी में, ९, २य वर्ष श्रेणी में और ६ प्रथम वर्ष श्रेणी में । ३य वर्ष श्रेणी इस वर्ष नहीं है । विद्यालय विभाग में २६० ब्रह्मचारी हैं जो निम्नप्रकार १० श्रेणियों में विभक्त हैं:—

श्रेणी	संख्या
१०म श्रेणी	१९
९म ,,	१८
८म ,,	१८

श्रेणी		संख्या
७म ,,	[क] भाग	१७
	[ख] ,,	१७
६ष्ठ ,,		२७
५म ,,	[क] भाग	१७
	[ख] ,,	१६
४र्थ ,,	[क] भाग	२१
	[ख] ,,	२०
३य श्रेणी		२८
२य ,,	[क] भाग	१४
	[ख] ,,	१७
१म ,,		२१
		२६०

महाविद्यालय तथा विद्यालय सत्रकाल

महाविद्यालय में ग्रीष्म ऋतु सत्र चैत्र की प्रतिपदा से आरम्भ होता है। महाविद्यालय में वार्षिक अवकाश भाद्रपद, आश्विन और फाल्गुन, मासों में होता है। शरद ऋतु कालिक सत्र १म कार्तिक से आरम्भ होता है। विद्यालय विभाग केवल २ मासों अर्थात् भाद्रपद और आश्विन के लिये बन्ध किया जाता है।

प्रवेशन—

जिन ब्रह्मचारियों को आचार्य नियम ४, (देखो क्रोड़पत्र सं० २) के अनुसार और आर्य्य प्रतिनिधिसभा पञ्जाब की अनुमत्यानुसार चुन लेता है। वे ब्रह्मचारी ग्रीष्म कालिक सत्र के आरम्भ में

गुरुकुल में प्रविष्ट किये जाते हैं। ऐसे ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार गुरुकुल के आचार्य्य सर्व अध्यापकों, कार्य्यदर्शकों तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की उपस्थिति में गुरुकुल भूमी में करते हैं। यह संस्कार शास्त्रोक्त नियमानुसार किया जाता है। कोई विद्यार्थी महाविद्यालय में प्रविष्ट नहीं हो सक्ता जब तक वह अधिकारी—परीक्षा उत्तीर्ण न हो जाय, जो परीक्षा प्रति वर्ष महाविद्यालय सभा के आधीन फाल्गुन मास में हुआ करती है। अधिकारी—परीक्षा के नियम इस गुरुकुल वृत्तान्त के क्रोड़पत्र सं० ४ में दिये गये हैं।

अनध्याय—

प्रत्येक मास में ४ अनध्यायें होती हैं। २ अष्टमीयें—१ पूर्णिमा और एक अमावस्या, कई एक अन्य अवसरों पर भी गुरुकुल में नियम पूर्वक अध्ययन बन्ध किया जाता है [देखिये क्रोड़पत्र सं० ९]

अनध्यायों में नियम पूर्वक पठन पाठन नहीं होता। बड़े विद्यार्थियों का किन्हीं ऐतिहासिक वा प्राचीन स्थानों के अवलोकनार्थ बाहर ले जाया जाता है। अथवा वे अपना समय सम्वाद, वेद पाठ, उद्यान सेवन आलेख्यादि में व्यतीत करते हैं।

शिक्षाविधि—

शिक्षाविधि की अवधि १६ वर्ष पर्यन्त है। पाठविधि में आङ्गोपाङ्ग सहित वेद, लौकिक संस्कृत साहित्य, आर्य्यभाषा साहित्य, इंगलिश भाषा तथा साहित्य, नवीन पदार्थ विज्ञान, दर्शन शास्त्र, गणित, व्यापार के नियम, कृपिविद्या, वैद्यक तथा शिराण विद्या सम्मिलित हैं। इस समय आर्ष दर्शन शास्त्र। अष्टाध्यायी महाभाष्य, आंङ्गलभाषा, आरम्भिक गणित, पदार्थ विज्ञान, वस्तु ज्ञान इतिहास भूगोल, अर्थ शास्त्र, आलेख्य तथा कृषि—विद्या की शिक्षा दी जाती

है। पाठविधि का समय२ पर शिक्षण विद्या में प्रवीण पुरुषों की समिति से संशोधन कराने का विचार है। जिस से कि इस विद्यालय के नेता मानसिक तथा शिक्षण–विद्या के नवीन से नवीन आन्दोलनों से भी लाभ उठा सकें। आङ्गलभाषा की पढ़ाई ६ष्ठ श्रेणी से आरम्भ होती है और वेदाध्ययन महाविद्यालय की ३य वर्ष की श्रेणी से आरम्भ किया जाता है। सविस्तर पाठविधि के लिये कोष्ठपत्र सं ३ और सं० ९ का अवलोकन कीजिये।

कृषि विद्या शिक्षण— कृषि सीखने वाले ब्रह्मचारियों की नियमानुकूल श्रेणी अगस्त, १९१० को खोली गई थी-यह श्रेणी सायंकाल के समय केवल १ घंटा ५ बजे से ६ बजे तक खेलों के समय लगती थी। ब्रह्मचारियों को गङ्गा के विस्तार जैसी पत्थरीली तथा रेत से पूरित वाटिका की भूमि को वृक्ष लगाने के योग्य बनाने के विषय पर क्रियात्मक पाठ दिये जाते थे।

और यतः यह समय ब्रह्मचारियों के खेलों से काट कर ही कृषि को दिया गया था अतः ब्रह्मचारियों को अधिकतर फावले आदि का कार्य दिया जाता था–जिससे अन्य विद्यार्थियों के समान उनका भी व्यायाम होता रहता था। ब्रह्मचारियों में बड़ा उत्साह उत्पन्न होगया और यह बात बड़ी संतोष जनक थी कि ब्रह्मचारीयों के भिन्न २ समूहों में शुभ भावों से प्रेरित होकर अपने २ नियत कार्यों को सब से उत्तम रीति से और थोड़े समय में समाप्त करने के लिये मुकाबला होता था–जिस समय इस जोश के साथ ब्रह्मचारी गण कार्य में निमग्न थे तो वृष्टि आरम्भ होगई और साथ ही वार्षिक अवकाश भी शुरू होगया अतः इस समय के लिये कार्य बन्द करना पड़ा।

नवम्बर मास के आरम्भ में पुनः कृषि का कार्य आरम्भ हुआ। इस बार ब्रह्मचारियों के भिन्न २ समूहों को पृथक २ भूमि के टुकड़े दिये गये। ब्रह्मचारी तीन भागों में विभक्त किये गये। और उनको अलग २ भूमि के टुकड़े मिले। जिनके लिये वे समूह रूपेण सर्वथा उत्तरदाता ठहराये गये। कृषिसंबन्धी सर्व कार्य बिना कुली आदि की सहायता के ब्रह्मचारी गण स्वयं ही करते थे। कार्यारम्भ के समय तो सन्देह ही था कि ब्रह्मचारी इस कार्य को रुचि पूर्वक परिश्रम के साथ यंत्रणा के नियमों का पालन करते हुवे निबाहेंगे वा नहीं और पौदों के लगाने तथा शाकादि के उत्पन्न करने में जिस स्थिर ध्यान की आवश्यकता है वह ध्यान ब्रह्मचारी दे सकेंगे वा नहीं।

यह बात ब्रह्मचारियों को पूर्व ही स्पष्ट करदी गई थी-कि कृषिसम्बन्धी श्रेणी आवश्यक श्रेणी नहीं है। इस में सम्मिलित होना प्रत्येक विद्यार्थी की अपनी इच्छा पर निर्भर है। चाहे सम्मिलित हो अथवा न हो। परन्तु यह भी साथ ही स्मरण रखना चाहिये कि कृषि का कार्य हाथों द्वारा होने वाला एक कठिन कार्य है। यह कार्य विद्यालय में बैठ कर लेखनी चलाने तथा क्रीड़ा भूमि में इधर उधर दौड़ कर पादकंदुक को ठोकर लगाने की अपेक्षा अधिक शारीरिकपरिश्रम साध्य कार्य है। परन्तु हमें बड़ी प्रसन्नता हुई जब कि २४ घंटों के भीतर २ ही हमारे पास ३० ब्रह्मचारियों के प्रार्थना पत्र कृषि श्रेणी में सम्मिलितार्थ आये। पीछे भी कइयों के प्रार्थना पत्र आये परन्तु आगे ही संख्या पर्याप्त होने के कारण उन के प्रार्थना पत्र स्वीकार न हो सके। उस समय से लेकर बराबर प्रतिदिन कृषि श्रेणी ४–४५ से ५–४५ तक वाटिका में कार्य करती है और कार्य उसी प्रकार उत्साह के साथ होता जाता है। कृषि का सर्व कार्य क्यारियें बनाना, बहा बनाना, बीज बोना, जल देना, नलाई करना, और

पौदों की रक्षा करना आदि ब्रह्मचारी स्वयं ही करते हैं। एक बार एक ऐसी घटना हुई। कि वाटिका के माली को जो मटरों के बीज बोनेको दिये थे वे सब उगते के साथ ही सूख गये। माली को बड़ी निराशता हुई। इस घटना को देख कर ब्रह्मचारियों में विज्ञान के नियमों के अनुकूल कृषि करने की चेष्टा उत्पन्न हुई—

बीज का वही नमूना ब्रह्मचारियों को दिया गया। ब्रह्मचारियों ने बीज बोया, वे उसके उगने के लिये बड़े उत्सुक थे। दिन में तीन बार बीज को देखते थे। और भूमि के नीचे अंगुलियें डाल कर उन कारणों के जानने का यत्न करते थे जो बीजों के उगने के रास्ते में बाधक होते थे। बीज उगतो गये। परन्तु निर्बल और रोगी थे होनहार प्रतीत न होते थे। बीजों के उगकर शीघ्र ही सूख जाने का कारण खोज करने पर ब्रह्मचारियों ने पता लगाया कि भूमि में नीचे एक प्रकार का कृमि होता है जो बीज को जिस समय वह भूमि के गर्भ में ही होता है और बाहर आने की तय्यारी करता है खाना शुरू कर देता है। इसी कृमि द्वारा माली के बोये बीज भी नष्ट हो गये।

ब्रह्मचारियों ने इस छोटे कीड़े की गतियों का विशेष अवलोकन आरम्भ किया-तो पता लगा, कि यह दुष्ट जन्तु रात्रि के समय भूगर्भस्थ बीजों तथा नवजात पौदों पर आक्रमण करता है और सूर्योदय के साथ खेत से बाहर निकल जाता है अतः ब्रह्मचारी गण सूर्योदय के पूर्व अपने खेतों का निरीक्षण करने लगे। ब्रह्मचारी प्रतिदिन दो सौ ऐसे कृमियों को मारते थे। परन्तु खेत इन से खाली होने में नहीं आता था। यह कीड़े एक खेत पर आठ २ बार आक्रमण करते थे। अन्त में ब्रह्मचारियों ने कृमिनाशक रसायन-समास तय्यार किया और इस प्रकार इन कृमियों से अपनी खेती को सुरक्षित बनाया। ब्रह्मचारियों ने

कृषि में विज्ञान के नियमों का प्रयोग कर के फलों के वृक्षों को इतनी उन्नति दी, फल आगे की अपेक्षा बड़े होने लगे, और बहुत संख्या में भी होने लगे। ब्रह्मचारियों को नलाई के लाभ दर्शाये गये। उन को व्यवहारिक रीति पर दिखाया गया, कि जिन खेतों में खुर्पी फिर गई है उन में पौदे खूब हरे भरे और फले फूले हुये थे। और जिन खेतों की नलाई कर के जंगली घास को उन में से नहीं निकाला गया था उनके पौदे छोटे २ और रोगी से थे। ब्रह्मचारियों को सिखाया गया कि कृषि में स्वच्छता की भी बड़ी आवश्यकता है। अतः उन्हें अपनी वाटिका की सफ़ाई की ओर भी सदैव दृष्टि रखनी चाहिये। पौदों के अतिरिक्त अन्य घास फूसादि क्यारियों में न रहना चाहिये।

एक बार ब्रह्मचारी गण एक वृक्ष को उस के स्थान से उखाड़ कर किसी अन्य स्थान में लगाना चाहते थे। समय समाप्त हो गया और वृक्ष उखड़ा हुआ वहीं छोड़ना पड़ा, वृक्ष के कोमल पत्तियों को सूर्य के ताप से बचाने के लिये घासादि उन पर बांध दिया, अगले दिन जब ब्रह्मचारी पुनः कार्य्यार्थ वाटिका में गये तो क्या देखते हैं कि सारा वृक्ष छोटे २ असंख्य कीड़ों से भरा हुआ है यही परीक्षा कई वार करा कर ब्रह्मचारियों को दिखाया कि जङ्गली घास और कूड़ादि पौदों के नाश करने वाले कृमियों से भरे रहते हैं अतः वाटिका की नलाई बड़ी आवश्यकीय है। उस समय से ब्रह्मचारी गण अपनी क्यारियों को अत्यन्त स्वच्छ रखते हैं और वाटिका में कार्य्य करने वाले माली तथा मजदूरों का भी ऐसा ही करने की ओर ध्यान आकर्षित करते रहते हैं। ब्रह्मचारियों की स्फूर्ति, दक्षता, और उत्साह ने वाटिका के दैनिक कार्य्य करने वाले मजदूरों पर भी बड़ा प्रभाव डाला है। यहां तक कि कांगड़ी ग्राम के उदासीन, जीवन रहित और उत्तर दातृत्व से अनभिज्ञ वाटिका में काम

करने वाले मज़दूरों ने अपने कार्य्य के बार २ ख़राब हो जाने पर ब्रह्म-चारियों से हास्यजनक वाक्य सुन कर लज्जा अनुभव करनी शुरू की है और अपने आस पास की अवस्था के सर्वथा बदलते जाने पर अपने कार्य्य क्रम में परिवर्त्तन करने पर बाधित हुवे हैं।

ब्रह्मचारियों की कृषि में व्यवहारिक शिक्षा के साथ २ उन की अव्यवहारिक (theoratical) शिक्षा भी होती रही है। प्रायः अन-ध्याय के दिन अव्यवहारिक व्याख्यान निम्न विषयों पर होते रहे हैं।

बनस्पति विद्या संबन्धी परिभाषाओं पर विवाद जैसे आकृति विज्ञान (Morphology) क्रिया विज्ञान, (Physiology) वाह्यकृति विज्ञान (Anatomy)अभ्यान्तरकृति विज्ञान(Histology)पौदे के अवयवों का बढ़ना,वर्गीकरण (classification) एक कोष्ठक (Unicellar) और बहु कोष्ठक (Multicellar), कोष्ठ (Cell), निभेदन (Differciation) क्रियाकृति विज्ञान (Physiologica Morphological), श्रम विभाग अवयवों की वैशेषकता (Specialzation), भूमियें, खात, भूमि में एन्द्रिक और अनैन्द्रिक पदार्थ, भारत वर्ष में भूमि के मुख्य २ प्रकार, रेतली हलकी और उत्तम प्रकार की मिट्टियों पर विवाद, उषर, शार-युक्त, नत्रजनाम्ल युक्त, जल युक्त, श्वेत, पीली लाल और काली भूमियें चूने के पत्थर कार्बनिताम्ल, मग्नाम्लजिद, लोहा, माङ्गल, पौटाश, सोडा, कार्बन औषजन, उद्रजन, नत्रजन और हरिण का भूमि के साथ संबन्ध।

इस समय हमारे कार्य में धन का अभाव बहुत बाधक है। धन के अभाव से हम अपने विद्यार्थियों को कृषि संबन्धी कई बड़े लाभ-दायक परीक्षण नहीं दिखा सक्के। और नाहीं हम उन्हें वर्तमान समय की

कृषि संबन्धी कलाकौशल के प्रयोग से परिचित करा सक्के हैं। यद्यपि हमारे पास इस समय पर्याप्त धन नहीं है। तथापि हम निराशताग्रस्त नहीं हैं। प्रो० एम० सी० सिंहा की निरन्तर कार्यशक्ति और हमारे ब्रह्मचारियों के हृदय में अपने कार्य के जानने और उसमें उन्नति करने की उत्कट इच्छाएं हमारे लिये हमारे उद्देश्यों की पूर्त्ति में बड़े उत्साहवर्धक चिन्ह हैं। और हम अपने कार्य्य सम्बन्धी निर्धनताजन्य त्रुटियों को अपने प्रयत्नों तथा परिश्रमों द्वारा पूरा करने का यत्न कर रहे हैं।

दिन चर्या— प्रातः ४ बजे बड़े और ४–३० बजे छोटे ब्रह्मचारी और उन के अधिष्ठाता आश्रम का घंटा बजने के साथ ही उठ बैठते हैं—और अपने अपने विस्तरों को ठीक करके और ईश्वर स्तुति के मंत्र बोल कर गङ्गापर स्नानादि क्रियाओं के लिये बाहिर चले जाते हैं। सब ही ब्रह्मचारी और करीब २ सब ही उनके अधिष्ठाता तैरना जानते हैं। और समय समय पर ब्रह्मचारियों में बड़े हर्ष और उत्साह के साथ तैराईके सान्मुख्य होते रहते हैं। अत्यन्त शीत के दिनों में ब्रह्मचारी स्नानागार में स्नान करते हैं। यह स्नानागार कुछ दानी सज्जनों और देवियों के दान से अनुमान २०००) से अधिक धन के व्यय से बना है। स्नान के पूर्व सर्व ब्रह्मचारी अपने अधिष्ठाताओं के निरीक्षण में व्यायाम और व्युहादि करते हैं। ५½ और ६ बजे के बीच सारे ब्रह्मचारी आर्य शास्त्रों में वर्णित नैत्यिक यज्ञ अर्थात् (१) संध्या, प्रार्थना और उपासना (२) अग्नि-होत्र, करते हैं। इसके पश्चात् ब्रह्मचारियों को दुग्ध पान करने को अथवा कोई हलका भोज्य पदार्थ दिया जाता है। ग्रीष्म ऋतु में ६–१५ प्रातः विद्यालय लगजाता है और १०–३० तक नियम पूर्वक

अध्ययन जारी रहता है। १०-३० पर ब्रह्मचारियों को भोजन दिया जाता है जिसमें रोटी दाल शाक और फलादि होते हैं। प्रायः अन-ध्याय के दिन खीर और हलवादि दिया जाता है। ब्रह्मचारियों का भोजन सर्वथा निरामिष होता है। भोजन के पश्चात् ब्रह्मचारी कुछ विश्राम करते हैं। विश्राम के समय उच्च श्रेणी के विद्यार्थी पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर पढ़ते हैं। पुनः २३/४ बजे दुग्ध पान की घंटी बजती है और सर्व ब्रह्मचारी दूध पीते हैं।

अपराह्न में फिर २-४५ पर विद्यालय की घंटी बजती है और पठन पाठन का कार्य्य आरम्भ हो जाता है। और ६ बजे तक जारी रहता है। जब गर्मी अधिक बढ़ जाती है तो पढ़ाई का समय १ या २ घंटे कम कर दियाजाता है। शरद ऋतु में प्रातः ९-३० बजे ब्रह्मचारी भोजन कर लेते हैं-और ९-४५ से ४-१५ तक विद्यालय में पढ़ाई होती है। बीच में १-३० पर आध घंटे का विश्राम (recess) होता है। जिस में ब्रह्मचारियों को दूध मिलता है। विद्या-लय में पठन पाठन समाप्त होने पर ब्रह्मचारी क्रीड़ा भूमि में खेलने चले जाते हैं। और पुनः सायंकाल भी प्रातःवत् नैत्यिक कर्म के लिये आश्रम में एकत्रित हो जाते हैं।

ग्रीष्म ऋतु में संध्या, हवनके पूर्व और खेलोंके पश्चात ब्रह्मचारी गङ्गा स्नान करते और तैरते हैं। फिर सायंकाल भोजन दिया जाता है। भोजन समाप्ति पर ब्रह्मचारी गण वाटिका तथा गङ्गातट पर वायुसे-वनार्थ चले जाते हैं और आध घंटे के पश्चात् सब अपने २ स्थानों पर पहुंच कर अपने दिन में पढ़े पाठ को दोहराते हैं ठीक ९ बजे सब सो जाते हैं। छोटे ब्रह्मचारी बड़े ब्रह्मचारियों से १/२ घंटा पूर्व सो जाते हैं। दोनों समय प्रातः और सायं भोजन आरम्भ करने के पूर्व निम्न वेद

मन्त्र का उच्चारण होता ह। और यही मन्त्र विद्यालय में पाठ आरम्भ करने से पहले बोला जाता है।

सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥

अर्थ-ओ३म्। सर्वशक्तिमान् परमात्मा हमारी (गुरु तथा शिष्य) रक्षा करें। उस की कृपा से ही हम परमानन्द को प्राप्त होवें। हम एक दूसरे शारीरक तथा मानसिक बल की वृद्धि करें। हमारा पठन पाठन सफल हो-हम परस्पर में प्रेम पूर्वक वर्त्तें।

धार्मिक शिक्षा—

लार्डकर्ज़न महोदय ने ढाका नगर के अपने चिरस्मरणीय व्याख्यान में आश्रम निवास (Hostel system) के लाभों पर बल दिया था। अपनी वक्तृता में उक्त महोदय ने कहा था "विद्यार्थियों के लिए इन आश्रमों के प्रबन्ध को मैं भारतवर्षीय शिक्षा के लिए अत्यन्तावश्यक समझता हूं इस आवश्यकता की पूर्ति अति शीघ्र होनी चाहिये, यह कोई विदेशीय घड़न्त वा नूतन संस्था नहीं है, इस का संचालक गुह्य नियम वही भारतीय प्राचीन लोकोक्ति (Tradition) है जो इस देश के प्रत्येक प्रान्त में प्रचारत है विद्यार्थियों को अपने अध्यापकों की संरक्षा में रहना चाहिये.................यदि आश्रम निवास के मुख्य नियमों का भली भांति सेवन किया जावे, जिन में से पहला यह है कि आश्रम वासियों पर आश्रम के अध्यापक अपनी दृष्टि रक्खें तो मैं विश्वास कर-ता हूं कि इस प्रबन्ध का विस्तार भारतवर्ष में अन्य संशोधनों की अपेक्षा ब्रह्मचर्य्य जीवन के लिये अधिक लाभदायक होगा तथा इस जाति के भविष्यत् पर अधिक गम्भीर प्रभाव डालेगा"। लार्ड कर्ज़न ने उस

सिद्धान्त को, जिसे प्राचीन आर्य्यावर्त्त के आचार्य्य सर्वथा मानते थे मनोरम भाषा से विभूषित कर दिया है। अध्यापक अपने शिष्यों के आचरणों का संस्करण एवं सुधार नहीं कर सकते यदि उन का सम्बन्ध शिष्यों के साथ केवल ६ घण्टों तक का ही रहे। इस अल्प समय में वह न तो शिष्यों की शक्तियों के विकास को और न पैत्रिक तथा अन्य संस्कारों के प्रबल प्रभावों का निरिक्षण कर सकते हैं और इस लिए उन के आचरण के विवरण की सहायता में अशक्त रहते हैं। सच तो यह है कि ऐसी अवस्था में आचार्य्य अपने शिष्यों को केवल पाठ दे सकते हैं किन्तु वह उन्हें पूर्ण शिक्षा नहीं दे सकते क्योंकि शिक्षा यह नहीं है कि "पाठशाला में बालक कुछ बातों को स्मरण कर के सुना दे वा लिखाई पढ़ाई तथा गणित के यन्त्रारूढ़ दृश्य दिखला दे" प्रत्युत शिक्षा उस यत्न को कहते हैं जिस से मानवीय शक्तियों का विकास होता है, जिस से मानसिक और धार्म्मिक शक्तियों की वृद्धि और उपलब्धि होती है। अध्यापक को इस कारण चाहिये कि वह शिष्य के मानसिक उन्नतिक्रम पर दृष्टि रक्खे, यदि यह अभीष्ट है कि शिक्षा स्वाभाविक व्यवस्था पर चले तो अध्यापक को प्रत्येक शिष्य के मानसिक तथा आत्मिक लक्षणों के निरीक्षण का अवसर मिलना चाहिये ताकि वह निर्णय कर सके कि शिष्य की शक्तियों के विकास को किस प्रकार चलाया तथा उसके आचार को किस प्रकार बनाया जावे। यह बातें हो नहीं सक्तीं जब तक कि अध्यापक शिष्य के लिये पितृवत् नहीं बनता और उन की सांसारिक प्रलोभनों से रक्षा करने और अपने किए हुए हितकारी काम को (उन शक्तियों द्वारा जिन पर उस का कुछ वश नहीं है और अवाञ्छित साधनों द्वारा) सर्वथा वा आंशिक नाश से बचाने का पूरा अधिकार नहीं रखता। अतः विस्पष्ट ज्ञात होता है

कि पूर्ण शिक्षा के लिये शिष्य को अपने अध्यापकों के आधीन रहना चाहिये। ऐसा ही गुरुकुल विद्यालय में होता है। यही विशेष लक्षण गुरुकुल का है। ब्रह्मचारी समस्त अनुचित प्रभावों से पृथक् रक्खे जाते हैं अतः स्वभावतः अपने अध्यापकों तथा अधिष्ठाताओं के सत्संग में उन्हें रहना पड़ता है जिन का अनुसरण सर्व आचार व्यवहार में उन्हें अपेक्षित होता है भारतवर्ष में कोई अन्य विद्यालय ऐसा नहीं है जिस में आश्रम क्रम के लाभ ब्रह्मचारियों के लिये ऐसे उत्तम हों जैसे कि इस विद्यालय में हैं। हमें यदि, मनोवाञ्छित पूरे अध्यापक मिलें तो आश्चर्य जनक परिणाम निकल सक्ते हैं, आत्मसम्मान, सरलता, सत्य शीलता, मित्रभाव, अहिंसा, प्रसन्नचित्तता, धृति, ईश्वरभक्ति, देशानुराग तथा इसी प्रकार के अन्यान्यगुण उपदेश तथा उदाहरण से उत्पन्न किए जा सक्ते हैं, विद्यार्थियों का पठन पाठन नियम पूर्वक तथा पुस्तकों का चुनाव बुद्धिमत्ता से हो सक्ता है। यह बात स्पष्टतः ज्ञात है कि आज कल के स्कूलों के विद्यार्थी जो किशोरावस्था से भी बाहर निकले हुए नहीं होते मंदभावयुक्त तथा दुराचार प्रेरक उपन्यासों तथा रद्दी मसालेदार समाचार पत्रों को पढ़ते हैं और मन घड़ंत सम्मातियों तथा थोथी वक्तृताओं को गम्भीर राजनैतिक सिद्धान्त तथा आर्थिक सचाइयां समझ लेते हैं। ऐसी बातें गुरुकुल में होनी सर्वथा असम्भव हैं जब तक कि वर्तमान प्रबन्ध बिल्कुल ढीला न हो जावे। यहां विद्यार्थी प्रचरित विषयों पर गन्दे समाचार पत्रों की दी हुई सम्मातियों के अनुसार अपने विचार निश्चित नहीं करते। उन्हें समाचारपत्रों के प्रस्तावों के वही भाग पढ़ने की आज्ञा होती है जो कि (उन की सम्मति में जिन्हें ऐसे विषयों पर सोचने की योग्यता है) ब्रह्मचारियों के मानसिक विकास के योग्य हों और ऐसे साधनों से अविरुद्ध हों जिन से उन की

मानसिक बनावट तथा बुद्धिके सुसंस्कार में सहायता मिलती है। अध्यापक और अधिष्ठाता न केवल अपने आश्रमस्थ ब्रह्मचारियों के दृढ़ और योग्य मानसिक तथा धार्मिक शिक्षण के लिये ही अनुयोज्य हैं परञ्च उन के शारीरिक स्वास्थ्य के भी उत्तरदाता हैं। वे ध्यान रखते हैं कि ब्रह्मचारीगण स्वस्थ दशा में बने रहें। इस उत्तम विधि का फल यह है कि गुरुकुल के ब्रह्मचारी का स्वास्थ्य साधारण स्कूलों के विद्यार्थियों से कहीं बढ़ कर है, स्कूलों के विद्यार्थियों से वह अधिक प्रसन्न रहता है क्योंकि उनकी अपेक्षा चिन्ताओं से वह अधिक स्वतन्त्र होता है। उस का साधारण ज्ञान भी अधिक होता है जिस पर भी आधिक्य यह कि वह ज्ञान गम्भीर और उत्तम होता है।

परीक्षा—त्रैमासिक तथा वार्षिक परीक्षाएं विद्यालय के अध्यापक ही लेते हैं। इस देश में प्रचरित परीक्षा विधि पर जो साक्षी का ढेर युनिवर्सिटी कमीशन ने इकट्ठा किया था उस से सिद्धान्त यह निकला कि परीक्षा के पर्चे (प्रश्नपत्र) विशेषतः विद्यार्थियों की कण्ठस्थ करने की शक्ति की जांच के लिये बनाए जाते हैं न कि उन की मानसिक तथा धार्मिक उन्नति की अवस्था की ठीक पड़ताल के लिये जो विद्यार्थी सुगमता से नियत पाठावली में से सीखी हुई बातें बता दे वह परीक्षा में प्रशंसा सहित उत्तीर्ण हो जाता है। कल्पना, विवेक और तर्क की शक्तियों की उन्नति के स्थान में स्मरण शक्ति पर ही अधिक बोझ डाला जाता है। परीक्षक के पास इस बात के जानने के लिये कोई भी साधन नहीं है कि जिन विषयों को विद्यार्थी ने ऐसी सुगमता (प्राणनाशक सुगमता) से अद्यप्रकाशित किया है वे ठीक २ मनन तथा परिपक्व भी किये गये हैं या नहीं। ऐसी दशा में परिणाम शोक जनक ही होता है। अध्यापक अन्यान्य सभी उद्देश्यों को, परीक्षा

में उत्तीर्ण कराने के उद्देश्य पर न्योछावर कर देता है एवं विद्यार्थियों के लिये परीक्षा ही परम पुरुषार्थ बन जाती है। अतः ऐसे विद्यार्थी जब गृहस्थ जीवन धारण करते हैं तब उन्हें ज्ञात होता है (यद्यपि यह ज्ञान उचित समय बीत जाने पर होता है) कि यद्यपि वह विविध वस्तुओं के ज्ञान से सज्ज हैं जिन की वह किसी समय भी झड़ी लगा सकते हैं तथापि उन के मानसिक तथा धार्मिक संस्कार कुछ भी नहीं हैं। उन के विचार बेहङ्गम दौड़ते, उन का ज्ञान अव्यभिचारी तथा व्यवसायात्मक नहीं होता तथा वे शुद्ध भाषा लिखने तथा अपने भावों को यथार्थतः वर्णन करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। यदि गम्भीर व्युत्पत्ति तथा सार्वविषयक ज्ञान सहित वह उन्नत हुए दीखें तो अनुसन्धान से पता लगेगा कि वह व्युत्पत्ति तथा ज्ञान स्कूल से भिन्न किसी अन्य स्थान में प्राप्त हुए हैं। वर्तमान शिक्षायन्त्र की गति में जो यह बड़ी न्यूनता है वह तभी दूर होगी जब कि अध्यापक जो अपने शिष्यों की मानसिक उन्नति की अवस्थाओं को जानते हैं अपने विद्यार्थियों के परीक्षक भी नियत किए जावेंगे। यही कारण है कि गुरुकुल में अध्यापक ही परीक्षक होते हैं और वे लोग परीक्षक नहीं होते जिन के परीक्षक नियत होने का अधिकार केवल यही समझा जाता है कि वे कठिन प्रश्न दे सकते और परीक्षा देने वालों में से बहुतों का स्वाहा कर सकते हैं। पाठकों को यह जतलाने के लिये कि अध्यापकों के ही परीक्षक नियत होने की विधि से कैसा अच्छा फल निकलता है, नीचे उदाहरण स्वरूप केवल उपनिषद् वेदान्त के प्रश्नपत्रों की प्रतिलिपि प्रकाशित की जाती है जो गतवर्ष एकादश श्रेणी की वार्षिक परीक्षा में दिया गया था।

———

गुरुकुल महाविद्यालय (काङ्गड़ी)

प्रथम सत्रकाल परीक्षा।

सं० १९६७ वि०।

वेदान्ते प्रश्नाः

समय ३ घंटे पूर्णाङ्काः १००

२५

अध्यासमाक्षिप्य समाधत्स्व।

प्रथमाध्यायस्य द्वितीयतृतीयचतुर्थपादानां विषयान् संक्षेपतो विस्पष्टं वर्णयन्, स्मृत्यनवकाशदोषप्रसङ्ग इत्यादिनोक्तं सांख्यस्मृतिविरोधमुपपादयन्, सम्यक् संक्षेपतः परिहर। २५

सांख्यतार्किकबौद्धजैनानां वेदान्तप्रतिप्रश्नान् तर्काभासीकुरु संक्षेपतः। २५

द्वितियाध्यायस्य तृतीयपादविषयान् विशदं संक्षेपतो वर्णयन्, जीवाऽणुत्वमुपपाद्य खण्डयन् वर्णय जीवमहत्त्वम्। २५

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य

गत दो वर्षों में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य संतोष जनक रहा है। गुरुकुल चिकित्सक की तय्यार की हुई निम्न सूची (Table) से गुरुकुल के गत दो वर्षों के रोगी ब्रह्मचारियों की दैनिक मध्यता ज्ञात हो जायगी—

गुरुकुल महाविद्यालय का २ वर्षों १९६६-६७ का स्वास्थ्य ब्यौरा।

नाम रोग	रोगियों की संख्या १९६६	रोगियों की संख्या १९६७	नाम रोग	रोगियों की संख्या १९६६	रोगियों की संख्या १९६७
ऋतु ज्वर	१०३२	५९९		१	६
संन्तत ज्वर	२	९	आतिसार	१	....
मसुरिका	....	१	अर्ष रोग	११	....
कूकर—कास	२३	....	यकृत रोग	१	३
आम—रक्तातिसार	२	३	ग्रन्थी शिरागत रोग	१३	....
आम—वात	....	२	मूत्र रोग	....	२
स्नायुरोग	१	२	अस्थि वा संधि भंग	१३	१
चक्षु रोग	१५	४९	विस्फोट	३	४
कर्ण रोग	१	२	व्रण	७	३
अन्य श्वास नालगत रोग	२	....	अन्यत्वक रोग	३	३
मूर्छा	८	७२	अभिघात	३	....
पेट शूल	५	....			
अजीर्ण	८	१			
			योग	११३८	७१४
			दैनिक मध्यता	३	२

शारीरिक शिक्षा

गुरुकुल शिक्षाप्रणाली का एक प्रसिद्ध अङ्ग शारीरिक शिक्षा है ब्रह्मचारियों से प्रातःकाल डमबल व्यायाम (Dumb bells) दंड मुगदर, मल्लयुद्ध क्रीड़ादि कराये जाते हैं। सायंकाल को कबड्डी, क्रिकेट, फुटबालादि होता है और इसी समय तैरना तथा कृषि सम्बन्धी कार्य सिखाया जाता है। सर्व खलों में आज्ञा निर्देशक शब्दों का प्रयोग संस्कृत में ही होता है। एक भद्र पुरुष ने व्यायाम शाला के लिये २५००) दान दिया है। यदि इस धन में ५०००) और बढ़ा दिया जाय तो एक अच्छी व्यायाम शाला सर्व प्रकार के आवश्यक सामानों से सजित तय्यार होसक्ती है। हमें आशा है कि सर्व साधारण गुरुकुल की आवश्यकताओं को समझ कर उदार हृदय से उस की सहायता करेंगे। और आवश्यक धन शीघ्र ही गुरुकुल कोष में पहुंच जायेगा।

पुस्तकालय और वाचनालय

गुरुकुल के साथ एक छोटा सा पुस्तकालय भी है जिसमें लगभग अच्छी चुनीं हुई ५५००पुस्तकें हैं। गत दो वर्षों में २७०० रुपये की पुस्तकें बढ़ाई गई हैं। कई अल्मारियों में प्रामाणिक संस्कृत ग्रन्थ हैं अर्थात् वेद और ऋषियों के बनाए ब्राह्मणादि अनेक आर्ष ग्रन्थ तथा अन्यान्य संस्कृत साहित्य के ग्रन्थ भी हैं। अङ्गरेज़ी साहित्य सम्बन्धी बहुत से प्रामाणिक (standard) ग्रन्थ हैं, sacred books of the East, story of the nations, Rulers of India और अन्यान्य International scientific series के ग्रंथ हमारे पुस्तकालय में विद्यमान हैं। शिक्षा विज्ञान पर भी बहुत से ग्रन्थ मौजूद हैं। इन के अतिरिक्त इतिहास संबन्धी तथा जविन चरित्रों के ग्रन्थ हैं १९६५ वि० में Historian's History of the world नामी पुस्तक भी पुस्तकालय में बढ़ाई गई। गत २ वर्षों में इतिहास और अन्य शास्त्र की बहुत सी पुस्तकें क्रय की गई हैं। हम मध्य प्रदेश निवासी महाशय घनश्यामसिंह जी गुप्त बी०एस०सी०एल०एल०बी० का शतशः धन्यवाद करते हैं कि जिन्हों ने थोड़े दिन हुये गुरुकुल पुस्तकालय को Encyclopedia Britannica की संपूर्ण २४ जिल्दें दान देकर अपनी उदारता तथा गुरुकुल के साथ अपने प्रेम का परिचय दिया है। वे सारे साप्ताहिक, मासिक समाचार पत्र, भारतीय तथा अन्य देशी जो वैदिक मैगज़ीन और सद्धर्म्म-प्रचारक के बदले में आते हैं, गुरुकुल ब्रह्मचारियों तथा अध्यापकों के अवलोकनार्थ वाचनालय की मेज़ पर रखे जाते हैं। इन के अतिरिक्त गुरुकुल निवासियों के लाभार्थ कई अन्य समाचार पत्र अर्थात् पायोनीयर (Pioneer) दी रिव्यू आफ रिव्यूज़ (Review of Reviews), the Punjab Educational Journal, the Educational Review Madras, the scientific American, the statist, the commerce the nature, और दो संस्कृत के मासिक पत्र—सहृदया और संस्कृत रत्नाकर गुरुकुल की ओर से मंगवाये जाते हैं।

सभाएं

गुरुकुल में एक 'संस्कृत-उत्साहिनी' सभा है जिस का उद्देश्य ब्रह्मचारियों को संस्कृत भाषण तथा लेखन सिखाना है। एकादश श्रेणी का ब्र० ब्रह्मानन्द इस सभा का मन्त्री है। इस सभा के अधिवेशन साप्ताहिक होते हैं। और सर्व कार्यवाही देव वाणी (संस्कृत) द्वारा ही होती है।

महाविद्यालय तथा विद्यालय में और भी आङ्गलभाषा तथा संस्कृत की सभाएं होती हैं। इन सभाओं में ब्रह्मचारी गण ही भाग लेते हैं इन सभाओं का निरीक्षण आचार्य्य और मुख्याध्यापक के आधीन है।

सन् १९०६ के दशहरे की छुट्टियों में जब कि आर्य्यप्रतिनिधिसभा का अधिवेशन हुआ था—सभा ने निश्चित कियाथा—कि गुरुकुल शिक्षाप्रणाली के पूर्ण समर्थन के लिये तथा वैदिक विज्ञान और प्राचीन आर्य्यों की ओजपूर्ण सभ्यता के लिये श्रद्धा उत्पन्न करने के निमित्त अङ्गरेज़ी भाषा में एक उच्च कक्षा का मासिक पत्र निकाला जाय—यह पत्र बराबर ४ वर्षों से निकल रहा है। और सारे समाचार पत्र इस की अच्छी प्रशंसा करते हैं।

वैदिक मेगज़ीन—

निस्संदेह इस पत्र ने भारतीय समाचार पत्रों में अपना उच्च स्थान बना लिया है। भारत वर्ष में उच्च कक्षा का यह सब से अल्प मूल्य का पत्र है। इस पत्र के सम्पादक प्रो० रामदेव जी हैं—और देश के कई एक सुप्रसिद्ध और योग्य विद्वानों के अति उत्तमोत्तम लेख प्रतिमास इस पत्र में प्रकाशित होते हैं। इस पत्र को बड़ी विस्तृत और उदार नीति (policy) पर चलाया जाता है। वर्त्तमान संकट समय (critical) में इस पत्र ने गुरुकुल शिक्षाप्रणाली तथा वैदिक धर्म की सुविख्यात सेवा की है। यह पत्र अब तक भी अपना व्यय पूरा नहीं कर सका, जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि सुयोग्य सम्पादक के परिश्रम को, जो वह पत्र को हर प्रकार सुपाठ्य बनाने के लिये करते हैं, उस गुणग्रहण-दृष्टि से नहीं देखा जाता जिस से वह देखे जाने का अधिकारी है। पत्र के सब संवाद दाता अवैतनिक हैं। वार्षिक मूल्य केवल ३) मासिक मात्र है।

गुरुकुल का ८म वार्षिकोत्सव

इस उत्सव पर सरस्वती-सम्मेलन की २ बैठकें २४ मार्च १९१० को हुईं। श्री पं० सातवलेकर और श्री पं० आर्य्यमुनि प्रोफ़ेसर डी० ए० वी० कालेज ने विद्वत्ता तथा सुविचार पूर्ण और सुलिखित निबन्ध पढ़े।

इन निबन्धों पर जो समालोचनाएं हुईं वे सर्वतोभावेन गम्भीरता युक्त थीं—और निश्चय रूप से निबन्ध के विषयों को प्रकाशमान करती थीं—स्वामी हरिप्रसाद इस समय सभापति के आसन पर विराजमान थे।

इस वर्ष वार्षिकोत्सव (वास्तविक) २९ मार्च को आरम्भ हुआ और २८ को समाप्त हुआ—प्रथम दिवस अर्थात् २९ मार्च की प्रातः सरस्वती-सम्मेलन की एक और बैठक लगी—इस बार सभापति के आसन को श्री० पं० तुलसीराम स्वामी मेरठ निवासी ने सुशोभित किया—आपने एक बड़ी उत्तम आरंभिक वक्तृता दी। सभापति महाशय की वक्तृता की समाप्ति पर ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र ने संस्कृत साहित्य पर अपना निबन्ध पढ़कर सुनाया—निबन्ध पर विवाद हुआ—ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र ने सर्व समालोचक महाशयों की आशङ्काओं के उत्तर में एक वक्तृता दी—ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र की यह वक्तृता सर्वथा अयत्नकृत थी—अतः वह ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र के लिये गौरवकरी थी। जो जल प्रवाह के न्याईं संस्कृत भाषण करता था। जिससे सिद्ध हो रहा था कि संस्कृत अब मृतप्रायः भाषा नहीं रही प्रत्युत विद्वानों की जीवित भाषा है और उच्च कक्षा की वैदग्ध्य तथा सभ्यता और सत्यता और अवभासता का भण्डार है।

ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र की वक्तृता के साथ प्रातः की कार्य्यवाही समाप्त हुई। उसी दिन सायंकाल के समय श्री० आचार्य्य बालकृष्ण जी ने महाशय मुंशीराम जी के सभापतित्व में एक उत्तम लेख पढ़ा। म० बालकृष्ण जी ने शिक्षा का वैदिक आदर्श श्रोतागणों के सन्मुख रक्खा। और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के भविष्य पर पूर्णतया विचार प्रकट करते हुये आप ने बताया कि आधुनिक विश्वविद्यालय सभा (University–Senate) के आदेश पर आधारित एक विद्या सभा बनानी चाहिये जो देश के वर्त्तमान तथा भविष्य में

खुलने वाले गुरुकुलों के कार्य्यों का निरीक्षण तथा शासन करे और सर्व ऐसे विद्यालयों को शृङ्खला बद्ध-करे। इसके बाद सामयिक प्रधान ने अपनी वक्तृता की जिस को उपस्थित श्रोतागणों ने दत्त चित्त होकर श्रवण किया। उनके वक्तृतार्थ खड़े होने पर करतालिकाओं से उन का स्वागत किया गया और वक्तृता की समाप्ति पर पुनःश्रोताओं के हर्षसूचक और आह्लाद जनक जयध्वनिक शब्दों के साथ अपने आसन पर आ गये। तत्पश्चात् कई आवश्यक प्रस्ताव सभा के सन्मुख बड़े सुप्रसिद्ध तथा विद्वान् प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुत तथा अनुमोदित होकर सर्व सम्मत्यनुसार स्वीकृत किये गये। २६ मार्च की प्रातः अन्त्यज जातियों के उद्धार के लिये क्रियात्मक साधनों पर विचारार्थ विद्वानों का एक सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन के सभापति श्री चौधरी रामभजदत्त बी० ए० एल०एल०बी० थे। चौधरी जी ने नियत विषय पर बड़ी बलवती वक्तृता की। हमें यह बात सलज्जा माननी चाहिये कि अन्त्यज जातियों की ओर जो हमारे कर्तव्य हैं हमने अभी तक उनके पालनार्थ कुछ भी यत्न नहीं किया है। इस समय हमारे देश में इन अभागे मनुष्यों की संख्या ६ करोड़ है। वस्तुतः यह हमारे ही वंशज हैं। हम अपने शासकों से समान नागरिक अधिकार मांगते हैं और सर्व व्यवहारों में समानता की पुकार मचाते हैं। असमानवर्ताव पर हम क्रुद्ध होते हैं और अन्यायी न्यायाध्यक्ष के विरुद्ध अप्रसन्नता प्रकट करने वाली सभाएं करते फिरते हैं। परन्तु इन अन्त्यजों के साथ दुर्व्यवहार करने में हम न्यायाध्यक्ष, प्रमाण पुरुष तथा अभियोक्त सब ही कुछ बने हुये हैं। हमारा क्या अधिकार है कि हम औरों से उत्तम वर्ताव की आशा करें जब हम उनके साथ अच्छा वर्ताव नहीं करते। पुनः चौधरी जी ने कहा यदि इस समय भारतवर्ष में किसी कुचाल का बलपूर्वक खंडन

करने की आवश्यकता है तो वह हमारा अन्त्यजों के साथ व्यवहार है। जो कुकर्म मनुष्यों में परस्पर प्रेम रूपी देवी का गला घोंटता है, मनुष्यों में भ्रातृभाव के नियम की जड़ काटता है और मनुष्य मात्र के लिये करुणा रूपी नदी के प्रवाह को बन्द करता है। निस्संदेह हम अन्त्यजों के साथ अपनें कर्तव्य पालन से च्युत हैं। पादरी लोग ही कुछ थोड़ा बहुत उनकी शिक्षादि का प्रबन्ध करते हैं। हमारी जाति के लिये पादरियों की यह दया भयङ्कर सिद्ध होगी। यह एक हमारे अधोपात का कारण होगी हमें समय पर सावधान हो जाना चाहिये और यह कलङ्क का टीका अपनी जाति के माथे पर से दूर कर देना चाहिये।

तत्पश्चात् कुछ प्रस्ताव नियमानुसार प्रस्तावित तथा अनुमोदित हो कर स्वीकृत हुवे। सायंकाल के समय स्वामी तुलसीरामजी पं० आर्यमुनि जी तथा स्वामी हरिप्रसाद जी के तीन वाक्पाटव युक्त तथा प्रभावशाली व्याख्यान हुवे। जिन्होंने श्रोतागणों के मनों को खूब आकर्षित किया और उन पर उत्तम प्रभाव डाला। यह व्याख्यान अधिकतः आचार तथा अध्यात्म विद्या संबंधी विषयों पर थे। अतः श्रोतागणों ने इन को विशेष ध्यान से श्रवण किया। इन व्याख्यानों का सार दो शब्दों में 'प्रेम तथा कर्त्तव्यता' कहा जा सक्ता है। अगले दिवस की कार्यवाही श्री स्वामी सत्यानन्द जी की वक्तृता से आरम्भ हुई। स्वामी जी के व्याख्यान के अन्तिम शब्द वस्तुतः मनोरम थे। आपने कहा यदि वास्तविक मन से हम परमात्मा के साथ अपना मन जोड़ दें तो हम अवश्य उस की प्रिय वस्तुओं से प्यार करेंगे और अतः हम स्वात्मप्रेम को छोड़ कर मनुष्यमात्र के साथ अपना स्नेह जोड़ेंगे।

स्वामी जी के व्याख्यान की समाप्ति पर म० बालकृष्ण जी गुरु-

कुलाचार्य ने गुरुकुल का वार्षिक वृत्तान्त सुनाया और वृत्तान्त की समाप्ति पर म० बालकृष्ण जी ने श्री पं० तुलसीरामजी मिश्र एम० ए० एम० आर० ए० एस० पाश्चात्य दर्शन के महोपाध्याय के गले में फूलों का हार पहनाया। जिन्होंने अपनी आजीवन सेवाएं गुरुकुल के अर्पण करदीं। परन्तु इस प्रातः जो अति वाक्‌पाटव युक्त तथा मर्मभेदक वक्तृता हुई वह श्रीमती गार्गीदेवी की थी जिन्होंने अपनी जाति के अधिकारों का बड़ी योग्यता तथा उच्चता के साथ समर्थन किया। देवी ने बड़े बलयुक्त शब्दों में वर्णन किया कि विद्या तथा सभ्यता का प्रकाश दोनों ही पुरुष तथा स्त्री के लिये समान आवश्यक है। प्रथम हमारे गृह उन्नत तथा शुद्ध होने चाहियें। प्रत्येक भारतीय गृह के कोने कोने में प्रकाश पहुंचाना चाहिये और प्रत्येक गृह को सर्व उत्तम प्रभावों का केन्द्र बना देना चाहिये। ऐसे आदर्श गृहों का दृश्य दिखाना स्त्री रूपी देवी के आधीन है। उसी से ग्रह्य तथा सामाजिक प्रभावों की वे किरणें चतुर्दिक् फैलनी चाहियें जो मनुष्य जीवन को प्रकाशमान बनादेती हैं और सच्चे मनुष्यत्व की बुनियाद रखती है।

अन्तमें सायं समय महात्मा मुन्शीरामजी ने गुरुकुल की सहायतार्थ धन के लिये अपील की—महात्मा जी ने आर्य्यवर्त की प्राचीन तथा वर्त्तमान अवस्थाओं का बड़े हृदय भेदक शब्दों में चित्र खींचा और वर्तमान कालिक आर्य्यों की दृढ़धर्मपरायणता का सविस्तर वर्णन किया। महात्मा जी की अपील का परिचय आर्य सभ्यों ने बड़ी उदारता से दिया जिस का परिणाम यह हुवा। कि ५००००) रोकड़ा और १५०००) की जायदाद गुरुकुल को दान मिला इस बात को ध्यान में रखते हुवे कि इस वर्ष रेल भाड़े में कोई रियायत न मांगी गई थी और गुरुकुल के किन्हीं

अहितैषियों ने भी अपना निन्दित कार्य्य करने में कमी न रक्खी थी—उपरोक्त पुष्कल दान वस्तुतः आशातीत है और इस बात का सूचक है कि गुरुकुल के लिये सर्वसाधारण के हृदय में अगाध प्रेम का प्रवाह बह रहा है। २८ मार्च की प्रातः नये ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार तथा भिक्षा हुई। गुरुकुल का यह आठवां महोत्सव सहर्ष निर्विघ्न और बड़ी कृतकार्यता के साथ २८ मार्च को समाप्त हुआ—

गुरुकुल का नवम वार्षिकोत्सव

प्रिय गुरुकुल का ९वम वार्षिकोत्सव जैसा पहले ही विज्ञापनों द्वारा प्रकट किया गया था—१३, १४, १५, १६ और १७ अप्रैल को मनाया गया—इस वर्ष गुरुकुल को कई एक भयङ्कर कठिनाइयों में से गुजरना था—अतः गुरुकुल का वार्षिकोत्सव ही संदिग्ध था। उत्सव की प्रथम नियत तिथियों के ३ मास पूर्व से ही एक 'मन चला वीर' जिस के लोकाचार की गर्हितता समाचार पत्रों में लेखों द्वारा प्रकट की गई थी—गुरुकुल तथा उस के मुख्य कार्यकर्ताओं के विरुद्ध झूठी, सर्वथा निर्मूल बातें लोगों में फैलाने पर कटिवद्ध हुआ। निर्मूल किंवदन्तियें और बेबुनयाद अपवाद उड़ाने आरम्भ कर दिये। सर्व साधारण को बतलाया गया कि गत वर्षा ऋतु में गङ्गा में जो बाढ़ आई थी—उस समय सारा गुरुकुल जल में छुप गया था और 'लावारिस' 'करन्सी-नोट' पानी पर तैरते फिरते थे। जब कि था यह कि गङ्गा की गत अपूर्व बाढ़ ने गुरुकुल भूमि का कुछ थोड़ा किनारा काटने के अतिरिक्त अन्य कोई हानि नहीं पहुंचाई। यह झूठ आसक्ति पूर्वक फैलाया गया कि एक वर्ष के भीतर गुरुकुल से ६० विद्यार्थी वापिस आगये जब कि सत्य यह है कि १० वर्ष के समय में भी अर्थात् जब से गुरु-

कुल खुला है इतने ब्रह्मचारी गुरुकुल से पृथक् नहीं हुवे हैं करेला और नीम चढ़ा की लोकोक्ति के अनुसार इस उपरोक्त साहसक को गुरुकुल के बदनाम करने के लिये स्वभावतः एक विस्तृत और कुञ्न-गामिनी बुद्धि की सहायता भी मिल गई। इस वीर को अपनी शक्ति तथा साधन के घमंड में आकर इस निन्दित कार्यवाही में प्रवृत होते समय किञ्चित् भी लज्जा न आई। सुखवंचनीय और अतर्कशील पुरुषों की सादगी और सर्व साधारण के नीच भावों की पूर्ती ही इस निन्दित व्यापार में इस मंद भाग्य योवक की पूंजी समझना चाहीये। इस ने हृदय में सब कुछ भली प्रकार जानते हुवे निज स्वार्थ सिद्धि के लिये यह सब खेल खेला। गुरुकुल से अटूट प्रेम के कारण तथा उसके विरुद्ध कभी कोई बुराई सुनने के अभ्यस्त श्रोत्र न रखने के कारण सर्व साधारण के हृदय इन घटनाओं को देखकर विश्वासा—विश्वास के समुद्र में गोते खाने लगे।

पुनः जो तिथियें गुरुकुलोत्सवार्थ प्रथम नियत की थीं उन दिनों में बड़ी घोर वृष्टि हुई और गङ्गा के दोनों पुल बह गये। यदि तिथियें बदली हुई न होती तो सहस्रों नर नारियों को असह्य कष्ट होता और उत्सव में एक बड़ी भारी अकृतकार्यता होती। किन्तु परमात्मा का सर्व रक्षक हाथ गुरुकुल रूपी बालक के शिर पर था। यद्यपि अल्पज्ञ मनुष्य इस में अविश्वास प्रकट करता था। वह सर्वशक्तिमान् परमपिता जिस के नित्य अविनाशी वैदिक ज्ञान की रक्षार्थ ही गुरुकुल खोला गया है इस घोर आवश्यकता के समय कब अपने भक्तों को निस्सहाय छोड़ सक्ता था। गुरुकुल के अधिकारियों ने इस भयङ्कर आपत्ति के समय में भी ओ३म् पर दृढ़ विश्वास जमाये रक्खा। और उनके इस विश्वास ने उनको बचा लिया। होली के २ सप्ताह पूर्व यह विचार एकबारही अकस्मात् उन के हृदय में उठा कि इस वर्ष उत्सव की तिथियों का

परिवर्तन कर देना ही उचित है। यद्यपि उनके पास इस परिवर्त्तन के लिये कोई प्रबल युक्ति न थी तथापि वे परिवर्त्तन को हृदय से अनुभव करते थे। उन को सुनाया गया था कि मनुष्य गणना के कारण इस वर्ष गुरुकुल के प्रेमी अपने प्रिय गुरुकुल के लिये धन एकत्रित करने में अशक्त रहेंगे। इस युक्ति द्वारा ही यद्यपि यह अकाट्य न थी गुरुकुल के अधिकारियों ने तिथियें परिवर्त्तनार्थ अपना कुछ मन-संतोष कर लिया और कम्पायमान हृदयों के साथ तिथि परिवर्त्तन का विज्ञापन निकाल दिया।

तिथियों के परिवर्त्तन समय भय प्रतीत होता था कि ऐसा न हो कि अप्रैल में बर्फ पिगलने से नदी में जल बढ़ जाने से पुल बह जावे और उत्सव ही असम्भव होजावे। परन्तु सर्वज्ञ परमात्मा से यह बात छिपी न थी कि अप्रैल मास की अपेक्षा मार्च मास में इन्द्र देवता का स्वरूप अधिक भयङ्कर होगा। अतः उस ने गुरुकुल के अधिकारियों की बुद्धियों को श्रेयस्कर मार्ग की ओर प्रेरा। परिवर्त्तित तिथियों के विज्ञापित करने के साथ ही फिर पुल बह गये। निर्बल विश्वास वाली आत्माएं फिर निराशता से घिर गयीं परन्तु अधिकारियों का विश्वास दृढ़ रहा और उन की शुभ आशाएं सफल हुईं। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को अपनी शिक्षा की उच्चता और गुरुकुल के साथ अपने प्रेम का परिचय देने का यह बड़ा ही उत्तम अवसर हाथ लगा। ब्रह्मचारियों ने २ दिनों तक कुलियों की न्याईं घोर परिश्रम किया और उत्सव की नियत तिथियों से २ दिन पूर्व पुलों तथा सर्व मार्गों को ठीक बना दिया।

वे निराशता की काली घटायें जिन्हों ने गुरुकुलोत्सव के आकाश को आच्छादित किया था—समय आने पर आन की आन में छिन्न

भिन्न हो गईं । और गुरुकुल का उत्सव बड़े समारोह, अतिहर्ष तथा अपूर्व उत्साह के साथ मनाया गया । मार्ग के कष्टों तथा कठिनाइयों के विद्यमान होते हुए भी सहस्त्रों देवियों ने गुरुकुल भूमि में एकत्र होकर उन अशुभचिन्तकों की पराजय को सिद्ध कर दिया जो सारे संसार को अपने दुर्विचारों का प्रतिक्षेपक और अपने दुर्भाव युक्त हृदयों का प्रतिबिम्ब समझते हुए अनिष्ट परिणामों की घोषणा और आपत्तियों की भविष्यत् वार्त्तायें करते थे ।

जब गुरुकुल यात्रियों ने गुरुकुल भूमि में पधार कर स्वयं निज चक्षुओं से गुरुकुल के सर्व कार्य्यों का अवलोकन किया—तो उन को निश्चय होगया कि धृष्टता भी किसी समय निर्भयता का वेष धारण कर सक्ती है और निर्लज्जता धर्म्म मन्यु का पहरावा पाहिन सकती है ।

सरस्वती सम्मेलन ।

सरस्वती सम्मेलन में इस वर्ष पूर्णतथा आशातीत साफल्य प्राप्त हुआ । पं० विधुशेखर भट्टाचार्य्य की प्रधान रूपेण वक्तृता संस्कृतज्ञों के लिये साहित्य का एक अनुपम तथा अत्युत्तम व्याख्यान था । जिन्हों ने वह वक्तृता सुनी उन के मन हर्ष से भर गये और आश्चर्यित हो कर कहते थे कि किस प्रकार दयानन्द की महान् तथा बलवान् आत्मा ने ऐसी २ शक्तिशालिनी बुद्धियों तक को काबू कर लिया है । योग्य पंडित ने प्राचीन आर्य्य सभ्यता के विषय को स्वामी दयानन्द की मत—स्थित्यनुसार हीं सविस्तर वर्णन किया था । प्राचीन आर्य्य सभ्यता पर ब्र० ब्रह्मदत्त का निबन्ध विषय सम्बन्ध की नई नई ज्ञातव्य बातों का भण्डार था और धैर्य्ययुक्त परिश्रम के चिह्नों से अङ्कित था । लेखशैली, वाकपाटव तथा भाषा के लालित्य से परिपूर्ण

थी । भिषगाचार्य केशवदेव शास्त्री अपनी माता की शोचनीय रुग्णावस्था के कारण सम्मेलन में उपस्थित न हो सके । उन का निबन्ध 'ब्राह्मण ग्रन्थों की वेदों के साथ अनुकूलता' विषय पर मन्त्री साहित्य परिषद ने पढ़ कर सुनाया । इस निबन्ध के विवाद के समय स्वभावतः उदासीनता फैली हुई थी । निबन्धकर्त्ता की अनुपस्थिति के कारण समालोचना मनोरंजक न थी । सामयिक प्रधान पं० शिवशङ्कर जी काव्यतीर्थ की वक्तृता सर्वसार पूर्ण तथा प्रत्ययजनक थी । पं० जगन्मोहन वर्म्मा का निबन्ध. 'क्या बुद्धदेव नास्तिक था' श्रोताओं ने दत्तचित्त हो कर तथा आश्चर्य के साथ सुना—निबन्धकर्त्ता ने बौद्ध मत के शास्त्रों के प्रमाणों द्वारा विस्पष्ट सिद्ध कर दिया कि बुद्धदेव वैदिक धर्म्म प्रचारक था । नास्तिक न था । और नहीं देवतावादी था ।

(१८) सामयिक प्रधान श्री स्वामी सत्यानन्द जी की इस समय की वक्तृता छोटी थी तथापि मनोहर शिक्षाप्रद और उत्तेजक थी—ब्र०इन्द्र का भाषा निबन्ध 'वेदों के अर्थ प्रकार' पर विचार पूर्ण, अत्युत्तम, और स्वमूलक था । ब्र० इन्द्र ने इस बात को भली प्रकार सिद्ध करके अपने श्रोताओं को विश्वास दिलाया कि जब तक कोई मनुष्य दयानन्द जैसा दिव्य योग शक्तियों से विभूषित पूर्णयोगी न हो जाय—तब उस के लिये आवश्यकीय है कि वह वैदिक शब्दों के अर्थ निश्चित करने के पूर्व सर्व प्रकार के विज्ञानों तथा संस्कृत, पाली, अस्सीरियन, ग्रीक और लेटिनादि भाषाओं की सहायता भी लेवे । सामयिक प्रधान श्री पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर के निबन्धित विषय सम्बन्धी वाक्य बड़े मनोहर तथा विद्वत्ता पूर्ण थे । 'नूतन वेदान्त तथा उपनिषदें' विषय पर संस्कृत भाषा में एक मनोरञ्जक विवाद भी हुआ । इस विवाद के समय पं० शिवशङ्कर जी प्रधान थे और पं० आर्य्यमुनी जी विवादारम्भक थे ।

देववाणी सम्मेलन ।

यह सम्मेलन इस वर्ष उत्सव की एक नई विशेषता थी–सर्व कार्य्यवाही संस्कृत में होती ही थी इस सम्मेलन के प्रधान श्री पं० विधुशेखर जी थे । महाशय विष्णुदत्त मुलतान निवासी ने भजन गान किया । 'संस्कृत उत्साहिनी सभा' के उद्देश्यों को श्रोतागणों के सन्मुख रखने के लिये ब्र० इन्द्र ने एक छोटा स्वलिखित पत्र पढ़ा । पं० अखिलानन्द जी ने देववाणी को सर्वप्रिय भाषा बनाने के साधनों पर एक वक्तृता दी– ब्र० हरिश्चन्द्र ने 'संस्कृत साहित्य के इतिहास में गतिरोध का समय' पर संस्कृत भाषा में एक धारा प्रवाह भाषण किया । ब्रह्मचारी ने अपनी इस संस्कृत वक्तृता में संस्कृत अध्ययन की पुरानी परम्परा का त्याग करने और नूतन शिक्षा प्रणाली का अवलम्बन करने और संस्कृत में स्वतन्त्र रूप से ग्रन्थ रचने की आवश्यकताओं पर बड़ा बल दिया । ब्र० देवदत्त तथा ब्र० विद्यासागर ने स्वरचित श्लोक पढ़े । छोटे ब्रह्मचारियों का कंठस्थ श्लोकों में सान्मुख्य हुआ । जिस को देख कर श्रोतागण अतिप्रसन्न हुवे । सामयिक प्रधान ने अपनी वक्तृता में गुरुकुल के छात्रों की प्रशंसा की वह गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को धारा प्रवाह संस्कृत भाषण करते देख कर चकित रह गये । इस सम्मेलन में अद्वितीय कृतकार्य्यता हुई ।

गुरुकुल सम्मेलन ।

गुरुकुल सम्मेलन गुरुकुल की आर्थिक दशा को दृढ़ करने के साधनों के विचारार्थ १९ अप्रैल को हुआ । सर्वसम्मति से स्वामी सत्यानन्द जी ने प्रधान के आसन को ग्रहण किया । पंजाब प्रदेश की मुख्य २ समाजों के अनुमान ७९ प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन के विचारों में भाग लिया माननीय प्रधान ने एक बड़ी मधुर तथा सुन्दर वक्तृता की । योग्य व्याख्याता ने आर्य्यसज्जनों से अपील की कि उन्हें अपने उत्तरदातृत्व की

महानता को समझना चाहिये और साथ ही वेदों के प्रचारार्थ हर प्रकार के त्याग के लिये उद्यत रहना चाहिये । बहुत सी समाजों के प्रतिनिधियों ने विवाद में भाग लिया और कई आवश्यकीय प्रस्ताव स्वीकृत हुवे । एक सभ्य ने बलपूर्वक आवश्यकता प्रकट की कि गुरुकुलार्थ धन एकत्र करने के लिये प्रत्येक स्थानीय समाज एक एक स्थिर–समिति बनाये एक और महाशय ने ज़ोर दिया कि आर्य्य प्रतिनिधि सभा एक डेप्युटेशन तय्यार करे जो धन सञ्चयार्थ सारे देश में दौरा करे। इस समय के प्रस्तावित विषयों को कार्य्य में प्ररिणत करने के लिये एक सभा बनाई गई । डा० नन्दलाल जी स० मुख्याधिष्ठाता इस सभा के मन्त्री नियत हुवे ।

आर्य्य भाषा सम्मेलन– यह सम्मेलन १६ अप्रैल को डी.ए.वी. कालेज के प्रो० पं० आर्य्य मुनि जी के प्रधानत्व में हुवा। पं० जी ने इस अवसर पर एक प्रभावशाली व्याख्यान दिया और बतलाया कि शुद्ध पञ्जाबी भाषा, आर्य्य भाषा की केवल एक शाखा है । निम्न आवश्यकताओं पर कई आवश्यकीय प्रस्ताव स्वीकृत किये गये ।

१म–सर्व आर्य्य विद्यालयों में शिक्षा आर्य्य भाषा द्वारा होनी चाहिये । २य–शुद्ध पंजाबी भाषा देवनागर अक्षरों में लिखी जानी चाहिये । ३य–पंजाब में पोस्टमैन (पत्रप्रेषक) आर्य्य भाषा जानने वाले होने चाहियें । ४र्थ–रेलवे के विज्ञापन आर्य्य भाषा में भी छपने चाहियें । ५म–पंजाब के सर्व आर्य्य समाज तथा सनातनधर्म सभाएं अपनी २ कार्यवाही आर्य्य भाषा के माध्यम से ही किया करें । लोगों में बड़ा उत्साह था । कई उत्तमोत्तम वक्तृताएं हुईं । कई देवियों और भद्र पुरुषों ने अपने दैनिक व्यवहार तथा पत्र व्यवहारादि में आर्य्य भाषा का ही प्रयोग करने की प्रतिज्ञा की––

शिक्षा संबन्धी प्रदर्शनी—यह प्रदर्शनी प्रो० सिंहा तथा गुरुकुल के मुख्याध्यापक द्वारा प्रबंधित थी-इस में भी साफल्य उपलब्ध हुआ । सहस्त्रों देवियों और भद्र पुरुषों ने आश्चर्य्य के साथ विज्ञान के उस अद्भुतालय का अवलोकन किया जिस को प्रो० सिंहा तथा उन के शिष्यों ने मानो जादू के दंड से उत्पन्न करके उपस्थित कर दिया था। वेतार की तार के परीक्षण बड़ी उत्तमता से दिखाये जाते थे । ब्रह्मचारियों की तय्यार की हुई विद्युत घंटियों तथा साबुन की टिक्कियों को यात्री गणों ने मान की दृष्टि से देखा । और बड़ी प्रशंसा की । छोटे ब्रह्मचारियों के खीचे हुवे चित्रों की चित्रकारों तक ने प्रशंसा की। आरम्भिक श्रेणियों के ब्रह्मचारियों के मट्टी तथा काग़ज़ के खिलौने भी सराहनीय थे ।

उत्सव व्याख्यान—बहुत से विद्वता पूर्ण और शिक्षाप्रद व्याख्यान हुवे, श्री स्वामी सत्यानन्द जी ने २ मधुर तथा आत्मोन्नति कारक उपदेश दिये जो भक्तिभावों तथा उच्च शिक्षामय विचारों से पूर्ण थे । पं० आर्य्य मुनि जी ने आरम्भ से आर्य्य समाज का इतिहास वर्णन किया और स्वामी दयानन्द के उद्देश्यों को सदैव लक्ष्य में रखने का तथा उन पर दृढ़ रहने का उपदेश दिया । म० वृजनाथ बी. ए. एल. एल. बी. ने जो आर्य-भाषा-निपुण हैं एक अत्युत्तम व्याख्यान दिया। पं०विष्णुदत्त ने प्राचीन आर्य्य सभ्यता पर व्याख्यान दिया । प्रो० रामदेव ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की विशेषता पर सारगर्भित वक्तृता की। योग्य व्याख्यान दाता ने बताया कि संसार की प्रारम्भिक तथा आत्मिक अवनति का कारण एक मात्र इस समय सरस्वती की अप्रधानता और लक्ष्मी की प्रधानता है । ऊपरी सभ्यता का राज्य है हार्दिक धर्म भाव नहीं । निर्धनता इस समय सब से बड़ा अपराध है । धनिकों के सर्व पाप क्षमा

योग्य रहते हैं । एक निर्धन असत्यवादि को तो घृणा की दृष्टि से देखा जाता है किन्तु, एक ऐसे वकील को जो जानता हुआ हानिकारक साक्षियों को प्रस्तुत करने से रोक लेता है और क्षणिक कृत्रिम उत्साह जिस को वह हृदय से बिलकुल अनुभव नहीं करता, प्रकट करता है और जो विपक्षी साक्षियों के वर्णनों की परीक्षा करते समय, घबरा देने वाली तथा अस्पष्ट वार्ता द्वारा उन को सत्यमार्ग से गिराने का यत्न करता है, मान का स्थान दिया जाता है और उस की कीर्त्ति फैलाने के लिये जलसे उड़ाये जाते हैं । एक विस्तृत ग्राहक संख्या वाले उर्दू समाचार पत्र के विशेष संवाद दाता ने मेरे उपरोक्त वाक्यों को विकृत किया है और उन को प्लीडरों के लिये समूह रूपेण निन्दा सूचक प्रकट करने का यत्न किया है। इस प्रकार का अनुचित यत्न निष्फल होता है । इस बात में कोई विरोध नहीं हो सक्ता कि शुद्ध सत्य-शीलता तथा सच्ची सरलता के कथनों और वकीलीय अन्तःकरण (legal conscience) तथा वकीलीय सभ्यता (Progessiouol Etiqette) का सम्मेलन नहीं हो सक्ता। इस उपरोक्त कथन की सत्यता को बड़े २ प्रसिद्ध वकीलों तथा लेकी जैसे दार्शनिकों ने भी माना है । कई वकील साहेबान ने निस्संदेह जाती की धार्म्मिक अवस्था को निर्बल कर दिया है । और एक धार्म्मिक प्लीडर अपने व्यवसाय की उन्नति के मार्ग में प्रतिदिन बढ़ती हुई कठिनाई अनुभव करता है प्रो० महोदय ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के विरुद्ध उठाई हुई आशङ्काओं का उत्तर दिया और श्रोतागणों से गुरुकुल की सहायतार्थ अपील कि—जिस गुरुकुल का उद्देश्य है कि पदाच्युता सरस्वती को उसके वास्तविक स्थान पर बैठाया जाये, पवित्र वाणी संस्कृत भाषा को पुनर्जीवित किया जाय, और नर नारी में सदाचार तथा धार्म्मिक स्फूर्ति उत्पन्न की जायं । निस्संदेह इस वर्ष गुरुकुल उत्सव पर

गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता की धन सम्बन्धी अपील एक विशेष वक्तृता थी उस दिन सहस्त्रों नर नारी, वृद्ध तथा बालों की उपस्थिति में उनके आश्चर्य भरी निगाहों से उस की ओर देखते २ ही उस महान् पुरुष ने सर्वमेध यज्ञ कर दिखाया। आप ने पहले ही क़रीब २ अपना सर्व-स्व वैदिक धर्म्म पर निछावर कर रक्खा था। उस ने श्रोतागणों को सुनाया कि उस ने अपने दोनों पुत्रों की अनुमति सहित दृढ़ निश्चय कर लिया है कि वह आज उस अन्तिम पाश को भी जो संसार बन्धनों का कारण है, काट डाले। उस की एक मात्र सर्व सांसारिक पूंजी जालन्धर वाला बङ्गला और उसके साथ का एक सुंदर उपवन है। उसने वह बङ्गला भी आज गुरुकुल के अर्पण कर दिया। वह इस समय ३६००) का ऋणी है जिस ऋण को वह स्वयं ही चुकायेगा। आज से वह एक भिक्षुक के रूप में निशङ्क और निर्भय होकर और सर्व सांसारिक संबन्धों से पृथक् रह कर अपने प्यारे गुरुकुल के लिये द्वार २ घूम कर भिक्षा मांगेगा।

त्याग की मूर्त्ति के मुख से इन शब्दों को सुन कर सहस्त्रों नर-नारी के नेत्र अश्रुवों में तर हो गये। सब उपस्थित जनों के हृदय पानी पानी होगये। इस मर्मवेधक अपील ने सर्व श्रोताओं के भीतर विद्युत का संचार कर दिया।

उत्सव पर धन

धर्म्माधर्म्म विवेचन शून्य द्वेषियों की ओर से पूरे वर्ष भर लगातार अपवित्र प्रयत्नों की विद्यमानता में और उन में से कई के उस दिन उत्सव मंडप में घुस कर गुरुकुल के प्रबन्धादि के विरुद्ध यात्रियों में झूठ जनवाद फैलाने के रूप में गुरुकुल के उनके साथ आतिथ्य का ऋण चुकाते हुवे भी चारों ओर से धन की वृष्टि आरम्भ हो गई। और उसी समय रोकड़ा

और जायदाद मिला कर ९००००) जमा होगया। यह धन राशि गत-वर्ष की वार्षिकोत्सव की धन राशि से अधिक थी क्योंकि गतवर्ष की धन राशि ९००००) में ६०००) चार संरक्षकों का धन था जो उन्होंने अपने बालकों की शिक्षार्थ शुल्क के स्थान में दिया था। शुल्कमोचन हो जाने के कारण कोई ऐसी धन राशि इस वर्ष के धन में सम्मिलित न थी यदि गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता का दान भी इस वर्ष के धन में मिला दिया जाये तो इस वर्ष के पूर्व धन का योग ७००००) हो जाता है। गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता की धन सम्बन्धी अपील का ऐसा उदार तथा उत्साह वर्धक उत्तर इस अवसर तथा आर्य्यसमाज के गौरव और उसके शिष्टा-चार के योग्य ही था।

वेदारम्भ संस्कार

वेदारम्भ संस्कार १७ अप्रैल की प्रातः हुआ—२० नये ब्रह्मचारी इस वर्ष प्रविष्ट हुवे। इस समय का उपदेश जो गुरुकुलाचार्य्य ने गुरुकुल पूर्व प्रविष्ट ब्रह्मचारियों को दिया ऐसे हार्दिक भावों से पूर्ण था कि स्वयं वक्ता का हृदय भी भर आया। और अश्रुपात हो गये। यह दृश्य अति कारुणिक था।

उत्सव की समाप्ति पर परमात्मा का धन्यवाद

उत्सव की कृतकार्य्यता के लिये हम सर्व व्यापी ओ३म् का धन्यवाद करते हैं और नम्रता पूर्वक प्रार्थना करते हैं कि परमात्मा गुरुकुल में कार्य्य करने वाली निर्बल आत्माओं को बल प्रदान करे जिस से वे द्वेषियों के निर्मूल तथा अन्याय युक्त आक्षेपों का सहन करते हुवे और बदला लेने के नीच भावों को अपने हृदय में स्थान न देकर आर्य्य-व्रत का पालन करते हुवे वैदिक धर्म्म की सेवा में सदैव रत रह सकें।

गुरुकुल में एक साहित्य परिषद् नामिनी सभा है। जिस का

साहित्य परिषद् मुख्य उद्देश प्राचीन आर्य्यावर्त्त के इतिहास तथा साहित्य के लिये एतद्देश निवासी तथा अन्य देश निवासियों में उत्साह उत्पन्न करना है और सामान्यतः विद्या प्रचार को सर्व प्रिय बनाना है। आरम्भ से गुरुकुल में वाग्वर्धनी सभा हुआ करती थी—६४ वर्ष के आरम्भ में ऐसे उच्च श्रेणी के विद्यार्थियों के लाभार्थ जो अन्वेषण सम्बन्धी कार्य्यों में क्रियात्मक अनुराग प्रकट करने के योग्य तथा इच्छुक थे, एक सभा स्थापित करने का प्रस्ताव उपस्थित किया गया। इसी समय एक ऐसी घटना भी हो गई जिस ने उपरोक्त सभा की स्थापना के विचार को अधिक पुष्टि दी— गुरुकुल के ६४ वार्षिकोत्सव पर गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता ने विद्वानों का एक सम्मेलन कराया। इस सम्मेलन का नाम सरस्वतीसम्मेलन रक्खा गया—और अन्त में यह सम्मेलन साहित्य परिषद् का भाग बन गया। साहित्य परिषद् के निम्न उद्देश्य हैं:—

१. इसके सभासदों में जातीय साहित्य के लिये उत्साह और सामान्यतः विद्या के लिये अनुराग उत्पन्न करना है

२. उन को कुछ संस्कृत बोलने तथा लिखने का अभ्यास कराना—

३. संस्कृत तथा आर्य्य भाषा में उत्तम प्रामाणिक ग्रन्थों की रचना—

यद्यपि यह साहित्यपरिषद् मुख्यतया गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के लाभार्थ ही स्थापित हुई प्रतीत होती है। परन्तु इस में संदेह नहीं कि सर्वसाधारण दृष्ट्या भी यह परिषद उपयोगी है। सभा के साधारण अधिवेशनों में साहित्य सम्बन्धी, विज्ञानिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक विषयों पर निबन्ध पढ़े जाते हैं और उनपर विवाद होते हैं। गतवर्ष नें निम्न निबन्ध इस सभा में पढ़े गये।

१ रामायण का समय और उसकी सभ्यता } ब्र० इन्द्र
२ बाणभट्ट
३ संसार के संशोधकों में स्वामी दयानन्द का स्थान

४ कौन्ट टालसटाय और उस की शिक्षा } ब्र० हरिश्चन्द्र
संस्कृत व्याकरण पढ़ाने की आधुनिक शैली

६ आस्तिक्य } ब्र० जयचन्द्र
७ आंख की रचना तथा क्रिया
८ मुक्ति

९ दयानन्द और देश भक्ति .... प्रो० रामदेव

१० पुराण.... .... पं० शालिगराम शास्त्री

११ शुक्र नीति.... .... ब्र० ब्रह्मदत्त

इस परिषद की एक विशेषता यह है कि कभी २ प्रसिद्ध विद्वानों को ब्रह्मचारियों के लाभार्थ विशेष विषयों पर व्याख्यानार्थ निमन्त्रित किया जाता है। गत वर्षों में प्रो० बालकृष्ण M.A. ने अर्थ शास्त्र तथा इतिहास पर दो अत्युत्तम व्याख्यान दिये। परिषद के वर्त्तमान पदाधिकारी:—

१ गुरुकुल का आचार्य प्रधान (स्वपदाधिकार से)

२ ब्र० जयचन्द्र (चतुर्थदश श्रेणी) मन्त्री

३ ब्र० विश्वामित्र (एकादश श्रेणी) उपमंत्री

परिषद का वार्षिक वृत्तान्त प्रति वर्ष प्रकाशित किया जाता है जिस में परिषद के कार्यों तथा उस में पढ़े हुवे निबन्धों का सविस्तर वृत्तान्त होता है।

सरस्वती यात्रा

१९६७ वि० में भाद्रपद के सत्रावकाश में गुरुकुल के महाविद्यालय विभाग के ब्रह्मचारियों को कसौली और शिमलादि पर्वतों की यात्रा कराई गई। इस यात्रा में ब्रह्मचारियों ने अपने वार्षिक अवकाश का खूब आनन्द लिया। छोटे छात्रों ने समीपवर्त्ती स्वास्थ्यकारी तथा पर्वती स्थानों की सैर की– गतवर्ष महाविद्यालय के १९ ब्रह्मचारी गुरुकुल मुख्याधिष्ठाता के साथ धर्म्मशाला पर्वत पर गये थे। परन्तु लगातार वृष्टि के बाहुल्य के कारण पालमपुर से आगे न जासके। अतः उन्हें गुरुकुल लौटना पड़ा।

गुरुकुल त्यौहार

विजयदशमी

गतवर्ष यह उत्सव गुरुकुल निवासियों ने बड़े समारोह के साथ मनाया। इस से २ वर्ष पूर्व यह महोत्सव गुरुकुल में विस्मृत ही रहता था। किन्तु गतवर्ष इस अवसर पर प्रो० घनश्यामसिंह गुप्त ने जो क्रीड़ा विभाग के अध्यक्ष थे। एक नया कार्य्य क्रम प्रचलित किया–इस नये कार्य्य क्रम में क्रिकट, फुटवाल गतका फेरी आदि खेलें रक्खी हुई थीं। यह कार्य्य क्रम (programme) चार दिनों में समाप्त हुआ। क्रीड़ा भूमि में दो शामयाने खड़े किये गये। एक ब्रह्मचारियों के लिये और दूसरा अध्यापकों तथा अन्य दर्शकों के लिये। २५ आश्विन को खेल आरम्भ हुई। प्रथम दिवस क्रिकट का सान्मुख्य हुआ। २६ आश्विन को फुटबाल तथा कबड्डी के सान्मुख्य हुवे। २७ आश्विन को हाकी का सान्मुख्य हुवा। इसी दिन सायंकाल को लङ्का विजय का खेल (जो कार्य्य क्रम में मुख्य कार्य्य था) हुआ। यह (लङ्का विजय) एक नई प्रकार का खेल है जो ब्रह्मचारियों ने दसहरे के उत्सव पर खेलने के लिये

निकाला है। इस वर्ष यह खेल न खेला जा सका कारण यह था कि खिलाड़ियों के दो विरोधी दलों में नियमों तथा न्यायाधीशों की आज्ञाओं के ठीक अर्थ निर्णय करने में विवाद उठ खड़ा हुआ, आशा की जाती है कि आगामी वर्ष यह मनोरञ्जक खेल अवश्य खेली जायगी। २८ आश्विन को विजयदशमी का दिन था। प्रातः रस्सा खींचना, ऊंचा कूदना, लम्बा कूदना तथा बांस द्वारा कूदनादि खेलें होती रहीं। सायंकाल को वृहद् हवन हुआ और उच्च श्रेणियों के ब्रह्मचारियों तथा अध्यापकों की एक सभा हुई। सभा की कार्य्यवाही प्रो० बालकृष्ण M. A. की एक छोटी सी वक्तृता के साथ आरम्भ हुई। सुयोग्य वक्ता ने बताया कि यह बात अब सर्वथा शंकारहित है और बड़े प्रबल प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो चुकी है कि रामायण में महर्षि वाल्मीकि वर्णित व्यक्तियें वस्तुतः ऐतिहासिक व्यक्तियें हैं। तत्पश्चात् वक्ता ने रामायण के मुख्य २ वीरों के गुणों को वर्णन किया। प्रो० जन ने श्रोताओं को बताया कि रामायण में वर्णित महापुरुषों का आचार आदर्श मनुष्य-आचार है और उस आदर्श को जीवन में घटाने का उपदेश दिया। प्रो० बालकृष्ण जी के पश्चात् ब्र०. जयचन्द्र (त्रयोदश श्रेणी) ने छोटी परन्तु प्रभावशाली वक्तृता की। ब्रह्मचारी ने बताया कि राम के महान् पुरुष होने का कारण वह प्रभाव था जो वशिष्ठ और विश्वामित्र जैसे महर्षियों द्वारा उन पर उस समय डाला गया था जब कि राम ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण किये उन महर्षियों के आश्रमों में वेदाध्ययन करते थे। अन्त में ब्र० जयचन्द्र ने अपने सहपाठी ब्रह्मचारियों से बड़े उद्दीपक शब्दों में अपील की कि उन्हें परमात्मा का अनेक वार धन्यवाद करना चाहिये जिस ने उन को इस गुरुकुल में वेदाध्ययन का अवसर प्राप्त कराया और उन्हें इस अवसर से पूरा लाभ उठाना चाहिये। ब्र० जय-

चन्द्र के पश्चात् प्रो० रामदेव जी बोले। प्रोफेसर जी ने रामायण के बहुत से स्थलों के प्रमाणों से सिद्ध किया कि आर्य्यवर्त्त की उस समय की महानता एक प्रकार की धार्म्मिक यन्त्रणा का परिणाम थी। जो यन्त्रणा सामाजिक संस्था के प्रत्येक अंग में व्याप्त थी—अपने इस कथन की पुष्टि में कि किसी सामाजिक संस्था की प्रबलता के लिये उस के सभासदों के आत्मीय तथा समाजीय जीवनों में आत्मिक यन्त्रणा की बड़ी आवश्यकता है—प्रो० रामदेव जी ने विदेशियों के इतिहास से पर्याप्त उदाहरण प्रस्तुत किये और ब्रह्मचारियों से कहा यदि वे अपने देश को उन्नति के शिखर पर देखना चाहते हैं तो सर्व सांसारिक वस्तुओं को धर्म्म पर निछावर कर देना चाहिये। अन्तिम वक्तृता गुरुकुलाचार्य्य म० मुन्शीराम जी की थी। आचार्य जी ने कथन किया कि राम तथा रावण मृत नहीं हैं। राम रावण का युद्ध नित्य रहता है। इस समय भी राम रावण अर्थात् धर्म्माधर्म्म का युद्ध जारी ही है। राम ने रावण पर विजय पाई। कारण, क्यों कि हनूमान जैसा विश्वास्य तथा भक्त सेवक उन को मिल गया। अतः हम सब को हनूमान की न्याईं धर्म्म का सेवक बन जाना चाहिये और फिर अवश्य धर्म्म को अधर्म्म पर विजय होगी। ७½ बजे सभा विसर्जन होकर गुरुकुल के ब्रह्मचारी, अध्यापकों और उपाध्यायों तथा अन्य कर्म्मचारियों ने एक सहभोज किया जो एक ब्रह्मचारी के पिता मा० रामचन्द्र की ओर से दिया गया था।

ऋषि-उत्सव

दिवाली का दिन वह दिन है जिस दिन भगवान् दयानन्द ने इस भूलोक को छोड़ कर मोक्षधाम को अपना स्थिर निवास स्थान बनाया। गुरुकुल में यह दिन अपने धर्म्माचार्य्य के स्मरणार्थ बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। दीपावली से एक दिन पूर्व साहित्य परिषद् का एक असाधारण अधिवेशन किया

गया। जिस में उस महान् पुरुष की अनेक शक्तियों के भिन्न २ पार्श्वों पर संस्कृत तथा आर्य्यभाषा में लेख पढ़े गये। प्रो० रामदेव ने (सापेक्ष धर्म्म के विद्यार्थियों को दयानन्द का संदेसा) विषय पर एक सारगर्भित लेख पढ़ा। दीपमालिका के दिन सायंकाल के समय एक सभा की गई। जिस में ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और ब्र० ब्रह्मदत्त कृत संस्कृत गीतियें पढ़ी गईं और ब्र० देवदत्त ने अपने तथा पं० शालिगराम जी शास्त्री के आर्य्यभाषा में रचे श्लोक पढ़ कर सुनाये। अन्य कई भद्र पुरुषों ने वक्तृताएं कीं—जिन में ब्र० हरिश्चन्द्र, प्रो० सिंहा M. A. म० घनश्यामसिंह गुप्त सम्मिलित थे। गुरुकुल के आचार्य्य ने प्रधान का आसन ग्रहण किया था। सभा के विसर्जन होने के पश्चात् सब गुरुकुल निवासियों ने मिल सहभोज किया। सारा गुरुकुलाश्रम उस रात्रि को दीपकों की पङ्क्तियों से प्रकाशमान हो रहा था। चतुर्दिक् प्रकाश ही प्रकाश दृष्टिगोचर होता था। इस प्रकार दीपावली का दिन भगवान् दयानन्द की पवित्र यादगार में उस गुरुकुल में मनाया गया जो अपने समय के एक ही आदित्य ब्रह्मचारी के उच्च आदर्शों का प्रत्यक्षीकरण है।

गुरुकुलजन्मोत्सव

इस वर्ष गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की बढ़ती कार्य्य सम्पादन शक्तियों का प्रज्वलित उदाहरण अपने कुल का जन्म मनाना था। दिन के समय ब्रह्मचारियों ने भिन्न भिन्न प्रकार की खेलों से आनन्द उठाया जिन में से सब से मनोरञ्जक खेल महाविद्यालय तथा विद्यालय के ब्रह्मचारियों का क्रीकट सान्मुख्य था इस सान्मुख्य में विद्यालय के ब्रह्मचारी गण विजयी रहे। क्रीकट समाप्त कर के ब्रह्मचारीगण उस मंडप को सजाने की तय्यारियों में लग गये जहां सायं काल को व्याख्यान होने थे। व्याख्यान शाला

[illegible]

बन्दनवार और भिन्न २ प्रकार की रंगीन पताकाओं से स्थान अलंकृत था। जलसे की कार्यवाही संस्कृत गान से प्रारम्भ हुई। प्रथम वक्ता द्वादश श्रेणी का ब्रह्मचारी भारद्वाज था। उस ने गुरुकुलाचार्य श्री० मुन्शीरामजी का धन्यवाद किया और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के लाभ वर्णन किये। यह वक्तृता संस्कृत भाषा में थी श्रोताओं पर इस का गहरा प्रभाव पड़ा। वक्तृता वेदों, शास्त्रों, रामायण और भवभूती, कालिदास, भर्तृ हरीत्यादि के प्रमाणों से परिपूर्ण थी ब्र० भारद्वाज के पश्चात् ब्र० हरिश्चन्द्र उठा। और उस ने आर्य्यभाषा में अपना कथन आरम्भ किया उसने स्वामी दयानन्द का धन्यवाद किया जिस ने आर्य जाती की मृतप्रायः शक्तियों में पुनः जीवन का संचार किया। और कहा कि गुरुकुल हमें स्वशक्तियों को उन्नत करने की शिक्षा देता है। जब तक हम स्वयं अपने आत्माओं को दृढ़ नहीं बनाते हैं और आत्मिक मानसिक तथा शारीरिक शक्ति का सम्पादन नहीं करते तब तक हम बाहिर निकल कर कोई उपयोगी कार्य्य नहीं करसक्ते और ना ही अन्यों को धर्म्म कार्य्यों में नियुक्त कर सकेंगे। हम आज ९ वर्षों के पश्चात् प्रथम वार ही अपने प्रिय गुरुकुल का जन्म दिन मनाने लगे हैं। मुझे आशा है कि भविष्य में हम आर्य्य समाज के इतिहास में इस स्मरणार्थ दिन को प्रतिवर्ष ऐसे ही उत्साह के साथ मनाते रहेंगे। नहीं, हम में से प्रत्येक व्यक्ति जहां कहीं भी जिस अवस्था में होगा इस दिन को कभी न भूलेगा।

हमें अपने प्राचीन आदर्शों पर आरूढ़ रहना चाहिये। पूर्व और पश्चिम का यही बड़ा भारी अन्तर है। पश्चिम में इस समय व्यक्तिगत उन्नति, उपयोग्यता और स्वार्थ प्रायणता का राज्य है, हम आर्य्यवर्त्त

निवासियों को हमारे प्राचीन शास्त्र शिक्षा देते हैं कि परोपकार में हम अपने आपको भुलादें, अन्यों के लिये जीवित रहने की इच्छा करें, और मनुष्य मात्र की भलाई में अपने जीवन को नियुक्त करदें। जब एक वेदान्ती कहता है कि मैं ही संसार हूं। तो उसका अभिप्राय भी यही होता है कि मेरा जीवन संसार के लिये है। विद्या आर्य्यशिक्षा का मुख्य अङ्ग है। गुरुकुल शिक्षा का सार मनुष्यमात्र के साथ प्रेम तथा सेवा है।

यह कहना उचित नहीं है कि भारतवासियों में त्याग का भाव नहीं रहा और कि वे हमें धन नहीं देते। यह वही भूमि है जिस के निवासियों के शरीरों में ऋषियों का रुधिर गति कर रहा है। क्या चिन्ता है। यदि ऋषि संतान हमें धन नहीं दे सक्ती। संभव है कि वे निर्धनता के कारण हमें धन न देसक्ते हों। किन्तु हमें स्मरण रखना चाहिये। कि वे हमारे लिये धन से बढ़कर त्याग कर रहे हैं। वह त्याग उनके प्रिय पुत्रों का त्याग है, जिन अपने आत्मा के अंशों को वे शैशव अवस्था में ही अपनी छाती से जुदा कर के मनुष्य मात्र के सेवार्थ गुरुकुल रूपी माता की गोद में अर्पण कर देते हैं। धन का दान इस दान के सन्मुख क्या मान रख सक्ता है। हमारा कर्तव्य है कि हम गुरुकुल के उद्देश्यों को फलीभूत कर दिखायें। क्योंकि गुरुकुल की सफलता में आर्य्यजाति की सफलता है और आर्य्य जाति की सफलता में मनुष्य मात्र की सफलता है अतः जो गुरुकुल शिक्षाप्रणाली की उन्नत्यर्थ सहायता करते हैं, वे सर्व मनुष्य समाज की उन्नति में सहायता करते हैं।

हम में से प्रत्येक व्यक्तिको आजही गुरुकुल रूपी माता की तन, मन तथा धन से रक्षा करने की दृढ़ प्रतिज्ञा अपने २ मनों में धारण करनी

चाहिये । मुझे आशा है कि आप सब मेरे साथ सहमत हैं कि हमें गुरुकुल सहायतार्थ अभी से कटिबद्ध हो जाना चाहिये ।

ब्र०हरिश्चन्द्र के पश्चात् ब्र० ब्रह्मदत्त (दशम श्रेणी) खड़ा हुआ इस ब्रह्मचारी ने भी आर्य्य भाषा में वक्तृता आरम्भ की । ब्रह्मचारी ने कहा कि वे सज्जन जो आर्य्य जाति के साहित्य से अनभिज्ञ नहीं हैं भली प्रकार जानते हैं कि प्राचीन समय में सारे भारतवर्ष में गुरुकुल शिक्षाप्रणाली का प्रचार था । प्राचीन काल में ऋषि मुनियों की कुटियें ही वास्तविक विद्यागृह होते थे जहां छात्रवर्ग गुरुओं की सेवा करके विद्योपार्जन करते थे । इस देश में कोई समय था जब काशी तथा नलन्दा के जगत्-विख्यात विश्वविद्यालय विद्यमान थे । और राजे महाराजे इन विश्व-विद्यालयों की रक्षा तथा सहायता करना अपने धर्म्म का एक अङ्ग समझते थे । यही बात तो थी जिस से तक्षशिला के विश्वविद्यालय में छात्र गण सहस्त्रों की संख्या में विद्या प्राप्त करते थे । गुरुकुल शिक्षा प्रणाली इतनी ही पुरानी है जितनी आर्य्य भाषा (संस्कृत) पुरानी है । इस में प्रमाण यह है कि कवि मुरारि और आदि कवि वाल्मीकि मुनि इस शिक्षा प्रणाली का अपने रचे रामायणादि ग्रन्थों में वर्णन करते हैं । परन्तु समय के परिवर्त्तन के साथ लोग इस को भूल गये थे । और संसार में इस का कहीं दर्शन मात्र भी न होता था । जब कि स्वामी दयानन्द ने इस की उत्तमता दर्शाई और इसके पुनर्जीवित करने पर बलदिया । और अन्त में महात्मा मुन्शीरामजी को इस शिक्षा प्रणालीके विचार को कार्य्य में परिणत करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ । जिन्हों ने एक असम्भव कामको जिसकी आधुनिक विद्वान् हंसी उड़ाते थे, सम्भव करके दिखादिया । तत्पश्चात् ब्र० जयदेव ने एक स्वरचित कविता पढ़ी । उस के पश्चात् ब्रह्मचारी जयचन्द्र ने शोक प्रकट किया कि,गुरुकुल के संस्थापक स्वयं यहां उपस्थित नहीं हैं ।

यदि वह इस अवसर पर यहां होते तो उन को अपने परिश्रम का आज कासा फल देख कर हमारी अपेक्षा बहुत प्रसन्नता होती । ब्र० जयचन्द्र ने गुरुकुल को एक वृक्ष से उपमा दी और अपनी सुन्दर भाषा में ब्रह्मचारियों के धार्म्मिक जीवन को उसका मूल बताया, स्वामी दयानन्द की शिक्षा उस का जल, गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता उस वृक्ष का स्कंध और बसन्ती ब्रह्मचारी गण उस के पुष्प कहे । ब्रह्मचारी ने कहा कि अब गुरुकुल रूपी वृक्ष के फलों के पकने का समय निकट है हमें अपने आप को ऐसा बनाना चाहिये कि गुरुकुल के प्रथम पक्व फल सरस तथा लाभकारी हों संसार को इस समय मनुष्यों की आवश्यकता है । जहां देखो, मनुष्यों की ही मांग है, अरब के विद्वान् भी यही 'सदा' निकालते हैं "कहत उलरज्जाल" मनुष्यों का अभाव । रोमनिवासी डायोजीनीज (Diogenes) ने दीपक हाथ में लेकर रोमनफ़ारम में मनुष्य को ढूंढा, परन्तु निष्फल रहा । सारे विश्वविद्यालय मनुष्य तय्यार करने का यत्न कर रहे हैं । किन्तु मनुष्यों का अभाव वैसाही बना हुआ है । वे विद्यार्थी जिन के मन, शरीर तथा मस्तिष्क बल हीन हैं उन कठिनाइयों का मुकाबला नहीं कर सकते जो भयानक रूप धारण कर के इस समय हमारे सन्मुख उपस्थित हैं । ऐसे विद्यार्थी केवल पुस्तकें रट सकते हैं कोई बड़ा उपयोगी कार्य्य नहीं करसकते । इस समय कर्म की आव-श्यकता है क्रैम अर्थात (cram) घोटे की नहीं । संसार को स्वस्थ मन तथा शरीर वाले मनुष्यों की आवश्यकता है ऐसे मनुष्य गुरुकुलों से उत्पन्न हो सक्ते हैं । संसार गुरुकुल के ब्रह्मचारियों रूपी पुष्पों की संजीविनी सुगन्धि की प्रतीक्षा कर रहा है हमें संसार की इस आशा को पूर्ण करना चाहिये । इस के पश्चात् ब्र० देवदत्त, जयदेव, और बुद्धदेव ने वक्तृतायें कीं । पं० शालिग्राम जी की अपनी बनाई कविता

सुनाई गई। इन के पश्चात् भण्डारी शालिगराम, पं० तुलसीराम एम. ए. तथा म० गोवर्धन बी०ए० ने व्याख्यान दिये। अन्त में सभा के प्रधान म०बालकृष्ण एम० ए०की वक्तृता हुई। प्रधान महाशय ने सब वक्तृताओं के कथनों का सार बताकर आचारयुक्त पुरुष उत्पन्न करने की आवश्यकता और उन के द्वारा वैदिक शिक्षा सम्बंधी अन्वेषण कार्य्य की नींव रखने पर बलदिया। इस वक्तृता के साथ सभा की कार्य्यवाही समाप्त हुई और सब महाशयों ने अतिथियों सहित सभोज किया।

गुरुकुल अध्यापक मंडल में परिवर्त्तन।

१९६७ के आश्विन मास में प्रो० बालकृष्ण जी के त्यागपत्र देने पर म० मुन्शीराम जी ने गुरुकुल मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य्य के कार्य्यों के उत्तरदातृत्व को अपने ऊपर लिया। पटियाला के अभियोग के समाप्ति पर ला० नन्दलाल जी गुरुकुल के कार्य्यदर्शीकों में सम्मिलित हुए। गुरुकुल की शासनकर्तृसभा ने लाला जी को गुरुकुलका सहायक मुख्याधिष्ठाता नियत किया। उस समय से लालाजी प्रबन्धसम्बन्धी कार्य्य कर रहे हैं। लाला जी के गुरुकुल में आजाने से गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता का कार्य्यभार बहुत हल्का होगया है और लाला नन्दलाल जी ने बड़े परिश्रम के साथ दिन रात कार्य्य कर के गुरुकुल के भिन्न २ विभागों को क्रमबद्ध करदिया है। गतवर्ष प्रो० महेशचरण सिंह जी B. A. M. C. कृषी तथा आंगल भाषा के प्रोफेसर नियत हुए प्रो० बी० जी० साठे M. A. रसायन शास्त्र और पं० शिवशंकर जी काव्यतीर्थ वैदिक साहित्य के व्याख्याता नियत हुए। यह सब सज्जन गण बड़ी उत्तम योग्यता के पुरुष हैं और गुरुकुल के भूषण हैं। म० गोवर्धन B. A. के त्याग पत्र देने पर म०लक्ष्मणदास B. A. मो ट्रैंड और अनुभवी हैं उन के स्थान में गुरुकुल के विद्यालय के मुख्याध्यापक नियत हुए। प्रो० जी० एस गुप्त B. A. LL. B. एक वर्ष के लिए पदार्थ विद्या के प्रोफेसर बने थे। परन्तु उस वर्ष पदार्थ विद्या की श्रेणी न खुलने के कारण गुप्त महोदय रसक्रिया भवन का कार्य्य करते रहे। वर्ष की समाप्ति पर गुप्त जी अपनी प्रतिज्ञानुसार अपने घर (मध्य प्रदेश) चले गये।

करीब २ सारे ही उपरोक्त महाशयगण त्याग भाव से प्रेरित होकर कार्य्य कर रहे हैं। प्रो० साठे जी ने गुरुकुल में विद्यार्थियों के शुल्कमोचन होजाने पर अधिक त्याग भाव की आवश्यकता को स्वयं अनुभव करके अपने मासिक वेतन से २९ कम करा लिये। इसी भाव से प्रेरित होकर म० लक्ष्मणदास जी मुख्याध्यापक ने १००) मासिक के स्थान में ७०) मासिक स्वीकार किये। म० काशीराम ने ४०) के स्थान में ३०), म० बूटामल ने ३०) के स्थान में २९) और मु० मोहनलाल ने २०) के १८) मासिक स्वीकार किये।

सद्धर्म्म-प्रचारक यन्त्रालय

म० मुंशीराम जी ने कुछ वर्ष हुए अपना ८०००) के मूल्य का प्रेस गुरुकुल को दान देदिया था। इसी प्रेस पर आर्य्यप्रतिनिधि सभा ने १४०००) और लगादिये हैं इस प्रेस का मूल्य इस समय २२०००) है।

यह यन्त्रालय स्टीम (Oil) द्वारा चलता है। इस में संस्कृत, आङ्गल भाषा तथा आर्य्यभाषा की पुस्तकें छपती हैं। आशा है कि यह प्रेस गुरुकुल रचित पुस्तकों के मुद्रणार्थ बड़ा लाभ कारी सिद्ध होगा।

गुरुकुल ग्रन्थावली।

गुरुकुल ने संस्कृत तथा आर्य्यभाषा के साहित्य की उन्नत्यर्थ कुछ कार्य किया है। गुरुकुल रचित कई पुस्तकों को सर्वसाधारण ने आदर पूर्वक स्वीकार किया है। इन में से प्रो० रामदेव जी लिखित आर्य-

की बड़ी मांग हुई है। प्रथम
भाषा के भारतवर्व के प्राचीन इतिहास
संस्करण की २००० प्रतियें केवल ३ मासों में विकगई, २००० प्रतियें
अब २य संस्करण की छापी गई हैं। १/३ प्रतियें तो बिक चुकी हैं और
शेष हाथों हाथ उठ रही हैं। अन्य ग्रन्थ जो गुरुकुल में तय्यार हुवे हैं:—
भौतकी (A translation of Physics Primer) और रसायण
(A translation of Chemistry Primer) यह दोनों पुस्तकें मा०
गोवर्धन जी बी० ए० ने अनुवाद की हैं। संस्कृत प्रवेशिका जो गुरु-
कुल में छपी है। बड़ौदा राज्य के विद्यालयों तथा भारतवर्ष के अन्य
पाठशालाओं में पढ़ाई जाती है। इस पुस्तक के दो संस्करण समाप्त
हो चुके हैं।

गोशाला गुरुकुल के ब्रह्मचारीयों को प्रातः ही ताज़ा दुग्ध पान
कराने के लिये एक गोशाला है। इस समय गोशाला
में ४४ गायें हैं और १२ भैंसें हैं। म० हेतरामजी अवैतानिक प्रबन्ध-
कर्त्ता हैं। गोशाला का मकान १००००) की लागत से तय्यार
किया गया। गुरुकुल अश्वशाला में चार घोड़े भी हैं जो सवारी आदि
का कार्य देते हैं। गोशाला में पशुओं की संख्या इस समय १४७ है।

समीपवर्ति ग्रामों के लिये औषधालय। इस प्रान्त में कई मीलों तक कोई सरकारी औष-
धालय नहीं है। अतः आस पास के ग्रामों के
निर्धन रोगियों की सहायतार्थ गुरुकुल की ओर से
एक औषधालय खुला हुआ है। इस औषधालय
में बाहर के रोगियों की दैनिक मध्यता ३० से अधिक रहती है।

॥ ओ३म् ॥

कोड़पत्र सं० १

॥ गुरुकुल के नियम ॥

जेष्ठ १९६८ वि० तक संशोधित

उपोद्धात—यतः आर्य्यप्रतिनिधि सभा पञ्जाब ने अपने नव-
म्बर १८९८ ई० के अधिवेशन में अपने प्रबन्ध द्वारा गुरुकुल का
स्थापन करना निश्चित कर लिया है अतः उपर्युक्त प्रस्ताव का अनुवर्त्तन
होने के लिये निम्नलिखित नियम नियत किए जाते हैं:—

१–परिभाषा—गुरुकुल उस वैदिक शिक्षणालय का नाम है
जिस में वे लड़के* वा लड़कियां जिन का यथोचित वेदारम्भ संस्कार
हो चुका हो, शिक्षा और विद्या प्राप्त करें।

(क) इस गुरुकुल में एक विश्वविद्यालय होगा। और
उस के आधीन वे विद्यालय तथा पाठशालाएं होंगी जिन में अधिकारी
तथा मध्यम परीक्षाओं के लिये शिक्षण होगा।

पठन पाठन क्रम ॥

२–अध्ययन विषयक मोटी मोटी बातें—इस महा-
विद्यालय तथा इस के आधीन विद्यालयों के विद्यार्थियों को न्यून से न्यून
२९ वर्ष की आयु पर्य्यन्त ब्रह्मचारी रहना होगा और:—

---

* लड़कियों के लिये पृथक् गुरुकुल जब सम्भव होगा स्थापित किया
जायगा।

अः–निम्नलिखित पढ़ाई करनी पड़ेगीः—

प्रथम–वेद–(क) साङ्गोपाङ्ग वेद तथा अन्य सत्यशास्त्र ।

द्वितीय–अंगरेज़ी–(ख) अंगरेज़ी भाषा तथा अंगरेज़ी साहित्य ।

तृतीय–पदार्थविद्या वा सायंस (ग) वर्तमान कालिक पदार्थ विद्या (सायंस) तथा दर्शन शास्त्र (फ़िलासोफ़ी) अंगरेज़ी भाषा और आर्य्यभाषा द्वारा ।

(१) उपरोक्त द्वितीय, तृतीय अंशों में वर्णित विषय पढ़ाए जावेंगे, जहां तक कि वे प्रथम (क) में वर्णित विषय की पढ़ाई में विघ्नकारी हुए विना सम्भव हों ।

(२) उन विद्यार्थियों को जिन के संरक्षक द्वितीय, तृतीय अंशों में वर्णित विषयों में से एक वा दोनों ही न पढ़ाना चाहें तो उन को मजबूर न किया जावेगा ।

ईः—व्यायाम तथा नित्य कर्म्म—व्यायाम, प्राणायाम, सन्ध्योपासन, अग्निहोत्र तथा ब्रह्मचर्य्य के अन्य धर्म्मों का पालन भी उन की शिक्षा का एक आवश्यक अङ्ग होगा ।

उः–शिल्प तथा औद्योगिक शिक्षाएं—किसी २ विशेष प्रकार के शिल्प तथा वृत्ति सम्बन्धी शिक्षाएं इस शिक्षणालय में उच्च श्रेणी के विद्यार्थियों की अपनी अपनी इच्छा पर निर्भर होंगी ।

अध्यापक ।

३—मुख्य गुण विशिष्टता—केवल ऐसे वैदिक धर्म्म के विश्वासी विद्वान् इस शिक्षणालय में नियत होने के योग्य होंगे जो सदाचारी हों और वैदिक धर्म्म के उन ५१ सिद्धान्तों को मानते हों जिन को कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने माना है किन्तु अन्तरङ्ग सभा को अधिकार होगा कि किसी अध्यापक विशेष, आचार्य्य और मुख्याधिष्ठाता के अतिरिक्त, के सम्बन्ध में वैदिक धर्म्म में विश्वास के तथा ५१ सिद्धान्तों के मानने के नियम को यथा सम्भव जहां तक उचित समझें शिथिल करदें ।

प्रवेशन ।

४—प्रवेश निमित्त गुण विशिष्टता, वेदारम्भ संस्कार—इस शिक्षणालय में वे ब्रह्मचारी प्रविष्ट हो सकेंगे जिन का यथोचित वेदारम्भ संस्कार हो चुका हो ।

ऐसी विधि से किः—

आयु–(क)–ब्रह्मचारी की आयु, प्रवेश के समय छः वर्ष से न्यून व आठ वर्ष से अधिक न हो, यदि आठ वर्ष से अधिक और दश वर्ष से न्यून हो तो अन्तरङ्गसभा की विशेषाज्ञा के पश्चात् ब्रह्मचारी प्रविष्ट किया जा सकेगा । (कोई भी विद्यार्थी जिस की आयु १० वर्ष से अधिक हो किसी भी अवस्था में गुरुकुल में प्रविष्ट न होसकेगा)।

स्वास्थ्य–(ख) ब्रह्मचारी की शारीरिक तथा मानसिक अवस्था ठीक हो ।

ब्रह्मचर्यरक्षा—(ग)—ब्रह्मचारी के माता पिता वा संरक्षक यह प्रतिज्ञा करें कि न्यून से न्यून २९ वर्ष की आयु से पूर्व लड़के की सगाई वा विवाह न करेंगे।

४—(अ) कोई विद्यार्थी महाविद्यालय में प्रविष्ट न किया जायगा जब तक वह अधिकारी परीक्षा में उत्तीर्ण न हो लेगा और कम से कम २९ वर्ष तक विवाह और सगाई न करने की प्रतिज्ञा न करेगा।

शिक्षण।

५—**बिना व्यय**—उन सर्व विद्यार्थियों का भरण, पोषण तथा शिक्षण बिना किसी प्रकार का शुल्क लिये जाने के होगा जो केन्द्रस्थ गुरुकुल विद्यालय में प्रविष्ट किये जायेंगे।

६—(अ) जो दानी महाशय २०००) एक वार गुरुकुल को कोष में जमा करा देंगे वह एक ब्रह्मचारी को बिना किसी प्रकार के ख़र्च के गुरुकुल में शिक्षा दिला सकेंगे। ऐसे ब्रह्मचारियों की संख्या अन्तरङ्ग सभा नियत करेगी।

प्रत्येक व्यक्ति या सभा जो आगे के लिये ५०००) गुरुकुल को एक निक्षिप् (trust) कायम करने के उद्देश्य से दान देवे तो उस को स्थिर अधिकार होगा कि वह व्यक्ति या सभा प्रत्येक ऐसे दान के बदले एक विद्यार्थी को बिना किसी प्रकार के व्यय के गुरुकुल में शिक्षा दिला सके। ऐसा एक दान या ऐसे कई दान दानी महाशयों के नाम पर एक निक्षिप् (trust) बनायेंगे।

समान वर्ताव।

७—**सब विद्यार्थियों से समान वर्ताव**—विद्यार्थियों

की आरोग्यता तथा शारीरिक अवस्था पर विचार करके भोजन, आच्छादन, संवास आदि में सब छात्रों के साथ ठीक २ समान रीति से वर्ताव होगा॥

भोज्य पदार्थ।

८ **निरामिष भोजन**—इस शिक्षणालय के सर्व निवासियों का भोजन निरामिष होगा॥

वस्त्र तथा उपस्कार आदि।

९—**वस्त्रादि के प्रबन्ध का विचार**—इस शिक्षणालय में छात्रों के वस्त्र शय्या और निवासादि की सामग्री के प्राप्त करने में विद्यार्थियों की आरोग्यता, सुख, शारीरिक अवस्था, ब्रह्मचर्य्य सम्बन्धी आवश्यकताओं तथा मितव्ययादि का विचार मुख्य समझा जावेगा।

स्नान तथा क्षौर आदि।

१०—**स्नान वा क्षौरादि का विचार**—इस शिक्षणालय के विद्यार्थियों के स्नान क्षौर तथा वस्त्र धुलाने आदि का प्रबन्ध ब्रह्मचर्य्य की आवश्यकताओं तथा स्वास्थ्य के नियमों के अनुसार किया जायगा।

शिक्षा सम्बन्धी सामग्री।

११—**पुस्तकें पदार्थ विद्योपकरण तथा अन्य सामग्री**—इस शिक्षणालय के पठन पाठन उद्देश्य की पूर्ति तथा अध्यापकों और विद्यार्थियों के विशेष लाभ के लिये पुस्तकें, लिपि सजा, पदार्थविद्योपकरण, पुस्तकालय, आसन चौकी आदि, नक्शे, यन्त्र तथा संभार और म्यूज़ियम (नाना वस्तुओं का भण्डार जो शिक्षार्थ आव-

श्यक समझा जावे) एवं व्यायामालय तथा अन्य सम्पूर्ण आवश्यक सामग्री आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के निजव्यय से प्रस्तुत की जायगी।

चिकित्सा सम्बन्धी उपस्थिति ।

१२-**वैद्य**-इस शिक्षणालय में एक वैद्य चिकित्सा के लिये नियुक्त होगा तथा चिकित्सा में सहायता लेने का अन्य विशेष प्रबन्ध भी आवश्यकतानुसार किया जावेगा।

भोजनाच्छादनादि के साधारण नियम।

१३-ब्रह्मचारियों का निरीक्षण, भोजन, वस्त्र और स्नानादि और गुरुकुल के अन्य कार्य्य उन नियमावलीयों के अनुसार प्रबन्धित होंगे जो अन्तरंग सभा में स्वीकृत होंगी।

ऋतु कालिक तथा अन्य अनध्याय ॥

१४-**चार अनध्याय प्रति मास**-पौर्णमासी, अमावस्या, और दोनों अष्टमी के दिन अनध्याय होगा ।

दो मास की वार्षिक छुट्टी-भाद्रपद और फाल्गुन के महीनों में इस शिक्षणालय में पठन पाठन विभाग बन्द रहेगा और इन दिनों में अध्यापकों और कार्य्यदर्शकों (अधिष्ठाताओं) को एक एक मास की छुट्टी दी जा सकेगी इस रीति से कि अध्यापकों और कार्य्यदर्शकों का द्वितीयांश शिक्षणालय में बराबर उपस्थित रहे। विशेष अवस्थाओं में आचार्य्य को इस नियम में परिवर्तन का अधिकार होगा इस के अतिरिक्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों को आश्विन मास में भी अवकाश दिया जावेगा। अन्य अनध्यायों के लिए कोड़पत्र ९ देखियेगा।

ऋतुकालिक अनध्याय में विद्यार्थियों का काम ॥

१५-**छुट्टी के कार्य्य**-दो महीनों के अनध्याय में विद्यार्थियों के काम यह होंगे:—

(क) वेदपाठ, सामगान, भजन गाना ।

(ख) वक्तृता तथा शास्त्रार्थ का सीखना ।

(ग) यात्रा ।

(घ) व्यायाम तथा खेल कूद ।

(च) वाटिका का बोध क्रिया पूर्वक ॥

विद्यार्थियों के औरों से मिलने तथा बाहर आने जाने के विषय में प्रतिबंध ।

१६—**ग्रामादि में जाना वर्जित है**-इस शिक्षणालय के किसी विद्यार्थी को आज्ञा नहीं कि बिना किसी विशेष दशा के वह किसी नगर या ग्राम में जावे, जैसा कि संरक्षक वा प्रत्यासन्न बन्धु के अत्यन्त रोगी होने, मरजाने, की अवस्थाओं वा स्वयं अत्यन्त रोगी होने आदि दशाओं में जा सक्ता है ।

वायु सेवन-जब कभी कोई विद्यार्थी वायुसेवन वा किसी अन्य आवश्यक कार्य्य के लिये बाहर जावे तो कोई अध्यापक वा कार्य्यदर्शक सदा उस के साथ रहेगा।

अन्तरङ्गसभा विद्यार्थियों के भ्रमण विषयक नियम बनायेगी।

१७-**सम्बन्धियों से मिलाप**-संरक्षक वा प्रत्यासन्न बन्धु के बिना किसी अन्य को शिक्षणालय के किसी विद्यार्थी से मिलने की

आज्ञा न होगी । प्रायः संरक्षक आदि भी मास में एक वार से अधिक न मिल सकेंगे । विद्यार्थियोंके सम्बन्धियों और संरक्षकों की भेट मुख्याधिष्ठाता की अनुमति से होगी और मिलने वालों का इस शिक्षणालय द्वारा आतिथ्य सत्कार किया जावेगा परन्तु मिलाप का समय प्रायः दो दिन से अधिक न होगा ।

गुरुकुल के विद्यार्थियों को मास में एक वार अपने संरक्षकों से पत्र व्यवहार करने की आज्ञा होगी परन्तु यह पत्र व्यवहार मुख्याधिष्ठाता के द्वारा हो सकेगा मुख्याधिष्ठाता यदि चाहेगा तो इस पत्र व्यवहार को देख सकेगा ।

शिक्षा सम्बन्धि दण्ड विधान ।

१७ (अ)–**शारीरिक दण्ड**–इस शिक्षणालय के प्रबन्ध विषयक नियम अन्तरङ्ग सभा बनायेगी । शारीरिक दण्ड से यथा सम्भव हटे रहना उत्तम समझा जावेगा ।

विद्यार्थियों की परीक्षा ।

१८–विद्यार्थियों की विद्योन्नति की जांच के लिये अन्तरङ्ग सभा परीक्षा के नियम बनायेगी ।

साधारण समीक्षा (देखभाल)

१९–**आचार्य**–इस शिक्षणालय की विद्या सम्बन्धी बातों की समीक्षा एक आचार्य के आधीन रहेगी जो अन्तरङ्ग सभा द्वारा नियत किया जावेगा ।

मुख्यकार्यकर्त्ता–सब प्रबन्ध एक मुख्याधिष्ठाता के आधीन रहेगा जिसकी नियुक्ति अन्तरङ्ग सभा के आधीन होगी । शिक्षणालय

के उत्तम प्रबन्ध के विचार से मुख्य कार्यदर्शक के सहायतार्थ जितने अन्य कार्यदर्शकों तथा कर्मचारियोंकी आवश्यकता होगी नियत किये जावेंगे मुख्यकार्यदर्शक और उस के आधीन काम करने वालों के विषय में अन्तरंग सभा नियम बनावेगी, जिन में उन के कर्त्तव्य और अधिकार का विस्तार पूर्वक वर्णन होगा और भी जो २ बातें सभा को उचित प्रतीत होंगी लिखी जावेंगी । ऐसे उक्त नियमों के अनुसार (यदि कोई बनाए जावें) मुख्यकार्यदर्शक को अधिकार होगा कि शिक्षणालय का काम उत्तमता से चलाने के लिये जितने भृत्य उस के विचार में आवश्यक हों, नियत करे ।

विद्यार्थियों के संरक्षकों तथा विद्यार्थियों का प्रतिज्ञा पत्र ।

२०–गुरुकुल में प्रविष्ट होनेवाले विद्यार्थियों के माता पिता और संरक्षकों को एक ऐसा प्रतिज्ञा पत्र लिख कर देना होगा कि यदि उन का विद्यार्थी गुरुकुल के किसी ऐसे नियम का भंग करेगा जिस से अन्तरंग सभा की दृष्टि में विद्यार्थी का गुरुकुल से पृथक् करना आवश्यक हो तो अन्तरंग सभा को अधिकार होगा कि ऐसे विद्यार्थी को गुरुकुल से पृथक् करदे । एक ऐसा ही प्रतिज्ञा पत्र महाविद्यालय में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थी को भी स्वयं लिख कर देना होगा ।

नियमों के उल्लंघन करने आदि की दशा में विद्यार्थियों को शिक्षणालय से पृथक् किया जाना ।

२१–(क) **अध्ययन में असमर्थता**–यदि प्रवेश की तिथि

से एक वर्ष के अन्दर यह ज्ञात हो कि कोई विद्यार्थी शिक्षा की यथोचित उन्नति करने में असमर्थ है, तो अन्तरंग सभा की आज्ञा द्वारा वह शिक्षणालय से बाह्य कर दिया जावेगा।

(ख) **नियमोल्लङ्घन**–गुरुकुल में प्रविष्ट हुए विद्यार्थियों में से कोई विद्यार्थी स्वयं या उन के माता, पिता, वा संरक्षक, यदि प्रवेश की कोई प्रतिज्ञा वा शिक्षणालय का कोई नियम उल्लंघन करेंगे, तो वह शिक्षणालय से बाह्य कर दिया जावेगा।

विद्यार्थियों का निकाला जाना॥

[दुराचारादि के कारण]

२२–**दुराचार के कारण निकाला जाना**–यदि इस शिक्षणालय का कोई विद्यार्थी किसी ऐसे दुराचार का दोषी हो जिस के कारण उसका शिक्षणालय के विद्यार्थियों के साथ रहना अनुचित समझा जाय, तो वह शिक्षणालय से निकाल दिया जावेगा।

स्थानिक सामाजिक देख भाल।

२३–**स्थानिक सभासदों की कमेटी (सभा)**— अन्तरंग सभा को अधिकार होगा कि गुरुकुल के निकटस्थ ग्राम वा नगर के आर्य्यसमाजके आर्य्यसभासदों की एक (कमेटी) उपसभा इस शिक्षणालय के मुख्यकार्य्यकर्त्ता को उस के कामों में सहायता देने के लिये नियत करे। तथा ऐसी उपसभा को मुख्य कार्य्यकर्त्ता के कर्त्तव्यों वा अधिकारों से जो २ उचित समझे उस उस का अधिकार देवे॥

अन्तरङ्गसभा को नियमों के संशोधन आदि का अधिकार।

२४–**अन्तरङ्ग सभा के नियमों के बदलने शोधने का अधिकार**–अन्तरंग सभा को अधिकार होगा, कि आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साधारणतः वशवर्त्ती रहकर इन नियमों को अथवा इन में से किसी नियम को बदले, शोधे वा न्यूनाधिक करे।

परिभाषा सूत्र

२५ इन नियमों में शब्द "अन्तरंग सभा" से "आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब" की अन्तरंग सभा' का तात्पर्य्य है।

ओ३म् ॥

क्रोड़पत्र–सं० (२)

गुरुकुल के उपनियम ।

जो

आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब

की

अन्तरङ्ग सभा में, २३ फेब्रुएरी सन् १९०२

को स्वीकृत हुए ।

और ज्येष्ठ मास, सं० १९६८ तक शोधित किये गये ।

१–गुरुकुल सम्बन्धी नियम धारा (४) के अनुसार जो बालक प्रविष्ट होना चाहे उस के संरक्षक को निम्नलिखित प्रार्थना पत्र भेजना चाहिये :—

सेवा में श्रीयुत मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल, काङ्गड़ी (हरिद्वार) वा श्रीयुत मन्त्री—आर्य्यप्रतिनिधि सभा पञ्जाब, लाहौर ।

महाशय ! नमस्ते, मैं निम्नलिखित निवेदन पत्र आप के विचारार्थ प्रेषित करता हूं :—

तिथि……(हस्ताक्षर प्रार्थी के) जो विद्यार्थी का संरक्षक तथा हितैषी हो ।

प्रार्थना पत्र ।

(१) प्रार्थी का नाम—पता—मत ।

यदि वह विद्यार्थी का संरक्षक नहीं है तो किस अधिकार से वह प्रार्थना करता है ।

(२) प्रार्थी का विद्यार्थी से क्या सम्बन्ध है, और क्या वह विद्यार्थी का संरक्षक भी है ?

(३) विद्यार्थी का नाम तथा जन्म–दिन क्या है ?

(४) विद्यार्थी की शारीरिक अवस्था कैसी है ? वह अङ्गहीन तो नहीं है ? और उसको कोई पैतृक अथवा संक्रामक कुलरोग वा शारीरिक निर्बलता भी नहीं है ? (इस विषय का प्रमाण पितृवंश के किसी मित्र की ओर से होना चाहिये अथवा किसी प्रसिद्ध सामाजिक पुरुष की ओर से)

(५) विद्यार्थी ने कहां तक शिक्षा पाई है अथवा सर्वथा अशिक्षित है ।

(६) विद्यार्थी के कुमार होने का प्रमाण उस के संरक्षक की ओर से प्रस्तुत होना चाहिये और यह भी वर्णनीय है कि उस का वाग्दान (सगाई) नहीं हुआ ।

(७) विद्यार्थी के पिता का नाम आयु, मत और निवास स्थान आदि लिखो । और यह भी कि वह जीवित है या मृत । तथा पिता के संरक्षक न होने की अवस्था में अन्य संरक्षक का नाम आदि, विद्यार्थी की माता जीवित है या मृत, यदि पिता मृत हो तो माता का पता निवास स्थान आदि यदि माता जीवित हो ।

(८) विद्यार्थी के पिता तथा संरक्षक का आर्य्यसमाज से क्या सम्बन्ध है ? यदि दोनों अथवा एक आर्य्यसमाज के मेम्बर यानी सभासद् हों तो उस समाज का नाम लिखो ।

(९) क्या प्रार्थी अथवा विद्यार्थी का संरक्षक वा अन्य मित्र नियमानुसार प्रतिज्ञा पत्र लिखने को उद्यत है ?

(१०) यदि यह अभीष्ट हो कि विद्यार्थी केवल संस्कृत पढ़े तो स्पष्ट लिखना चाहिये ।

मुझ तथा हम (यथावस्था) हस्ताक्षर कर्त्ता को निश्चय है कि जो बातें इस प्रार्थना पत्र में वर्णित हैं मेरे तथा हमारे (यथावसर) ज्ञान में सत्य हैं ।

तिथि······प्रार्थी के हस्ताक्षर ।

२—यदि किसी बालक की आयु ८ वर्ष तक की हो तो प्रार्थना पत्र सीधा मुख्याधिष्ठाता के नाम भेजना चाहिये, जिसे उस के स्वीकार या अस्वीकार करने का अधिकार होगा इस से अधिक आयु वाले बालक के प्रविष्ट कराने का प्रार्थना पत्र आर्य्यप्रतिनिधि सभा पञ्जाब लाहौर के मन्त्री के नाम भेजना चाहिये ।

३—आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब, अपने वार्षिक साधारण अधिवेशन में जो वार्षिक बजट स्वीकृतार्थ बुलाया जायगा आगामी वर्ष के लिये गुरुकुल में प्रविष्ट होने वाले ब्रह्मचारियों की संख्या नियत कर देगी— इस संख्या को बढ़ाने का अधिकार न हीं तो अन्तरङ्ग सभा को होगा और न हीं मुख्याधिष्ठाता को, इस के पश्चात् दाखले के प्रार्थना पत्र मार्गशीर्ष के अन्त तक लिये जायेंगे—इस के पश्चात् केवल मुख्याधिष्ठाता ही प्रार्थना पत्रों के लेने का अधिकार रक्खेगा ।

४—उन महाशयों को जिन के प्रार्थना पत्र चुनाव के लिये स्वीकृत हो जायेंगे पौष या माघ मासों की उन तिथियों पर जिन्हें

गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता नियत कर देगा अपने बालकों को ले कर गुरुकुल में उपस्थित होना होगा । नियत तिथियों के एक सप्ताह के भीतर ब्रह्मचारियों का अन्तिम चुनाव हो जायेगा ।

५—प्रविष्ट होने वाले ब्रह्मचारियों का अन्तिम चुनाव एक उपसभा करेगी, जिसमें गुरुकुल का आचार्य्य, चिकित्सक, एक संस्कृत अध्यापक और एक अन्य अध्यापक (पिछले दोनों महाशय आचार्य द्वारा नियत किये जायेंगे) और आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान संमिलित होंगे । ब्रह्मचारियों के चुनाव के समय सभासदों की उभय पक्ष की सम्मतियों के सम होजाने पर आचार्य्य की सम्मति निर्णायक होगी । और उपसभा के सभासदों के बहुपक्षानुसार अन्तिम निश्चय समझा जायेगा । नियत उपस्थिति (Quorum) तीन सभासदों का होगा ।

६—गुरुकुल का वर्ष हरएक चैत्र की प्रथम तिथि (कृष्ण पक्ष) से आरम्भ हुआ करेगा ।

७—गुरुकुल नियम धारा (१२) के अनुसार जो वैद्य की आवश्यकता होगी उस का नियत करना मुख्याधिष्ठाता के आधीन होगा ।

८—गुरुकुल नियम (१६) के अनुसार यदि किसी दशा में किसी ब्रह्मचारी को गुरुकुल से बाहर जाने की आवश्यकता होगी तो उसे मुख्याधिष्ठाता की आज्ञा लेनी पड़ेगी, ऐसी आज्ञा ब्रह्मचारी के संरक्षक वा सम्बन्धी की मृत्यु वा कठिन रोगग्रस्त होने की अवस्था में पन्द्रह दिन से अधिक के लिये नहीं दी जायगी और यदि ब्रह्मचारी स्वयं रोगग्रस्त हो वा और कोई आवश्यक कार्य्य हो तो १ मास से अधिक की छुट्टी नहीं मिलेगी ।

९—मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल के सर्व प्रकार के प्रबन्ध का उत्तरदाता

समझा जायगा, गुरुकुल के सर्व कर्मचारी उस की आज्ञा के अधीन समझे जायंगे केवल शिक्षासम्बन्धी कामों में वह आचार्य्य के द्वारा अपनी आज्ञा देगा शेष प्रबन्ध के सर्व कार्य्य सीधे उस के आधीन होंगे।

१०—जब तक अन्तरंग सभा कोई आचार्य्य नियत न करे तब तक मुख्याधिष्ठाता ही आचार्य्य का काम करेगा और वेदारम्भ संस्कार के समय गुरु मंत्र का उपदेश भी ब्रह्मचारियों के लिये स्वयं या उस की आज्ञा से कोई अध्यापक देगा।

११—सर्वाध्यापकों तथा अधिष्ठाताओं का नियत करना तथा पृथक् करना अन्तरंग सभा के आधीन होगा, किन्तु मुख्याधिष्ठाता को अधिकार दिया जायगा कि किसी अध्यापक का पद रिक्त होने पर उस के स्थान में किसी योग्य पुरुष को अन्तरंग सभा की आज्ञा आने तक रख लेवे।

१२—सेवकों क्लर्कों का नियत करना मुख्याधिष्ठाता के आधीन होगा।

१३—अध्यापकों तथा अधिष्ठाताओं का पृथक् करना या उनको अन्य दण्ड देना अन्तरंग सभा के आधीन होगा।

शेष सर्व कर्मचारियों को पृथक् करने तथा अन्य दण्ड देने का अधिकार मुख्याधिष्ठाता को होगा।

परन्तु यदि कोई अध्यापक वा अधिष्ठाता कोई सख्त बदचलनी का काम करे तो मुख्याधिष्ठाता आचार्य्य की सम्मति ले कर उसे कार्यच्युत (मवत्तल) कर सकता है।

नोट—जब मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य्य दोनों के अधिकार एक ही पुरुष को मिले हुए हों तो वह अकेला ही उक्त दोनों के अधिकारों को वर्त्त सकता है।

ब्रह्मचारियों की नामावली जो संवत् १९६७ के अन्त तक गुरुकुल कांगड़ी से अधिकारी परीक्षा उत्तीर्ण हुवे हैं।

संख्या	नाम	परीक्षा उत्तीर्ण का सम्वत	विशेष सुचना
१	हरिश्चन्द्र	सं० । १९६४	
२	इन्द्र चन्द्र	,,	
३	जय चन्द्र	सं० १९६५	
४	विश्वनाथ	,, १९६६	
५	चन्द्रमणि	,, ,,	
६	भारद्वाज	,, ,,	
७	ब्रह्म दत्त	,, ,,	
८	यज्ञ दत्त	,, ,,	
९	विश्व मित्र	,, १९६७	
१०	ब्रह्मानन्द	,, ,,	
११	जय देव	,, ,,	
१२	देव दत्त.	,, ,,	

क्रोड़पत्र सं० ३

गुरुकुल विद्यालय ॥

पाठशाला विभाग की प्रचरित पाठविधि ।

प्रथम श्रेणी ।

—:०:—

	विषय	अध्ययन क्रम	सप्ताह में अंतरों की संख्या
१	वेदाङ्ग	(क) अष्टाध्यायी (१म और २य०अ०का कण्ठ करना)	९
	विशेषतः तय्यार की हुई पाठावलीयों से उदाहरण सहित	(ख) अ. १८शब्दों की तीनों लिङ्गों में विभक्तियें । ई. भ्वादि चार गणों के १० धातुओं के चार लटादि लकार।	
२	नवीन संस्कृत साहित्य	संस्कृतप्रवेशिका	
३	आर्य्यभाषा	(क) आर्य्यभाषा पाठावली प्रथम भाग	७
		(ख) सुलेख नागरी लिपि पुस्तक प्रथम भाग	६
		(ग) शीघ्र लेख और शब्दों के जोड़	

	विषय	अध्ययनक्रम	सप्ताह में अन्तरों की संख्या
		(घ) उच्चारण	
		(ङ) पढ़ना और श्लोक कंठ करना	
४	हस्त और नेत्र शिक्षण वस्तु पाठ और क्रियात्मिक बालोद्यान	(क) कागज़ मोड़ने, रङ्ग भरने मट्टी के खिलोने बनाने और कागज़ काटने पर कथात्मिक बालोद्यान सम्बन्धी पाठ ।	
		(ख) ऐसे १८ पाठ जिन से आकार, परिमाण, रूप, शब्द, रस और गंध का परिज्ञान हो ।	४
		(ग) बालोद्यान सम्बन्धी आलेख्य ।	२
५	गणित	(क) स्लेट कार्य्य	
		१. अङ्क प्रथम भाग	८
		२. सरल संकलन (जोड़)सरल व्यवकलन (बाकी)	
		३. जोड़ बाकी पर अभ्यास ।	
		(ख) जिह्वाग्र गणित पहाड़े २०×१०	

	विषय	अध्ययनक्रम	सप्ताह में अन्तरों की संख्या
६	धर्म शिक्षा	(क) संध्या और हवन मन्त्रों का कंठ करना।	
		(ख) संस्कारविधि से ईश्वर-स्तुति तथा प्रार्थना के मन्त्र कंठ करना।	२

द्वितीय श्रेणी।

	विषय	अध्ययनक्रम	सप्ताह में अन्तरों की संख्या
१	वेदाङ्ग	(क) अष्टाध्यायी ७म और ८म अध्याय कंठ करना १म और २य अ० का दोहराना	६
	गुरुकुल की तय्यार की हुई पाठावली से उदाहरित करना।	(ख) १. स्वर और व्यञ्जन संधि २. २९ शब्दों की ७ विभक्तियें तीनों लिङ्गों और वचनों में	४
		(ग) विभक्तियों का साधारण ज्ञान और अदादि गणों के सरल अर्थ।	
		(घ) ६ गणों के २४ धातु उन के अर्थ और लटादि ४ लकार	
		(च) २५ अव्यय अर्थ सहित	
		(छ) १७ उपसर्ग	
२	नवीन संस्कृत साहित्य	गुरुकुल संस्कृत पाठावली प्रथम भाग, पढ़ना,	

	विषय	अध्ययनक्रम	सप्ताह में अन्तरों की संख्या
		शीघ्र लेख, उच्चारण और विभक्तियों का ज्ञान।	९
३	आर्य्यभाषा	(क) द्वितीय पाठावली, आर्य्यभाषा पढ़ना, उच्चारण, शब्दों के जोड़, सुलेख और शीघ्र लेख।	९
४	हस्त और नेत्र शिक्षण	(क) वस्तु पाठ १८ पाठ (मुख्याध्यापक नियत करेंगे)।	२
		(ख) बालोद्यान आलेख्य—सरल रेखाओं से घिरी हुई आकृतियें पेन्सिल से बनाना।	
		(ग) क्रियात्मिक बालोद्यान १. कागज़ मोड़ना, सीना, पेन्सिल से रङ्ग भरना। २. जालि आदि बुनना ३. मट्टी के खिलोने बनाना	४

५. साधारण ज्ञान

विषय	अध्ययन क्रम	सप्ताह में अंतरो की संख्या
(क) भूगोल	उपांतवर्ती स्थानों का भूगोल और भौगोलिक परिभाषाओं पर संभाषण ।	२
(ख) इतिहास	रामायण और महाभारत से ऐसी कथाएं जो धर्म-भाव को उत्तेजित करें ।	१
६ गणित	(क) स्लेट कार्य्य सरल गुणन, सरल भाग और चक्र संकलन तथा व्यवकलन, पहाड़े २०×२०तक, सरल व्यवहारिक प्रश्न } केवल भारतीय सिक्कों में	२
	(ख) जिह्वाग्र गणित पहाड़े २०×२०	
७ धर्म शिक्षा	(क) आर्य्योद्देश्यरत्नमाला—८० लक्षण ।	२
	(ख) स्वस्ति वाचन और शान्ति पाठ के मन्त्रों का कंठस्थ करना ।	
	(ग) अघमर्षण तक संध्या मन्त्रों के अर्थ ।	

विषय	अध्ययन क्रम	सप्ताह में अंतरों की संख्या
	तृतीय श्रेणी ।	
वेदाङ्ग	(क) अष्टाध्यायी मूल (कंठस्थ करना) ५म और ६ष्ठ अध्याय ।	१२
	(ख) १म, २य, ७म, ८म का दोहराना ।	
	(ग) संस्कृत व्याकरण (मौखिक) ।	
२ नवीन संस्कृत साहित्यः—	पठन	
	(१) गुरुकुलीय संस्कृत पाठावली २य भाग ।	११
	(२) अनुवाद	
	(३) पाठ पुस्तक से श्लोक कंठ करना ।	
	(४) शीघ्र लेख	
३ आर्य्यभाषा—	(क) हिन्दी शिक्षावली ४र्थ भाग, शीघ्र लेख, पठन, उच्चारण और शब्दों के जोड़ ।	६
	(ख) सुलेख नागरी लिपि पुस्तक सं० ३ और ४	२

विषय		अध्ययन क्रम	सप्ताह में अंतरों की संख्या
४	हस्त और नेत्र शिक्षण	(क) वस्तु पाठ (१८ पाठ (मुख्याध्यापक नियत कर देंगे)	३
		(ख) क्रियात्मिक बालोद्यान— १. कागज़ काटना, सीना और पेन्सिल से रङ्ग भरने में उन्नत अभ्यास। २. मट्टी के खिलोने बनाना। ३. हिनाई कागज़ के नमूने बनाना ४. गत्ते के नमूने। ५. चटाई आदि बुनना।	२
		(ग) आलेख्य—वक्र रेखाओं से घिरी आकृतियें बनाना।	
५	साधारण ज्ञान		
	(क) भूगोल	बिजनौर प्रांत अथवा सहारनपुर प्रांत तथा संयुक्तप्रदेश का भूगोल और चित्रालेख्य	२

विषय		अध्ययन क्रम	सप्ताह में अंतरों की संख्या
	(ग) इतिहास	आर्ष ग्रन्थों से २० कथाओं का सुनाना।	१
६	गणित	(क) स्लेट कार्य्य चक्र गुणन तथा भाग और सरल व्यवहारिक प्रश्न, लघुकरण, तोल, माप, अंग्रेज़ी सिक्कों के जाल।	८
		(ख) शिह्वाग्र गणित— $1\frac{1}{4}$ पहाड़े ४० तक, $1\frac{1}{2}$,, ,, ,, $2\frac{3}{4}$,, ,, ,, जिह्वाग्र गणित के नियम।	
७	धर्म्म शिक्षा	१. संस्कारविधि-सामान्य प्रकरण का शेष भाग। २. आर्य्योद्देश्य रत्नमाला का शेष भाग। ३. मौखिक पाठ। ४. सन्ध्या के शेष मन्त्रों के अर्थ। ५. २५ श्लोक धर्म विषयों पर कं-करना।	२

	विषय	अध्ययनक्रम	सप्ताह में अन्तरों की संख्या

चतुर्थ श्रेणी ।

	विषय	अध्ययनक्रम	सप्ताह में अन्तरों की संख्या
१	वेदांग	(क) अष्टाध्यायी ३य और ४र्थ अ० कंठ करना और शेष अध्यायों की पुनरावृत्ति ।	१८
		(ख) आर्य्य भाषा में व्याकरण (मौखिक पाठ) ।	
		(ग) संधि जैसा १म, २य, ३य, श्रेणियों में ।	
		(घ) विसर्ग संधि—जैसा १म, २य, में	
		(च) १४ शब्द अधिक कर के १ म, २ य श्रेणियों की न्याई विभक्तियों का अभ्यास कराना;	
		(छ) आख्यातिक से ६६ धातु ।	

	विषय	अध्ययनक्रम	सप्ताह में अन्तरों की संख्या
		(ज) ७० अव्यय, अभ्यास पुस्तकों में लिखित वाक्यों द्वारा पढ़ाना ।	
२	नवीन संस्कृत साहित्य	गुरुकुलीय संस्कृत पाठावली ३ य, भाग,	९
	(क) पठन	शीघ्र और शुद्ध पढ़ना, उच्चारण ।	
	(ख) अनुवाद	अनुवाद और शीघ्र लेख ।	
३	आर्य्य भाषा	(क) हिन्दी (आर्य्यभाषा) शिक्षावली ५ म भाग	
		(ख) पठन, शीघ्र लेख उच्चारण शब्दों के जोड़ ।	
२		(ग) प्रस्ताव सुलेख-नागरी लिपि पुस्तक सं० ४ । और कठिन शब्दों को पुस्तक से देख कर लिखना ।	
		३ हिन्दी (आर्य्यभाषा) व्याकरण	

विषय — अध्ययनक्रम — सप्ताह में अन्तरों की संख्या

४ हस्त और नेत्र शिक्षण

(क) वस्तु पाठ–१८ पाठ मुख्याध्यापक नियत कर देंगे। — २

(ख) आलेख्य–. — २

१– सरल और वक्र रेखायुक्त आकृतियें कागज़ पर खींचना

२–वर्गीय कागज़ पर ३० आकृतियें खींचना।

५ साधारण ज्ञान–

(क) भूगोल — पञ्जाब चित्रालेख्य सहित। — २

(ख) इतिहास — १८ प्रसिद्ध पुरुषों की जीवनीयें। — १

६ गणित — १–अभ्यास पुस्तक कार्य्य।

(क) महत्तमसांप्रदर्त्तक।

(ख) लघुतमसापवर्त्य।

(ग) सभिन्न संख्याएं।

२–(क) जिह्वाग्र गणित के ४ नियम। — ९

विषय — अध्ययनक्रम — सप्ताह में अन्तरों की संख्या

[ख] ९, २९, १२९ आदि संख्याओं से मौखिक गुणन।

७ धर्म शिक्षा [क] पंचमहायज्ञविधि अर्थ सहित। — २

[ख] २५ श्लोक धार्म्मिक विषयों पर कण्ठ करना।

पंचम श्रेणी।

१ वेदाङ्ग — अष्टाध्यायी के प्रथम ४ अध्यायों के अर्थ उदाहरणों सहित। — १२

२ नवीन संस्कृत साहित्य–

[१] पंचतन्त्र (गुरुकुल संस्करण)।

[२] विदुरनीति — १२

[३] अनुवाद

३ आर्य्यभाषा–

१–हिन्दी आर्य्यभाषा संग्रह — ६

२–पठन, शीघ्र लेख, उच्चारण।

विषय	अध्ययनक्रम	सप्ताह में अन्तरों की संख्या
	३–व्यकरण, भाषा भास्कर ।	
	४–प्रस्ताव ।	
	५–सुलेख लिपि पुस्तक सं० ४	
४ हस्त और नेत्र शिक्षा–	[क] वस्तुपाठ १८ पाठ (मुख्याध्यापक नियत करेंगे) ।	
	(ख) आलेख्य-स्वतन्त्र हस्त ३० आकृतियें ।	२
५ साधारण ज्ञान		
(क) भूगोल	भारतवर्ष सचित्र ।	२
(ख) इतिहास	१८ ऐतिहासिक पाठ	१
६ गणित	(क) अभ्यास पुस्तक कार्य	९
	१. व्यवहार गणित	
	२. प्रतिशतक	
	३. सरल व्याज	
	४. ऐकैक नियम	
	(ख) जिह्वाग्र गणित	२
	१. जिह्वाग्र गणित के ४ नियम	

विषय	अध्ययन क्रम	सप्ताह में अन्तरों की संख्या
	२. १२५ और १११ में गुणन	
	३. सरल व्याज पर सुगम अभ्यास,	
	४. अनुमान से भार तथा लम्बाई आदि का बताना ।	
	५. भिन्न सम्बन्धी छोटे और सुगम प्रश्नों का सरल करना ।	२
७ धर्म्म शिक्षा	१. शान्ति प्रकरण के मन्त्रों के अर्थ	
	२. आर्य्याभिविनय पूर्वार्द्ध अर्थ सहित ।	

षष्ठ श्रेणी ।

१ वेदाङ्ग	(क) अष्टाध्यायी अन्तिम ४ अ० अर्थ सहित (समस्त)	१२
२ नवीन संस्कृत साहित्य	(क) पठन ।	
	(१) ऋजुपाठ २य भाग ।	११

	विषय	अध्ययन क्रम	सप्ताह में अंतरों की संख्या
		(२) संक्षिप्त महाभारत ।	
		(ख) शीघ्र लेख ।	
		(ग) अनुवाद ।	
		(घ) प्रस्ताव	
३	आर्य्यभाषा	१. तुलसीकृत रामायण। २. स्वामी दयानन्द का जीवनचरित्र। ३. प्रस्ताव।	२
४	हस्त और नेत्र शिक्षण	आलेख्य १. स्वतन्त्र हस्त १९ आकृतियें	
९.	साधारण ज्ञान	२. प्रतिरूपक (model drawing) आलेख्य धन, वर्ग, त्रिपार्श्व, ३. ज्यामितिक (Construction) आलेख्य ४० आकृतियें रचना।	
	(क) इतिहास	प्राचीन आर्य्यावर्त का इतिहास २य संस्करण ११९ पृष्ठ तक।	२

	विषय	अध्ययन क्रम	सप्ताह में अंतरों की संख्या
६	गणित	(क) अभ्यास पुस्तक कार्य	
	(क) अङ्कगणित	(१) अनुपात, समानुपात, दशमलव, कार्य्य सम्बन्धी प्रश्न, वर्गमूल (२) सरल व्याज (३) आयतों के तथा चार भित्तियों के क्षेत्रफल	६
	जिह्वाग्र गणित	१. तोलों का मोल रुपयों में देकर माशे रत्तीयों का मोल निकालना २. २०० तक अङ्कों का वर्ग और इन्हीं कोई से दो अङ्कों के वर्गों का अन्तर ३. उत्पादकों द्वारा अङ्कगणित की राशियों के वर्गमूल, महत्तम समापवर्त्तक, लघुतम समापवर्त्य मालूम करना	

	विषय	अध्ययन क्रम	सप्ताह में अंतरों की संख्या
		४. भिन्नों का सरल करना ५. अनुपात, समानुपात के सरल प्रश्न ६. अनुमान द्वारा क्षेत्र फलों का बताना	
७	पदार्थ-विद्या	१. विज्ञान प्रवेशिका पूर्वार्द्ध २. स्वास्थ्यविज्ञान प्रवेशिका (Sanitary Primer)	४
८	धर्म शिक्षा	१. आर्य्याभिविनय (उत्तरार्ध अर्थ सहित) २. २५ श्लोक अर्थ सहित, धार्मिक विषयों पर कंठ करना पठन	२
९	आङ्गल भाषा	१. किङ्ग प्राइमर (King Primer, २. किङ्ग रीडर King Reader. ३. लिपि पुस्तक ओफीशल सं० १, २, ३ ४. छोटे २ वाक्यों का अनुवाद	९

	विषय	अध्ययन क्रम	सप्ताह में अंतरों की संख्या

सप्तम श्रेणी ।

	विषय	अध्ययन क्रम	सप्ताह में अंतरों की संख्या
१	वेदाङ्ग	वेदाङ्ग प्रकाश ४र्थ भाग से ८ म भाग तक गण पाठ	१२
२	नवीन संस्कृत साहित्य	(१) किरातार्जुनीय ९ सर्ग (संशोधित गुरुकुल संस्करण) (२) चम्पूरामायण (३) अनुवाद (४) प्रस्ताव	१०
	हस्त और नेत्र शिक्षण	आलेख्य १. स्वतन्त्र हस्त १९ आकृतियें प्रतिरूपकालेख्य (Model Drawing) २. वर्ग, बेलानाकार, पीकाकार और सुच्याग्राकार आकृतियें ३. ज्यामेतिक आलेख्य ५० आकृतियें रचना	२

विषय	अध्ययनक्रम	सप्ताहों में अन्तरों की संख्या
४ साधारण ज्ञान		
(क) इतिहास	प्राचीन भारतवर्ष का इतिहास २ य संस्करण २१६ पृष्ठ तक	२
(ख) भूगोल (१)	योरुप चित्र सहित	
(२)	भौतिक भूगोल बलैन-फोर्डकृत चतुर्थ, पंचम ६ष्ठ अध्याय	
५. आर्य्य भाषा		
	१. तुलसीकृत रामायण	
	२. स्वामी दयानन्द का जीवनचरित	२
	३. प्रस्ताव	
६ गणित		
(क) अङ्क गणित	१. चक्रवृद्धि व्याज	८
	२. मध्यता	
	३. हानी लाभ	
	४. साझा	
	५. समय, चाल, दूरी के प्रश्न	
(ख) जिह्वाग्र गणित	१. समकोण त्रिभुज के बाहु मालूम करना	

विषय	अध्ययन क्रम	सप्ताह में अंतरों की संख्या
	२. भिन्नों सम्बन्धी व्यवहारिक प्रश्न	७
	३. विविध प्रश्न	
	४. पहले पाठों की पुनरावृत्ति	
(ग) ज्योमिति क्रियात्मिक	पूर्वार्द्ध	
७ पदार्थ विद्या		
(क) विज्ञान	विज्ञान प्रवेशिका (संपूर्ण)	
(ख) रसायन	केमिस्टरी फरणीकृत (पूर्वार्द्ध)	४
(ग)	स्वास्थ्य विज्ञान प्रवेशिका	
८ आंगल भाषा (क) पठन	किंगरीडर King-Reader Nos. II & III	
(ख) लेख		११
	१. शीघ्र लेख	
	२. लिपि पुस्तक ओफ़ीशल सं० ३, ४, ५	
(ग) संभाषण		
(घ) अनुवाद		

	विषय	अध्ययन क्रम	सप्ताह में अंतरों की संख्या
		(ङ) व्याकरण–शब्दों की मुख्य २ संज्ञाएं (Noun etc)	
९	धर्म शिक्षा	१. संध्या मन्त्रों के अर्थों का दोहराना २. सत्यार्थ प्रकाश सं० १ म, ३ य	२

——:*:——

अष्टम श्रेणी ।

१	वेदाङ्ग	(क) आख्यातिक, स्वर, धातु-पाठ, उणादि कोष (ख) महाभाष्य (प्रथम चार आह्निक)	१३
२	नवीन संस्कृत साहित्य	१. शिवराज विजय २. मुद्राराक्षस ३. अनुवाद ४. प्रस्ताव	१०
३	हस्त और नेत्र शिक्षण	आलेख्य (क) स्वतन्त्र हस्त १९ आकृतियें (ख) प्रतिरूपकालेख्य (Model drawing) घन, वर्ग, त्रिपार्श्व (Prism)	

	विषय	अध्ययन क्रम	सप्ताह में अन्तरों की संख्या
		वर्गसूच्याकार (Square pyramid) बेलनाकार, समषड्भुज त्रिपार्श्व, सूच्याग्र छल्लाकार आकृति	
		(ग) ज्यामेतिक रचना ६० रचनायें	
४	साधारणज्ञान		
	(क) इतिहास	प्राचीन भारतवर्ष का इतिहास (समस्त)	२
	(ख) भूगोल	(१) अफ्रिका, अमेरिका एशिया, योरुप का दोहराना, और चित्र भौतिक भूगोल (२) बलेन फोर्ड कृत [समस्त]	२
५	आर्य्यभाषा	(१) तुलसीकृत रामायण (२) स्वामी दयानन्द का जीवनचरित्र (३) प्रस्ताव	१
६	गणित (क) अङ्कगणित	(१) तत्काल धन, मितिकाटा (२) अनुपातिक भाग (३) ऋण समय समीकरण (Equation of payment) (४) [Alligation] मिश्रगणित	
	(ख) बीज गणित	प्रथम चार नियम	
	(ग) ज्यामिति	क्रियात्मिक [उत्तरार्द्ध]	७
७	पदार्थ विद्या		

विषय — अध्ययनक्रम — सप्ताह में अन्तरों की संख्या

(क) विज्ञान — फ़िज़िक्स राईट कृत (पूर्वार्ध) — ४

(ख) रसायन — केमिस्ट्री फ़रनीकृत (उत्तार्द्ध)

(ग) स्वास्थ्यशास्त्र स्वास्थ्य विज्ञान प्रवेशिका

८ आंगल भाषा (क) पठन
किंग रीडर्ज़ (King Readers)
सं० ३—४
(ख) व्याकरण-आंगल भाषा
व्याकरण प्रवेशिका — ११
(ग) सुलेख लिपि पुस्तक
सं० ५, ६, ७
(घ) अनुवाद प्रत्यानुवाद
(ङ) सम्भाषण — ११
(च) शीघ्र लेख

९ धर्म शिक्षा (१) सत्यार्थप्रकाश
५—७ सं० — २
(२) मनुस्मृति १—६ अ०

———

नवम श्रेणी ।

१ वेदाङ्ग (क) महाभाष्य नवाह्निक — ६

२ उपाङ्ग (क) न्याय वैशेषिक दर्शन — ६
(ख) ईश, केन, कठ, उपनिषदें

विषय — अध्ययनक्रम — सप्ताह में अन्तरों की संख्या

३ नवीन संस्कृत (क) शिशुपाल वध,
साहित्य (ख) हर्ष चरित,
(ग) अनुवाद और प्रस्ताव — ९

४ साधारण ज्ञान
(क) इतिहास (१) बौद्ध समय (*R. C. Dutt.*)
(२) इङ्गलेंड के इतिहास की मुख्य २
घटनाओं पर व्याख्यान — ५
(ख) अर्थ शास्त्र पोलिटिकल इकानोमी पर व्याख्यान

५ गणित
(क) अङ्क गणित स्टाक और बदला — ८
[ख] बीज गणित सरल समीकरणों तक
(ग) ज्यामिति सिद्धयात्मिक ज्यामिति (पूर्वार्द्ध)
(*G.K. Chatterjee.*)

६ पदार्थ विद्या
(क) विज्ञान (१) चुम्बक, विद्युत (राइटकृत)
(२) कला शास्त्र रुचिराम साहनी
एम. ए. कृत
(ख) रसायन हिन्दी कैमस्ट्री (*Prof. Mahesh Charun Sinha*) मौखिक और क्रियात्मिक — ४

७ आङ्गल भाषा

विषय — अध्ययनक्रम — सप्ताह में अन्तरों की संख्या

पठन (क) किङ्ग रीडर्ज़ (सं० *IV-V*)
व्याकरण (ख) दी न्यू मेनुवल इंगलिश ग्रामर
(*The new manual of Eng. Grammar*)
वाक्य रचना (ग) (Composition) मौखिक अभ्यास
(*Kings, English Composition*)
(घ) प्रस्ताव (Essay)
(ङ) अनुवाद प्रत्यानुवाद
(च) सुलेख लिपि पुस्तक औफ़ीशल सं० ७.
(छ) संभाषण

८ धर्म शिक्षा (१) सत्यार्थ प्रकाश ८म, ९म, १०सं
(२) मनुस्मृति—७म से १२ अ० तक — २
(३) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका
(वेदोक्त धर्म तक)

९ आर्यभाषा — मूल व्याख्या (*text*) और प्रस्ताव

दशम श्रेणी

१ वेदांग (क) महाभाष्य (अङ्गाधिकार) — ६
(ख) अष्टाध्यायी—दोहराना, प्रसिद्ध पादों का महाभाष्य

विषय — अध्ययनक्रम — सप्ताह में अन्तरों की संख्या

२ उपांग (क) साङ्ख्य और योगदर्शन पुनरावृत्ति
(ख) प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य उपनिषदें — ६

३ नवीन संस्कृत साहित्य
(क) पठन — भारत चम्पू — ९
(ख) — नैषध चरित
(ग) — अनुवाद और प्रस्ताव — ९

४ साधारण ज्ञान
(क) इतिहास — अंग्रेज़ी इतिहास पर व्याख्यान
(ख) — भारत—इतिहास, मुसल्मानों तथा अंग्रेज़ों का समय (हन्टर कृत) (*School Edition.*)
(ग) अर्थ—शास्त्र व्याख्यान

५ गणित — ८
(क) अङ्क गणित पुनरावृत्ति
(ख) बीजगणित — अनुपात, समानुपात, घात (*indices*) करणी (*Surds*)
(ग) जयामिति — सिद्धयात्मिक उत्तरार्द्ध (E. K. chatterjee)

६ पदार्थ विज्ञान

सूचना—इङ्गलैंड के इतिहास और अर्थ शास्त्र में कोई नियम बद्ध परीक्षा न होगी।

विषय	अध्ययनक्रम	सप्ताह में अन्तरों की संख्या
(क) विज्ञान	(क) पुनरावृत्ति (राइटकृत)	
	(ख) कला शास्त्र (रुचिराम कृत)	६
(ख) रसायन	हिन्दी कैमिस्ट्री (उप०महेशचरन सिंह) मौखिक और क्रियात्मिक	
७ आंगल भाषा		
(क) पठन	(१) नीयुओरीट रीडर (*"New Orinet Reader"*) (२) माई ड्यूटीज़(*My Duteis*) मेरा कर्त्तव्य (*John Murdoch*)	
(ख) व्याकरण	मेनुअल ग्राईमर (*Manual Grammar*)	१०
(ग)	अनुवाद प्रत्यनुवाद और प्रस्ताव	२
८ धर्मशिक्षा	(क) सत्यार्थ प्रकाश समाप्त (ख)ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका सम्पूर्ण	
९ आर्यभाषा	मूल व्याख्या और प्रस्ताव	२

———

क्रोड़पत्र सं० ४

अधिकारी परीक्षा के नियम।

जो

आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब

की

अन्तरङ्ग सभा ने अपनी २ फर्वरी १९०८ की बैठक में स्वीकार किये।

परीक्षा तिथि।

१. गुरुकुल के महाविद्यालय विभाग में विद्यार्थियों के प्रवेशार्थ प्रति वर्ष (विक्रम संवत्) माघ मास के तीसरेसप्ताह में अथवा किसी अन्य तिथि पर जिसको महाविद्यालय सभा नियत करेगी गुरुकुल भूमि में एक अधिकारी परीक्षा हुआ करेगी।

परीक्षा प्रवेशन।

२. उपरोक्त परीक्षा में केवल वे ही ब्रह्मचारी गण सम्मिलित हो सकेंगे जिन्हों ने गुरुकुल कांगड़ी या किसी ऐसे ही अन्य विद्यालय में जिस को आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने स्वीकार कर लिया हो कम से कम ६ वर्षों तक शास्त्रोक्त ब्रह्मचर्य्य के नियमों का पालन करते हुए और तप का जीवन व्यतीत करते हुए शिक्षा प्राप्त की हो—ऐसे परीक्षाभिलाषियों को उपरोक्त बातों के समर्थनार्थ अपने २ विद्यालय के आचार्य्यका प्रमाण—पत्र उपस्थित करना पड़ेगा।

३. कोई ब्रह्मचारी परीक्षा में न बैठ सकेगा—जब तक कि उस का नाम उस के विद्यालय के मुख्याध्यापक द्वारा परीक्षा की तिथि से २ मास पूर्व आचार्य्य के पास न पहुँच जायेगा ।

आयु अवधि ।

४. कोई ऐसा ब्रह्मचारी परीक्षा न दे सकेगा जिस की आयु पूरे १५ वर्षों की न होगई हो ।

परीक्षा ।

५. प्रति वर्ष परीक्षा के प्रश्न पत्र, गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) का अध्यापक मंडल गुरुकुल (हरिद्वार) के आचार्य्य के निरीक्षण तथा प्रबन्ध में बनायेगा । महाविद्यालय सभा इन प्रश्न पत्रों की पड़ताल करने और परीक्षकों को परीक्षा—कार्य्य सम्बन्धी सामान्य शिक्षाएं देने का अधिकार रक्खेगी ।

मौखिक परीक्षा भी गुरुकुल का अध्यापक मण्डल ही लेगा ।

परीक्षा के विषय ।

६. महाविद्यालय विभाग की प्रथम श्रेणी में नियम पूर्वक अध्ययन करने के लिये विद्यार्थी की आयु पूरे १५ वर्ष की होनी चाहिये और वह निम्न विषयों में परीक्षोत्तीर्ण हो—

१ भाषाएं
  (क) संस्कृत
  (ख) आर्य्य भाषा
२ वेदाङ्ग
  (क) व्याकरण

  (ख) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका
३ उपाङ्ग
  (क) न्याय, वैशेषिक सांख्य और योगदर्शन
  (ख) उपनिषद और सत्यार्थ प्रकाश
४ भारतवर्ष का इतिहास
५ गणित
६ पदार्थ विद्या
७ पर्याय विषय (alternate subject) आङ्गल भाषा या आलेख्य ।

७. प्रत्येक विषय के निम्न पूर्णाङ्क होंगे:—

१	संस्कृत साहित्य	२००
२	वेदाङ्ग	१२५
३	उपाङ्ग	१२५
४	आर्य्यभाषा	१००
५	पदार्थविद्या	१५०
६	इतिहास	१००
	पर्याय	
७	आङ्गलभाषा	१५०
८	आलेख्य	१५०

८. परीक्षा लिखित पत्रों द्वारा लीजायेगी—

संस्कृत तथा आङ्गल भाषा में मौखिक और पदार्थ विद्या में क्रियात्मिक परीक्षाएं भी होंगी संस्कृत और पदार्थविद्या में मौखिक और क्रियात्मिक परीक्षाओं के पृथक पृथक ५० पूर्णांक होंगे । और आङ्गल भाषा में २५—परीक्षा का माध्यम सर्व विषयों में आर्य्यभाषा रहेगी—

९· प्रत्येक विषय की परीक्षा का आकार मात्र,(outlines)

(१) संस्कृत साहित्य..पूर्णांक

१ पठन, संभाषण और कंठस्थ श्लोकों में मौखिक परीक्षा....५०

२ २ लिखित पत्र, प्रत्येक ३ घंटों का

(क) गद्य, पद्य से उद्धृत स्थलों की व्याख्या, वाक्यविश्लेषण, और उन्हीं स्थलों संबंधी व्याकरण के अन्य प्रश्न और अलङ्कार। उपरोक्त उद्धरण पाठविधि तथा अन्य पुस्तकों (अदृष्ट) से होंगे....................७५

[ख] वाक्य–रचना, अनुवाद, प्रत्यनुवाद....................७५

योग २००

(२) वेदाङ्गः—

३ लिखित पत्र, प्रत्येक २ घंटों का,

(क) अष्टाध्यायी ५०

(ख) महाभाष्य ५०

(ग) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका २५

योग १२५

३ उपाङ्ग

२ लिखित पत्र, प्रत्येक ३ घंटों का

(क) न्याय, वैशेषिक, सांख्य और योग दर्शन ७५

(ख) सत्यार्थ-प्रकाश और उपनिषदें..........................५०

योग १२५

(४) भारतवर्ष का इतिहास..............................१००

(५) गणितः—

२ लिखित पत्र—प्रत्येक ३ घंटों का

(क) बीज तथा अङ्कगणित..................................७५

(ख) ज्यामिति—क्रियात्मक और सिद्धयात्मक..................७५

योग १५०

(६) पदार्थ विद्याः—

क्रियात्मक और मौखिक..................................५०....

२ लिखित पत्र, प्रत्येक ३ घंटों का—

(क) भौतकी.. ५०

(ख) रसायन ५०

योग १५०

(७) आङ्गलभाषाः–

पठन, संभाषण और कंठस्थ काव्य में मौखिकपरीक्षा....२५

२ लिखित पत्र, प्रत्येक ३ घंटों का

(क) प्रथम भाग—व्याकरण और वाक्यविश्लेषण......१५

द्वितीय भाग पाठविधि से उद्धृत स्थलों की आङ्गलभाषा–व्याख्या और छोटे २ वाग्व्यवहारिक मध्यम कठिनाई के वाक्यों का आर्यभाषा में अनुवाद.. ४५

(ख)प्रथम भाग—वाक्य–रचना (Composition)..........३५

द्वितीय भाग—आर्य्यभाषा के मध्यम काठिन्य के वाक्यों का आङ्गलभाषा में अनुवाद..३०

योग १५०

[८] आर्य्यभाषाः—

२ लिखित पत्र—(क) ३ घंटों का और [ख] २ घंटों का

(क) वाक्य रचना (Composition) और पत्र व्यवहार ····६०

(ख) गद्य पद्य में मध्यम काठिन्य वाले स्थलों की व्याख्या ४०

योग १००

(९) आलेख्यः—

२ लिखित पत्र प्रत्येक ३ घण्टों का

(क) स्वतन्त्र हस्त आलेख्य ७५

(ख) ज्यामितिक ७५

योग १५०

(१०) परीक्षा उतीर्णार्थ संस्कृत में न्यून से न्यून उत्तारक अङ्कों की संख्या ४० प्रति शतक होगी और अन्य सर्व विषयों में ३३%

(११) जो परीक्षाभिलाषी इस परीक्षा में एक या दो विषयों में अनुत्तीर्ण रहेंगे वे पुनः उन्हीं विषयों में ३ मासों के पश्चात् परीक्षा दे सकेंगे। यदि वे दूसरी वार की परीक्षा में किसी विषय में अनुत्तीर्ण रह जायेंगे तो पुनः ऐसे विद्यार्थियों को सर्व विषयों की परीक्षा देनी होगी।

(१२) महाविद्यालय सभा को अधिकार होगा कि किसी विशेष विद्यार्थी के सम्बन्ध में इन नियमों में से एक नियम अथवा अधिक नियमों को ढीला कर दे।

(१३) महाविद्यालय सभा के सभासद, आचार्य्य और महाविद्यालय

के सर्व महोपाध्याय महाशय होंगे। विद्यालय सम्बन्धी कार्य्यों में विद्यालय का मुख्याध्यापक भी सभासद रूप से (additional Member) सभा में संमिलित होगा। आचार्य्य को निर्णायक (casting vote) सम्मति का अधिकार होगा। और नियत उपस्थित (Quorum) तीन सभासदों की होगी। आचार्य्य, सभासदों में से किसी सभासद को मन्त्री के स्थान में नियुक्त करेगा।

क्रोड़ पत्र ५

स्नातक परीक्षा की पाठविधि।

I वैदिक साहित्य १म वर्ष

१ पूर्व मीमांसा—प्रथम ९ अ०
२ उत्तर मीमांसा (वेदान्त) व्यास—प्रथम २ अ०
३ निघंटु और निरुक्त—नैगम कांड
४ ऐतरेय, तैत्तिरीय और छः उपनिषदें

२य वर्ष

१ पूर्व मीमांसा—शेष ७ अ०
२ उत्तर ,, ,, २ अ०
३ निरुक्त दैवत काण्ड और परिशिष्ट.
४ बृहदारण्यक उप०

३य वर्ष

१ ऋग्वेद का ऐतरेय ब्राह्मण
२ ऋग्वेद के प्रथम २ मण्डल
३ शाकल्य श्रौत सूत्र

४र्थ वर्ष

१ यजुर्वेद के शतपथ ब्रा० के प्रथम ३ कांड
२ आपस्तम्ब सूत्र
३ यजुर्वेद (संपूर्ण)

II आधुनिक संस्कृत साहित्य

१म वर्ष

कविकालिदास के ग्रन्थों का गुणदोषविवेचन—कालिदास के ग्रन्थों से संग्रह।

२य वर्ष

गुण दोष विवेचन (Critical Study).

१ महावीर चरित } वाण भट्ट
२ उत्तर राम चरित
३ प्राकृत मंजरी

३य वर्ष

१ वाल्मीकि रामायण—बाल और सुन्दरकाण्ड
२ संक्षिप्त महाभारत (Mr. Vaidya M. A.)
३ वाणभट्ट के कादम्बरी से संग्रह

४र्थ वर्ष

१ काव्य प्रकाश (गुरुकुल संस्करण)
२ साहित्य दर्पण ,, ,,
३ आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास (Mac Donnel) इस के स्थान में आर्य्यभाषा में गुरुकुल द्वारा विशेष तौर पर तय्यार की हुई एक पुस्तक रक्खी जावेगी।

III आङ्गलभाषा और उस का साहित्य

१म वर्ष

१ पोयम्ज़ ओफ एक्सपीरियन्स (Ella wheeler wilcox)

२ पासिंग ओफ आर्थर (Tennyson)
३ मलीसंज़ अकबर (Rulers of India series)

२य वर्ष

१ पेयम्ज़ ओफ इन्सपीरेशन (E. W. wilcox)
२ एसेज़ (Arthur Helps)
३ क्लाईव (Macaulay)

३य वर्ष

१ इलीजी.. Grey
२ इनक आर्डन................................., Tennyson
३ मैकबेथ.................................... Shakespeare
४ फरन्डज़ इन कौन्सिल.......................... Helps

४ र्थ वर्ष

१ दी प्लेज़र्ज़ ओफ़ होप (Campbel)
२ दी परडाइज़ लोष्ट (Milton Book I & II)
३ चाइल्ड हेरल्डज़ पिलगृमेज (Byron cantos i & ii)
४ दी राइवल्ज़ (Sheridan)
५ केनिल वर्थ (Scott)
६ फ्री ओपीनीयन फ्रीलीएक्सप्रेस्ड (Marie Corriellie)

पर्याय विषय (ALTERNATIVE)

IV Philosophy and Ethics

१ वर्ष

१ जवनज़ लोजिक एण्ड एक्सर्साइजिज़ (P. K. Ray)

२ फौलर्ज़ इन्डक्टिव लोजिक अभ्यास सहित (Stock and Welton)
३ गोड एण्ड दी सोल (Armstrong)
४ प्राइमर ओफ साईकोलोजी (Ladd)

सुचना—वार्षिक अवकाश के समय Ladd's Elements of Physiological Psychology पर किसी योग्य चिकित्सक के व्याख्यान कराये जायेंगे—इस विषय में परीक्षा न होगी।

२ य वर्ष

१ साईकोलोजी (James)
२ इथिक्स (Muirhead)
३ हिस्ट्री ओफ फिलोसोफी (Weber)

३ य वर्ष

१ थइज्म् (Flint)
२ रीपब्लिक (Plato)
३ इन्ट्रोडक्शन टो हर्बर्ट सपेन्सर फिलोसोफी
४ सिद्धान्त मुक्तावली (विश्वनाथ पञ्चानन)

४ र्थ वर्ष

१ मेटाफिज़िक्स (Deussens')
२ वैराईटीज़ ओफ़ रिलीजस एक्सपीरीयन्स (James)
३ युटीलीट्रियनिज्म् (Mill)
४ कुसुमाञ्जलि व्याख्या (हरिदास भट्टाचार्य्य)

V इतिहास और अर्थ शास्त्र

१म वर्ष

१ भारतवर्षः— महाभारत से पूर्व और महाभारत का समय तथा तान्त्रिक समय ।

२ ग्रीक (युनान)— Greece by G. A. Fyffe M. A.

३ रोमः— Rome by M. Creigton M. A.

४ अर्थशास्त्रः— खर्च, उत्पत्ति और वटन
{ अर्थशास्त्र के नियम (Marshall)
„ „ „ (Nicholson)

२य वर्ष

१ भारतवर्षः— बौद्ध और पौराणिक समय

२ इंगलेंडः— आरम्भ से जार्जीयन समय तक (Gardiner's Student's History of England)

३ अर्थशास्त्रः— बदला, अर्थशास्त्रिक उन्नति
अर्थशास्त्र क्रियात्मक
अर्थशास्त्र के नियम (Marshall)
„ „ „ (Nicholson)

३य वर्ष

१ भारतवर्षः— मुसलमानों, राजपूतों, सिक्खों और मरहट्टों का समय

२ इंगलैंड— जार्जीयन समय से वर्तमान समय तक
{ Gardiner's Student's History of England
Oman's Ninteenth century in England }

३ अर्थशास्त्रः— स्कोप एण्ड मैथड (Keynes)

४ नीतिशास्त्रः— कोन्स्टिंटयूशन्ज़ (Alston's)

४र्थ वर्ष

१. भारत वर्ष………… (क) अङ्गरेज़ों का समय
(ख) इण्डीयन पोलीटी (Chesney)
(ग) दी एकानोमिकहिस्ट्रीओक ब्रिटिश इण्डीया (R. C. Datta)

२. नीतिशास्त्र ………… (क) सीलेज़ एकसपेन्शन (latter half)
(ख) रीप्रेजेण्टेटिव गवर्नमेन्ट (Mill)
(ग) स्टेट……(Blunt Schillier)
(घ) इकोनोमिक इन्टरप्रेटेशन ओफ हिष्ट्री (Seligman's)

VI रसायन शास्त्र

१म वर्ष

इस विषय में मौखिक परीक्षा के समय विद्यार्थियों को अपनी क्रियात्मक कार्य्यवाही की पुस्तकें जो उन्होंनें रसक्रियाभवन में परीक्षणों के करते समय लिखी हों और जिन पर नियमपूर्वक अध्यापक महाशय के हस्ताक्षर हों, प्रस्तुत करनी होंगी ।

(एक लिखित पत्र और एक क्रियात्मक तथा मौखिक परीक्षा)

साधारण मेल, घोल, और रासायनिक मेलों का पारस्पारिक भेद— प्रकृति की नित्यता, भार और परिमाण संबंधी रासायनिक मेल के नियम— तुल्य शाक्तिक पदार्थ, रजत, ताम्र, यशद अथवा मग्नादि धातुओं के जमाव

और तोलादि के परीक्षणों से तुल्य शाक्तिक पदार्थों की जाचं पड़ताल। द्रवों और ठोसों से गैसों के प्राकृतिक गुणों की भिन्नता—बाईल का नियम,—चार्लसका नियम, तापद्वारा गैसों के फैलाव का नियम—गैसों के प्रसरण का नियम, रासायनिक परिवर्त्तन और उन के प्रादुर्भूत करने वाली अवस्थाएं। रासायनिक संघट्टन और विघट्टन, और द्विविघट्टन, ओषजनीकरण, धातुओं की संस्कार-क्रिया—रासायनिक अणु और भरमाणु, आणविक और परमाणविक सिद्धान्त, आवोंगाडारिक कल्पनात्मक सिद्धान्त, परमाणविक भार और आपेक्षिक ताप का पारस्परिक संबन्ध, आणविक और परमाणविक भार ज्ञात करने की विधियें। घोल का सिद्धान्त, गतिकारक आणाविक कल्पनात्मक सिद्धान्त, घोल में विघटन घटन, विद्युतात्मक रसायन।

निम्न सरल पदार्थों और समासों के प्रसिद्ध २ भौतिक और रासायनिक स्वभाव, उनके तय्यार करने की विधियें और उनके गुण, और समासों के समासत्व के प्रमाण उद्रजन, ओषजन, जल, हरिणगैस, ब्रम (Bromine) नैल, प्लुव (Fluorine) अन्तिम लिखित चारों का उद्रजन के साथ मेल, ओज़ोन (Ozone) और उद्रजनके परि अम्लजिद नैलादि उपधातुओं के अम्लजिद तथा ओषजनजम्लाजिद, गंधक और उद्रजन गांधिद। गंधक के ओषजन अम्ल और अम्लाजिद और उनके लवण, नत्रजन और उद्रजन के साथ उसके समास, नत्रजन के अम्लाजिद और अम्लजन अम्ल। कार्वन और कार्वनाम्लजिद,।

क्रियात्मक कार्य-गुणात्मक विश्लेशक कार्य में प्रारम्भिक हस्त संचालन, साधारण रासायनिक यंत्रों का जोड़ना, और सरल परीक्षण करने का क्रियात्मक ज्ञान, अलगजेन्टू सिमिथ (Alxander Smith)

की पुस्तक कम्पैनीयन गाईड (Companian Guide) की कार्य्य प्रणाली अनुसार रसायानिक सिद्धान्तों को साक्षात करने के परिक्षण। विश्लेषण कार्यार्थ ९ श्रेणियों में विभक्त हुवे धातुओं में से किसी धातु के कार्बनित, गन्धित, हरिद ब्रोमिद, नैलिद, अथवा गन्धित की परीक्षा—

पाठ पुस्तकें—१. निरिन्द्रियरसायणशास्त्र (inorganic chemistry) पर अलगजेन्डू महाशय कृत भूमिका।

२. रासायनिक विश्लेपण ("Newth's manual)

३. सामान्य रसायन की रसक्रियाभवन संवन्धी मोटी २ बातें (Alexander smith)

द्वितीय वर्ष।

दो प्रश्न पत्र और दो क्रियात्मक परीक्षाएं.

स्फटिक सम्बन्धी ज्ञान। स्फटिकों के बनने के प्रकार। समाकृतित्व। द्विरूपत्व। रश्मीय वर्ण विश्लेपण के नियम। अम्ल, क्षार, और लवण। अम्ल तथा क्षारों के सम्पृक्तता की शक्ति, आयन का समीकरण, आयनित पदार्थों का रासायनिक वर्त्ताव, ज्वाला की रचना तथा ज्वलन का लक्षण, हवा, ताप-रसायन, परिमाण की दृष्टि से आयनित समीकरण का विचार, विद्युत प्रवाह रसायन।

निम्नलिखित सरल पदार्थ तथा उन के समासों के मुख्य मुख्य भौतिक और रासायनिक लक्षण, बनाने की विधि और गुणः—हेलियम समूह, स्फुरक, शैल, टंक, क्षार-समूह के धातुः—पुटैशियम और अमोनियम; सोडियम और ग्राव, खार के धातुः, ताम्र, रजत, सुवर्ण, मग्न, यशद, कार्डमियम, पारद, स्फट और तज्जातिय समूह, बङ्ग, सीसक, ताल, अंजन

विस्मथ, क्रोम समूह, रेडियम, माङ्गल, लोह, कोवल्ट, निकल, प्लाटीनम के धातु, ।

क्रियात्मक कार्य्यः-रासायनिक तुला और द्रवमापक नलिका के विषयक ज्ञान और उन का प्रयोग में लाना, पदार्थों के पित्रलाव तथा खौलाव विन्दुओं का निश्चय, अभिषव और गाढ़ी करणः

विश्लेषण के लिये ऐसा मिश्रण दिया जावेगा कि जिसमें दो अम्ल और दो क्षार से अधिक मूलक न होंगे प्रथम वर्ष के लिये नियत किये हुए अम्ल तथा निम्न लिखित अम्ल दिये जा सकते हैं:—स्फुरिक, अम्ल, क्रोमिक, टङ्किक अम्ल, गन्धाम्ल (उ् ग अ्) नत्राम्ल (उनअ्) ओंकझालिक, टारटिकअम्ल, खदाम्ल, फ़ेरोसायनिक, फेरीसाथनिकक्लोरिक; परक्लोरिक, पिपीलिकाम्ल (फार्मिकैसिड); सिरिकाम्ल;

स्फट्, लोह, मग्न, ताम्र, रजत, गन्धकाम्ल, कर्वन का द्विअम्लजिद के परिमाण जानने की विधियें.

पुस्तकें:—अलगज़ेन्डर स्मिथ, न्यूथ, विलियम की स्फटिक सम्बन्धि पुस्तक, ओस्टवालड की निरिन्द्रिय रसायन ओस्ट वाल्ड की रासायनिक विश्लेषण के आधार.

तृतीय वर्ष

निरिन्द्रिय रसायनः—रासायनिक दृष्टि से रेडियमोजस्विता; सरल पदार्थों का आन्तरिक विभागीकरण, और उनका तुलनात्मक विवेचन।

सेन्द्रिय रसायनः—सेन्द्रिय समासों के साधारण तत्व; रेम्सन की प्रारम्भिक पुस्तक; भौतिक रसायन के मुख्य २ नियम

क्रियात्मक ज्ञानः—सीसक, यशद, खटिक, पोटाशियम, हरिद, नैल, स्फुरिकाम्ल, इनके तौल परिमाण विश्लेषण । परिपूर्णता, ओषजनीकरण और अपचायन इनके आधार पर आयतन सम्बन्धि विश्लेषण।

गुणात्मक विश्लेषणः—दूसरे वर्षके नियत किये अम्ल तथा अन्य निम्न लिखित पुस्तकें:-वेन्जोइक; सक्सीनिक; यूरिक; मद्यसार; नशास्ता; अङ्गूर शर्करा। अलेक्जैण्डर स्मिथ; ओस्ट वाल्ड; रोस्को और शौरलैमर की प्रथम तथा द्वितीय पुस्तक; न्यूथ; मेलोपारकिन; क्लौज और कौलमन; ट्रेडवैल तथा हौल: वाकर; सौडी ।

चतुर्थ वर्ष

तीनि प्रश्न पत्र, और तीन क्रियात्मक परीक्षाएं;

निरिन्द्रिय रसायनः—अधिक सविस्तर प्रकार से विवेचना, तथा कुछ मुख्य २ अप्रसिद्ध धातुएं;

सेन्द्रियः—अधिक विस्तार पूर्वक विचार;

भौतिक रसायनः—मुख्य २ नियमों का विशेष परिशीलन;

ऐतिहासिकः—मेयर का रासायनिक इतिहास;

क्रियात्मकः—भौतिक रसायन के कुछ सरल परीक्षण; सेन्द्रिय पदार्थान्तर्गत कर्वन, उद्रजन, ओषजन, नत्रजन का तौलसम्बन्धि विश्लेषण; जल विश्लेषण; जमाव विन्दु, खौलाव विन्दु, और वाष्प घनता द्वारा मात्रिक तोल का निश्चय। लग भग १० सेन्द्रियक पदार्थों का तय्यार करना कुछ मुख्य २ खनिज पदार्थों के विश्लेषण;

पुस्तकें:—तृतीय वर्ष की पुस्तकें तथा निम्न लिखित।

(१) फिण्डले की क्रियात्मक भौतिक रसायन
(२) हैम्पल की गैस विश्लेषण।
(३) मैण्डलिफ।
(४) जोन्स की भौतिक रसायन।

क्रोड़पत्र सं० ६

स्नातक परीक्षा के नियम।

(१) अधिकारी परीक्षा उत्तीर्ण करलेने के चार वर्ष बाद ब्रह्मचारी को स्नातक बनाया जावेगा, यदि वह न्यून से न्यून प्रत्येक विषय के ३/४ व्याख्यानों में उपस्थित रहा हो; सब सत्रपरीक्षाओं में उत्तीर्ण होचुका हो; उस का आचार अच्छा रहा हो; और वह किसी नियम के गुरुतर भङ्ग का दोष न कर चुका हो। आचार्य, महाविद्यालयसभा द्वारा अनुमोदित निज विचार से, किसी ऐसे विद्यार्थी की शिक्षा का समय बढ़ा सक्ता है जिस ने महाविद्यालय के किसी भी नियम का उल्लंघन न किया हो। प्रत्येक-सत्र में कर्त्तव्य कार्य, तत्तद् विषयों के व्याख्याताओं की सम्मति लेकर, आचार्य निश्चित करेगा और उस के हस्ताक्षरों से अंकित विषय—संक्षेप (Syllabus) प्रकाशित कर दिया जाया करेगा। यदि किसी विद्यार्थी में वे सब विशेष गुण न होंगे, जो स्नातक होने के लिये आवश्यक हैं तो, गुरुकुल महाविद्यालय उसे एक प्रमाणपत्र देगा जिस में उस की प्रत्येक विषय की योग्यता दिखलाई हुई होगी।

शिक्षावर्ष, सत्र और अनध्याय।

(२) महाविद्यालय का शिक्षावर्ष दो सत्रों में विभक्त होगा। प्रथम सत्र चैत्र की प्रतिपदा से होकर श्रावण के अन्तिमदिन समाप्त होगा। द्वितीय सत्र कार्त्तिक की प्रथम को आरम्भ होकर माघ के अन्तिम दिन समाप्त होगा। वार्षिक अनध्यायों के कारण प्रथम भाद्रपद से लेकर प्रथम कार्त्तिक तक और फाल्गुन का सारा मास महाविद्यालय बन्द रहेगा।

(३) प्रत्येक सत्र में समाप्त किये हुए विषयों की परीक्षा उस सत्र के अन्त में होगी। प्रथम वर्ष के पश्चात् विद्यार्थी किसी भी सत्र-परीक्षा के समय, आगामी सत्र या सत्रों में रक्खे हुवे विषयों की परीक्षा दे सक्ता है, यदि उन विषयों के व्याख्याता यह प्रमाणपत्र देदें कि उस ने उस सत्र या उन सत्रों के लिये निश्चित की हुई पाठ विधि को समाप्त करलिया है। यदि वह उत्तीर्ण होजावे तो, इच्छा प्रकट करने पर उस समय के लिये, उन विशेष विषयों के व्याख्यानों में उपस्थित होने से वह मुक्त किया जासकता है।

(४) यदि कोई विद्यार्थी किसी सत्र परीक्षा में एक या एक से अधिक विषयों में अनुत्तीर्ण हो तो, वह अगली सत्रपरीक्षा में उस या उन विषयों की फिर परीक्षा दे सकता है। परन्तु जो विद्यार्थी वैदिक या संस्कृत सम्बन्धि विषय में बराबर तीन सत्रपरीक्षाओं में अनुत्तीर्ण होगा उसे महाविद्यालय से पृथक् कर दिया जावेगा, किन्तु यदि आचार्य उचित समझे तो ऐसे विद्यार्थी को एक और अवसर दे सकता है। (जिस अवसर की सीमा महाविद्यालय के दो सत्रों तक है) जिस ने उस विषय में न्यून से न्यून उतारक अङ्कों (PassMarks) का $\frac{3}{4}$ प्राप्त किया हो। यदि कोई विद्यार्थी बराबर ३ सत्रपरीक्षाओं में किसी स्वयंवृत (Elective) विषय में अनुत्तीर्ण होगा तो, उस का उस विषय के व्याख्यानों में उपस्थित होना रोक दिया जावेगा।

(५) जो विद्यार्थी आचार्य की आज्ञा के विना, सत्रपरीक्षा के समय किसी भी विषय की परीक्षा में अनुपस्थित होगा, वह अगले सत्रपरीक्षा के समय प्रथम सत्र के विषयों की परीक्षा न दे सकेगा, अथवा आचार्य उसे कोई और उचित दण्ड देगा।

(६) प्रश्नपत्रों के पूर्णाङ्क, उन की संख्या, और प्रत्येक के उत्तर देने के लिये समय का निश्चय व्याख्यातावों की सम्मति लेकर आचार्य्य करेगा और परीक्षा की तिथि से १४ दिन पूर्व उसे निश्चय की सूचना दी जाया करेगी।

(७) सब सत्रपरीक्षाओं के लिये निश्चित अङ्कों के सर्व योग में से न्यून से न्यून प्रति सैकड़ा ७० अङ्क लेने वाले विद्यार्थी प्रथम विभाग में, प्र० श० ५० अङ्क लेने वाले द्वितीय विभाग में और प्र० श० ४० अङ्क लेने वाले तृतीय विभाग में उत्तीर्ण समझे जावेंगे। प्रत्येक सत्रपरीक्षा में तथा सब में मिला कर उत्तीर्ण होने के लिये प्र० श० ४० लघुतम संख्या होगी। यदि कोई विद्यार्थी किसी सत्रपरीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जावेगा तो, उस विषय में प्राप्त किये हुए अंक उस के सर्वयोग में न जोड़े जावेंगे।

[८] यदि कोई विद्यार्थी तृतीय वर्ष की समाप्ति के अनन्तर किसी विषय पर अपूर्वकल्पित (original) निवन्ध लिखेगा, और वह निबन्ध उस विषय के व्याख्याता तथा महाविद्यालय से असम्बद्ध परन्तु उसकी शासकसभा द्वारा निश्चित किये हुए दो विद्वानों की समिति द्वारा स्वीकृत किया जावेगा तो, वह विद्यार्थी उस विषय में प्रतिष्ठा सहित (**प्र० प्रतिष्ठित स्नातक**) उत्तीर्ण समझा जावेगा। प्रतिष्ठा सहित उत्तीर्ण होने की इच्छा रखने वाले विद्यार्थियों के लिये आवश्यक होगा कि वे जिस तिथि को निबन्ध देने के लिये उद्यत हों (जो तिथि सत्रपरीक्षा की समाप्ति का अगला दिन होना चाहिए) उस से छः मास पूर्व आचार्य द्वारा मुख्याधिष्ठाता को सूचना दे दिया करें।

परीक्षा की विधि।

(९) सत्रपरीक्षा में उपस्थित होने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को आचार्य द्वारा उस २ विद्यार्थी की संख्या से अङ्कित एक पत्र, और परीक्षा के नियमों की एक एक प्रति दी जाया करेगी।

(१०) जिस कमरे में परीक्षा होनी होगी उस की सूचना आचार्य द्वारा प्रकाशित परीक्षा के दैनिक समय विभाग में देदी जाया करेगी।

(११) परीक्षाभवन में प्रत्येक विद्यार्थी के लिये एक मेज़ होगी, जिस पर उस के पत्र में अंकित संख्या के समान संख्या लिखी होगी और यह मेज़ उस विद्यार्थी की सब लिखित परीक्षाओं के लिये मिल जावेगी परीक्षा के समय प्रत्येक विद्यार्थी को उसी मेज़ पर बैठने की आज्ञा होगी जो उसे दीगई है।

(१२) परीक्षाभवन में प्रश्न पत्र मेज़ों पर रख दिये जावेंगे और परीक्ष्य विषय के शुद्ध प्रश्नपत्र को प्राप्त कर लेने की उत्तर-दायिता विद्यार्थियों पर होगी।

(१३) विद्यार्थियों का कर्त्तव्य है कि वे परीक्षाभवन से जाते समय अपनी लिखित उत्तरपुस्तक को उसी जगह पर छोड़ जावें, जहां से उन्होंने प्रश्नपत्र उठाया था। अपने लिखित उत्तर पत्रों को ठीक रीति से लौटाने के उत्तरदाता विद्यार्थी हैं।

(१४) जो विद्यार्थी परीक्षा आरम्भ होने के निश्चित समय से दश मिनट पीछे आवेगा, उसे परीक्षाभवन में प्रविष्ट नहीं किया जावेगा। प्रत्येक पत्र की परीक्षा प्रारम्भ होने के पश्चात् जबतक एक घंटा व्यतीत न हो लेगा तब तक, किसी विद्यार्थी को परीक्षाभवन छोड़ने की आज्ञा न दी जावेगी।

क्रोड़पत्र सं० ७

गुरुकुल महाविद्यालय के नियम।

व्याख्यानों में उपस्थिति।

१. सब विद्यार्थियों को नियम से, ठीक समय पर, व्याख्यानों में उपस्थित होना चाहिये। इसी मतलब के लिये एक पञ्जिका रक्खी जाती है, जिस का ध्यान, महाविद्यालय के प्रमाणपत्रों की आवश्यकता के समय रक्खा जावेगा।

२. यदि कोई विद्यार्थी किसी व्याख्यान में उपस्थित होने से मुक्त होना चाहे तो, उसे एक लिखित प्रार्थना भेजनी चाहिये और व्याख्याता से हस्ताक्षर करवा लेने चाहियें। अस्वास्थ्य की दशा में, चिकित्सक का प्रमाणपत्र भी प्रार्थना के साथ भेजना चाहिये।

प्रबन्ध

३. व्याख्यान के आरम्भ में जब व्याख्याता कमरे में प्रविष्ट हो, और उस के अन्त में जब वह कमरे से बाहिर जावे तब, विद्यार्थियों को खड़ा होना चाहिये।

जब मुख्याधिष्ठाता, आचार्य्य, महाविद्यालय का कोई प्रबन्धकर्त्ता, कोई दूसरा व्याख्याता, अथवा इन में से किसी के साथ कोई दर्शक महाशय कमरे में प्रविष्ट हो तो भी विद्यार्थियों को खड़ा होना चाहिये।

४. पढ़ाने के लिये, किसी कमरे में भी, उपस्थित व्याख्याता को अपने कार्य में पूर्ण अधिकार है, और वह किसी भी विद्यार्थी को अपने व्याख्यान से बाहिर निकाल सक्ता है।

५. प्रत्येक व्याख्याता तथा महाविद्यालय के इतर अधिकारियों को, किसी नियम के गुरुतर भङ्ग की सूचना आचार्य्य तक पहुंचाना अपना कर्त्तव्य समझना चाहिये।

६. यदि आचार्य्य की सम्मति में (१) कोई विद्यार्थी वार वार नियमों का भङ्ग करे, अथवा (२) किसी विद्यार्थी का व्यवहार गुरुकुल के यश को धब्बा लगाने वाला, या उस की भलाई में बाधा डालने वाला हो तो, आचार्य्य वर्त्तमान सत्र के अन्तर्गत समय के लिये उस विद्यार्थी को प्रच्युत (suspend) कर सक्ता है । परन्तु यदि आचार्य्य किसी विद्यार्थी के व्यवहार को विशेष ध्यान देने योग्य समझे तो, वह नियामक न्यायालय को सूचना देगा जिस में मुख्याधिष्ठाता, आचार्य्य और महाविद्यालयसभा के सभासद न्यायाधीश का कार्य करेंगे और उन्हें अधिकार होगा कि वे (१) उस विद्यार्थी को नियत समय के लिये महाविद्यालय से निर्वासित करने का, अथवा (२) सर्वथा निकल जाने का फैसला दें । मुख्याधिष्ठाता न्यायालय के सभापति होंगे, जिन की दो सम्मतियें मानी जावेंगी ।

७. प्रत्येक सत्र के अन्त में एक "सभा" होगी जिस में प्रत्येक विद्यार्थी का उपस्थित होना आवश्यक होगा, और उस में आचार्य्य, उपाध्यायवर्ग के सन्मुख प्रत्येक विद्यार्थी को उस की उन्नति बतलावेंगे।

८. अध्ययन समय में और महाविद्यालय सम्बन्धी अन्य अवसरों पर विद्यार्थियों को गुरुकुल का नियत पहिरावा पहिरना होगा, और व्याख्याता इस पहिरावे के विना आये हुवे विद्यार्थियों को अपने कमरे से निकाल देंगे ।

महाविद्यालयसम्बन्धी सभायें ।

९. कोई सभा स्थापित करने के पूर्व, मुख्याधिष्ठाता से इस विषय की लिखित आज्ञा लेनी आवश्यक होगी, और उन के पास सभा के नियम, स्वीकृति के लिये आचार्य्य द्वारा भेजने चाहियें ।

साहित्यपरिषत् ।

१०. विद्यार्थियों में गवेषणाशक्ति को बढ़ाने के लिये यह सभा स्थापित की गई है । आचार्य्य की आज्ञा के विना, कोई भी विद्यार्थी इस का सभासद नहीं हो सक्ता । आचार्य्य स्वाधिकार से इस के सभापति होंगे । मन्त्री, कार्य्यकारिणी सभा और अन्य अधिकारी प्रति वर्ष चुने जावेंगे । कार्य्यकारिणी द्वारा स्वीकृत सब प्रस्तावों के प्रत्याख्यान (veto) का अधिकार आचार्य्य को होगा । आचार्य्य की आज्ञा के विना, सभा कुछ भी प्रकाशित न कर सकेगी और नहीं उन की स्वीकृति के विना "परिषत्" के पुस्तकालय के लिये कोई पुस्तक खरीदी जावेगी ।

महाविद्यालय की साहित्यसभायें ।

११. ये साहित्यसभायें अध्यापन समय में, और आचार्य्य की साक्षात् देख रेख में हुवा करेंगी । वह एक मन्त्री को निश्चित कर देगा जो अधिवेशनों के वृत्तान्त लिखा करेगा । अधिवेशनों में उपस्थित होना आवश्यक होगा और अवकाश प्राप्त किये विना अनुपस्थित होने से दण्ड मिलेगा ।

क्रीड़ा ।

१२. क्रीड़ा में उपस्थित होना आवश्यक है । अवकाश प्राप्त किये विना अनुपस्थित होने वाला विद्यार्थी आचार्य्य द्वारा दण्डित होगा । प्रत्येक दल के मुखिया के पास एक एक पञ्जिका होगी जिस में लिखित उपस्थिति को क्रीड़ाध्यक्ष देखेंगे और वह अनुपस्थित तथा नियम भङ्ग करने वाले विद्यार्थियों की सूचना आचार्य्य को देंगे । क्रीड़ाध्यक्ष को यह अधिकार होगा कि वह किसी भी विद्यार्थी को एक दिन के लिये खेलों से बाहर कर दें ।

महाविद्यालयाश्रम के नियम ।

साधारण नियम ।

(१) इस आश्रम के निवासी वे विद्यार्थी होंगे जो अधिकारी परीक्षा में उत्तीर्ण होकर गुरुकुल के महाविद्यालय में शिक्षा पाते हों ।

(२) यह आश्रम श्री उपमुख्याधिष्ठाता के आधीन रहेगा ।

स्नान, संध्या, अग्नि होत्र ।

(३) सर्व आश्रम निवासिओं के लिये नियत समय पर ही स्नान, सन्ध्या अग्निहोत्रादि करना आवश्यक होगा ।

भोजनादि ।

(४) इस आश्रम के भोजन का प्रबन्ध विद्यार्थी स्वयं ही करेंगे । किन्तु उन के प्रत्येक आग्रहणपत्र पर उपमुख्याधिष्ठाता के हस्ताक्षर होने पर ही उन को भण्डार अथवा गुरुकुल के आढ़तियों से वस्तुएं प्राप्त हो सकेंगी ।

(५) प्रत्येक ब्रह्मचारी को क्रमशः एक २ मास के लिये भोजन भण्डार का प्रबन्ध करना आवश्यक होगा ।

(६) प्रत्येक सप्ताह के आरम्भ के १ दिवस पूर्व भोजन प्रबन्धक ब्रह्मचारी को सप्ताह के लिये भोजन का विवरण बनाके उस पर चिकित्सक महाशय तथा उपमुख्याधिष्ठाता की स्वीकृति तथा हस्ताक्षर ले लेने चाहिएं । उस में लिखित वस्तुओं के अतिरिक्त कोई वस्तु भोजन शाला में न बनेगी और न मंगवाई जा सकेगी जब तक कि उस के लिये उपमुख्याधिष्ठाता की विशेष स्वीकृति न प्राप्त की जावे । (सप्ताह का आरम्भ सोमवार से हुआ करेगा) ।

(७) स्वीकृति की सम्पूर्ण पर्चियों की प्रतियां मासिकव्यय के हिसाब के साथ टांकनी चाहिएं । क्योंकि उनके विना हिसाब कोई स्वीकार नहीं किया जायेगा ।

(८) भोजन निरामिष तो होगा ही किन्तु किसी भी अवस्था में लहसन, प्याज, खट्टा; लालमिर्च तथा गर्ममसाला का प्रवेश भोजनभंडार में न होने पायेगा ।

(९) भोजन सब रोगरहित ब्रह्मचारियों को भण्डार में ही करना होगा । जो विद्यार्थी विना उपमुख्याधिष्ठाता की अनुमति के अथवा आचार्य्य, उपाध्यक्ष वा चिकित्सक महाशय की विशेष आज्ञा के भोजन के समय नियत स्थान पर अनुपस्थित होगा वह न केवल उस समय के भोजन से ही वञ्चित रक्खा जायगा अपि तु यदि मुख्याधिष्ठाता उचित समझेंगे तो और दण्ड का भागी होगा । *

वस्त्र और वस्तुएं ।

(१०) २० आश्विन १९६७ तक महा० आश्रम के प्रत्येक विद्यार्थी को अपने पास जो वस्तुएं पुस्तकोंके अतिरिक्त नियमानुकूल हैं उन की सूची बनाके मुख्याधिष्ठाता के हस्ताक्षर करा के अपने कमरे में लटकानी होगी । जो वस्तुएं नियमविरुद्ध किसी ब्रह्मचारी के पास हों, उन को लौटा देना चाहिये । उस तिथि के पश्चात् उस सूची में जो वस्तु घटाई वा चढ़ाई जाय तो उसके वास्ते उपमुख्याधिष्ठाता के हस्ताक्षर करा लेने चाहिएं ।

(११) मास में एक वार या अधिक वार जब २ उनकी इच्छा होगी उपमुख्याधिष्ठाता सारी वस्तुओं का निरीक्षण करके उपस्थित

* (नोट) जो ब्रह्मचारी किसी समय भोजन के स्थान में केवल दुग्धपान करना चाहे, क्षुधा न होने के कारण न खाना चाहे उन पर यह नियम न लगेगा।

कोड़पत्र संख्या ८

स्नातक परीक्षोत्तर कालीन

पाठ विधि

१. प्रवेशार्थ योग्यता—एक विद्यार्थी जो स्नातक परीक्षा में प्रथम कक्षा अथवा २य कक्षा में उत्तीर्ण हुआ हो महोपाध्याओं के अनुमोदन करने पर और छात्र वृत्ति के प्राप्य होने पर स्नातक परीक्षोत्तर कालीन पाठविधि पढ़ सकेगा।

२. **निवास और अध्ययन**—विद्यार्थी को वाचस्पति की पदवी प्राप्त करने के पूर्व २ वर्षों तक महाविद्यालय में निवास करना होगा।

३. इस पदवी के अभिलाषी विद्यार्थियों को नियम पूर्वक व्याख्यान श्रवण करने की आवश्यकता नहीं होगी वे केवल आचार्य्य द्वारा नियत स्थानीय महोपाध्याओं के निरीक्षण में अध्ययन करेंगे।

४. उन्हें एक दैनिक पुस्तक (Diary) रखनी होगी जिस में प्रति दिन वे अपना अन्वेषणकार्य्य की राशि और समाजिक तथा धार्म्मिक कर्त्तव्यों में व्ययित समय लिखेंगे।

५. आचार्य्य की आज्ञा पाने पर उन्हें विद्यालय तथा महाविद्यालय में शिक्षणकार्य्य भी करना पड़ेगा। शिक्षण का समय प्रायः २ घण्टे प्रतिदिन से अधिक न होगा।

६. **निबन्ध**—विद्यार्थियों को २ स्वमूलक (original) निबन्ध लिखने होंगे। मुख्य निबन्ध वेद विषयक होगा। इस निबन्ध में

विद्यार्थी को प्रकट करना होगा। कि उसने चारों वेदों तथा उन के व्याख्यान ब्राह्मणों को अध्ययन किया है। गौण निबन्ध निम्न विषयों में से किसी एक विषय पर होगा।

१. संस्कृत व्याकरण
२. संस्कृत साहित्य
३. महाभारत पूर्वकालीन भारतीय दर्शन शास्त्र
४. महाभारत उत्तर कालीन भारतीय दर्शन शास्त्र
५. वैदिक भारत
६. पाली साहित्य का बौद्ध भारत
७. भारत का धार्म्मिक इतिहास
८. भारतीय सामाजिक शास्त्र
९. दर्शन शास्त्र तथा सापेक्ष व्याकरण
१०. प्राचीन स्मृति तथा न्यायनियम
११. प्राचीन पाश्चात्य दर्शन
१२. नवीन पाश्चात्य दर्शन
१३. भारतीय भूमियें
१४. आयुर्वेदिक औषध संस्करण

७. विद्यार्थी द्वारा चुने हुवे तथा स्थानीय निरीक्षक महोपाध्याय द्वारा अनुमोदित निबन्ध के विषयों की सूचना प्रथम वर्ष की समाप्ति पर आचार्य्य को हो जानी चाहिये।

८. प्रत्येक निबन्ध की परीक्षार्थ तीन सभ्यों की एक उपसभा होगी जिसे शासनकर्तृसभा इस कार्य्यार्थ नियत करेगी-निरीक्षक महोपाध्याय इस उपसभा का अधिक सभासद् होगा। यदि दोनों निबन्ध स्वीकृत हो जायं, और विद्यार्थी मौखिक परीक्षोत्तीर्ण हो जायेगा। तो उस

को आचार्य, मुख्याधिष्ठाता और शासनकर्तृ सभा के प्रधान के हस्ताक्षरों से अलङ्कृत एक पदवीपत्र (Diploma) मिलेगा ।

९. जो विद्यार्थी नियम ६ में वर्णित विषयों में अन्वेषण कार्य्य की इच्छा न रखते हों तो वे निम्न विषयों में से एक विषय ले सकेंगे ।

१. वेद

२. विज्ञान

३. व्यापार और व्यवसाय

ऐसे विद्यार्थियों की अवस्था में गौण निबन्ध लिखने की आवश्यकता न होगी । उन्हें केवल अपने चुने हुवे विषयों पर व्याख्यान सुनने होंगे । और प्रत्येक सत्रान्त में महाविद्यालय सभा द्वारा नियत पाठविधि में परीक्षाएं देनी पड़ेंगी ।

कोष्ठपत्र सं० ६

* गुरुकुल में अनध्यायों की नामावली *

संख्या	नाम अनध्याय	दिनों की संख्या	सूचना
१	चान्द्रायण वर्ष का आरम्भिक दिन	१	
२	पं० गुरुदत्त की मृत्यु का दिन	१	
३	सौर वर्ष का आरम्भिक दिन	१	
४	राम नवमी (राम जन्म दिन)	१	
५	राजराजेश्वर जार्ज ५म का जन्म–दिन	१	
६	श्रावणी (ग्रीष्म सत्रान्त)	१	
७	जन्माष्टमी (कृष्ण जन्म–दिन)	१	
८	विजय–दशमी	२	
९	ऋषि उत्सव (दीपमालिका)	१	
१०	दयानन्दाब्द	१	
११	दयानन्द महायज्ञ (आर्य्यसमाज की स्थापना)	१	
१२	संक्रान्ति माघी	१	
१३	वसन्त ५मी	१	
१४	दीक्षा रात्रि	१	
१५	गुरुकुल जन्मोत्सव	१	
१६	वीरोत्सव (पं० लेखराम की मृत्यु का दिन)	१	
१७	गुरुकुल का वार्षिकोत्सव और वेदारम्भ संस्कार	१०	

श्रावणी की विधि ।

प्रथम संस्कार विधि में लिखी हुई रीतियों से अग्नि स्थापनादि करके, आघार और आज्य भागों को देकर, (१) ब्रह्मणे स्वाहा (२) छन्दोभ्यः स्वाहा ये दो आहुतियें देकर, निम्न लिखित घी की आहुतियें दे।

(१) सावित्र्यै स्वाहा (२) ब्रह्मणे स्वाहा (३) श्रद्धायै स्वाहा (४) मेधायै स्वाहा (५) प्रज्ञायै स्वाहा (६) धारणायै स्वाहा (७) सदसस्पतये स्वाहा (८) अनुमते स्वाहा (९) छन्दोभ्यः स्वाहा (१०) ऋषिभ्यः स्वाहा।

तदनन्तर निम्न लिखित ऋग्वेद की ११ ऋचाओं से आहुति दे।

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ।

कुषुम्भकस्तदब्रवीद्गिरेः प्रवर्तमानकः । वृश्चिकस्यारसं विषमरसं वृश्चिक ते विषम् ॥

आवदंस्त्वं शकुने भद्रमा वद तूष्णीमासीनः सुमतिं चिकिद्धिनः। यदुत्पतन्वदसि कर्करिर्यथा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥

गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम् । पातं सोममृतावृधा ॥

धामन्ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि। अपामनीके समिथे य आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम् ॥

गन्तानो यज्ञं यज्ञियाः सुशमि श्रोता हवमरक्ष एवयामरुत्। ज्येष्ठासो न पर्वतासो व्योमनि यूयं तस्य प्रचेतसः स्यात दुर्धर्तवो निदः ॥

यो नः स्वो अरणो यश्च निष्ट्यो जिघांसति । देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरम् ॥

प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च सोम जागृतम् । रक्षोभ्यो वधमस्यतमशनिं यातुमद्भ्यः ॥ ऋ० म० ७ अंतिम मंत्र ॥

आग्ने याहि मरुत्सखा रुद्रेभिः सोमपीतये । सोभर्या उप सुष्टुतिं मादयस्व स्वर्णरे ॥

यत्ते राजञ्छृतं हविस्तेन सोमाभि रक्ष नः अरातीवा मा नस्तारीन्मो च नः किं चनाममदिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः । समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहा सति ॥

इस के पश्चात् यजुर्वेद के :—

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् । सनिं मेधामयासिषꣳ स्वाहा ॥ यजुर्वेद अ० ३२ मंत्र १३ ॥

इस मन्त्र से आचार्य्य हवन करे, किन्तु मन्त्र सब बोलें।

पश्चात् समस्त विद्यार्थी पलाश की हरी तीन तीन समिधाओं को घी से भिगो कर सावित्री मन्त्र से आहुति दें। इस प्रकार तीन वार करें। पुनः 'स्विष्टकृत' आहुति देकर सत्तू और दही खावें।

'शन्नोमित्रः' इस मन्त्र को पढ़कर, इस के बाद मुख धोकर, आचमन करके, अपने २ आसनों पर बैठकर, जलपात्रों में कुशाओं को रखकर हाथ जोड़कर, गुरु के साथ तीन वार ओंकारव्याहृति पूर्वक सावित्री पढ़ कर वेदों के आद्यन्त अथवा प्रति अध्याय का एक एक मन्त्र पढ़ें। पश्चात् यह मन्त्र पढ़ें।

सहनोऽस्तु सहनोऽवतु, सह न इदं वीर्य्यं वदस्तु ब्रह्म। इन्द्रस्तद् वेद येन यथान विद्विषामहे।

इस वेद मन्त्र को पढ़कर सामवेद का वामदेव्यगान करें।

क्रोड़पत्र सं० १०

गुरुकुल के आय व्यय के अनुमान का संक्षिप्त विवरण मध्ये सं० १९६८

आय

संख्या	शीर्षक		अनुमान सं० १९६८
१	भण्डार		१०००
२	गौशाला :—		
	दूध	३६००	
	गाड़ियों का किराया	२४००	
	विक्रय बछड़ा	५००	
		६५००	६५००
३	दायाद्याय :—		
	गुरुकुल वाटिका	१५००	
	कांगड़ी ग्राम	१२००	
	मायापुर वाटिका	३००	
		३०००	३०००
४	वैदिक मैगज़ीन		१८००
५	वार्षिकोत्सव		१०००
६	सद्धर्म-प्रचारक यन्त्रालय :—		
	यन्त्रालय की छपाई आदि से आय चैत्र १९६९ से फाल्गुन ६७ के अन्त तक	१४०००)	
	अनुमान आय चैत्र ६७ से फाल्गुन ६८ के अन्त तक	११७००)	
	ब्यौरा निम्न प्रकार—		
	प्रचारक पत्र—	१६००)	
	वैदिक मैगज़ीन—	९००)	
	पुस्तकें जो छपने के लिये हाथ में हैं	१५००)	
	जिल्द बन्दी—	६००)	
	कार्य्यालयादि से—	११००)	
	अन्य फुटकर छपाई से आय—	६०००)	
		२५७००)	२५७००
			६०००
७	विदेश शिक्षानिधि... ...		
८	दश लक्ष भण्डार		
९	एक मुद्रा निधि		
१०	चार आना निधि		८४८००
११	महानिधि		६०००
१२	शुल्क		२००००
१३	मंदिर बनवाई के लिए स्थिर राशि से आय		५२००
१४	ब्याज		
	गो क्रय		
	योग..........		१६१०००

व्यय

सं०	शीर्षक	अनुमान सं० १९६८
१	भण्डार	३७,५००
२	गौशाला	७,०००
३	अश्वशाला	८००
४	दायाद व्यय	४३००
५	वैदिक मैगज़ीन ...	२,०००
६	वार्षिकोत्सव	२,०००
७	सधर्म्मप्रचारक यन्त्रालय	२५७००
८	विदेश शिक्षानिधि ...	६००
९	शिक्षा	३१,५००
१०	कार्य्यालय	
	मुख्याधिष्ठाता तथा सहायक मुख्याधिष्ठाता का मार्ग व्यय	५,१००
११	चिकित्सालय... ...	२०००
१२	स्वास्थ्यरक्षा	९००

सं०	शीर्षक	अनुमान सं० १९६८
१३	वस्तु तथा उपकरण क्रय	९००
१४	वस्तु तथा उपकरण सुधरवाई	२४५००
१५	मंदिर तथा मार्ग आदि बनवाई	१९००
१६	„ सुधरवाई	१२००
१७	भिक्षा मण्डली	१९००
१८	सभा का कर	५००
१९	वार्षिक वृत्तान्त का मुद्रण ...	१५००
२०	गुरुकुल रक्षा	२०००
२१	सरस्वती यात्रा	३०००
२२	गुरुकुल प्रचार	
	पुस्तक रचना	
	योग... ...	१६१०००

क्रोड़पत्र संख्या ११

गुरुकुल सम्मति पुस्तक

से

उद्धृत ।

(१) मैंने अल्प समय में गुरुकुल काङ्गड़ी का अवलोकन किया। अनध्याय के कारण गुरुकुल में पाठ बन्द था। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल के अनुग्रह से मैंने विद्यालय तथा महाविद्यालय के भवनों को देखा और छात्रों से भी मिला। विद्यार्थियों की शिक्षा सम्बन्धी अवस्था देख कर मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ—वे अपनी शिक्षा में बड़े ही निपुण तथा सज्ञान हैं। ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य अत्युत्तम है। भोजनादि का प्रबन्ध सन्तोष जनक प्रतीत होता है। मेरी यही कामना है कि गुरुकुल को कृतकार्य्यता प्राप्त हो।

ह० ला० शिवदयाल एम० ए०
२य अध्यापक
सैन्ट्रल मोडल स्कूल
लाहौर

(२) मैंने आज इस अपूर्व विद्यालय तथा महाविद्यालय के विद्यार्थियों को देखा। मेरे विचार में गुरुकुल के अधिकारियों ने भारतीय शिक्षकों के आदर्श को प्रत्यक्ष करके दिखा दिया है। मैं यहां के कार्य्य कर्त्ताओं को उस महान उपयोगी कार्य्यार्थ जो वे महाशय कर रहे हैं बधाई देता हूं।

२१ अप्रैल १९१०]

ह० म० व्रज सुन्दर राय
प्रो० डी० ए० वी० कालेज
लाहौर

(३) मैंने ३ दिन सानन्द यहां व्यतीत किये। भारतवर्ष में यह विद्यालय अपनी प्रकार का एक ही है। इस विद्यालय में प्रचलित शिक्षा प्रणाली का ठीक परिणाम ज्ञात करने के लिये कार्य कर्त्ताओं को १२ वर्षों की प्रतीक्षा करनी होगी। मैंने ब्रह्मचारियों को क्रीड़ा भूमि में खेलते तथा यज्ञ शाला में हवन करते देखा। मैंने ब्रह्मचारियों की उन की पाठ्य पुस्तकों में परीक्षा ली। और यह बात जान मुझे अत्यन्त हर्ष है कि ब्रह्मचारियों की शारीरिक, मानसिक तथा धार्मिक अवस्था उस त्याग तथा व्यय की पर्य्याप्त निष्पत्ति है जो गुरुकुल के अधिकारी गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के निमित्त कर रहे हैं।

अधिकारी गण ब्रह्मचारियों के स्वास्थ्य तथा आचार पर विशेष ध्यान रखते हैं। मैं उनके इस निष्काम भाव युक्त कार्य्य के फलीभूत होने की प्रार्थना करता हूं। गुरुकुल केवल विद्यार्थियों के लिये एक विद्यालय ही नहीं वरन् धार्मिक विद्वानों के एकान्त सेवन योग्य स्थान भी है यहां का आतिथ्य अनुकरणीय है।

३०-६-१९१० }

कुलकरनीक M. A.
ह० प्रो० इतिहास, विक्टोरिया
कालेज ग्वालियर

(४) आज गुरुकुल के अध्यापकों द्वारा मैंने गुरुकुल का। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के अध्ययन करते समय अवलोकन किया मैंने ब्रह्मचारियों के हर्ष युक्त तथा प्रमुदित व्यवहार को प्रसन्नता पूर्वक देखा। अध्यापकों में ब्रह्मचारियों के साथ वर्त्ताव में प्रेममय रक्षा और यंत्रणा का आनन्द दायक मिलाप प्रतीत होता है। मुझे इसमें सन्देह का लेश मात्र भी नहीं है कि इस विद्यालय के ब्रह्मचारी सभ्यता को भक्ति के साथ मिलाकर मनुष्यत्व का एक उत्तम आदर्श बनकर दिखायेंगे। मैंने बहुत सी श्रेणियों की

सूक्ष्म दृष्ट्या परीक्षा ली । पाठविधि सर्वथोचित और व्यापक संस्कृत शिक्षा का प्रमाण बहुत उच्च है। मैं अनुभव करता हूं कि इस विद्यालय के विद्यार्थी अन्य भारतीय विश्वविद्यालयों के साधारण छात्रों की अपेक्षा कई विषयों में अधिक योग्यता प्राप्त कर सकेंगे। विद्यार्थियों को एक बड़ा लाभ इस विद्यालय में यह है कि शिक्षा का माध्यम उनकी अपनी मातृभाषा है। मैं इस अपूर्व विद्यालय की उन्नति को सदैव बड़ी उत्सुकता से देखता रहा हूं। और इसको पूर्ण साफल्य को प्राप्त हुये सुनकर मेरा हृदय अति आनन्दित होगा।

१०-९-१९११. } ह० हेमचन्द्र सरकार एम० ए०
ब्रह्मोपदेशक

(५) श्रीयुत मास्टर गोवर्धन जी के अनुग्रह से मैंने गुरुकुल विद्यालय का अवलोकन किया। निचली श्रेणियों के ब्रह्मचारियों की स्वच्छता, लेख की सुन्दरता और सरलता देख कर मेरा हृदय बहुत प्रमोदित हुआ। ब्रह्मचारीगण अष्टाध्यायी तथा संस्कृत साहित्य में बड़े निपुण है। साधारण स्कूल के विद्यार्थियों की अवस्था में यह सब कुछ होना असम्भव है।

ह० सुन्दरसिंह बी० ए० बी० टी०
प्रथम फाल्गुण १९६७] हेड मास्टर द्वाबा हाई स्कूल
जालन्धर।

(६) आज मैंने बा० बालमुकंद बा० ब्रजेन्द्रस्वरूप वकील बा० मित्रसेन और पं० शिवनाथ के साथ गुरुकुल का अवलोकन किया। बा० बालमुकंद ने संस्कृत, आंङ्गलभाषा तथा इतिहासादि विषयों में ब्रह्मचारियों की परीक्षा ली। हम इस अपूर्व विद्यालय को देख कर अत्यन्त

प्रसन्न हुवे। ब्रह्मचारीगण सर्व पठित विषयों में निपुण हैं। उन के शरीर तथा स्वास्थ्य उत्तम हैं। हम प्रो०रामदेवजी जी के बड़े कृतज्ञ हैं जिन्होंने हमें कष्ट उठाकर गुरुकुल सम्बन्धी प्रत्येक वस्तु का अवलोकन कराया। हम इस विद्यालय की सफलतार्थ प्रार्थना करते हैं जो भारतदेश में अपनी प्रकार का एक ही है और जो हम आशा करते हैं कि अपने सम्मुख एक उज्वल भविष्य रखता है।

ह० ज्वालाप्रसाद वकील
१०-६-११ } मन्त्री आर्य्यसमाज
कानपुर

———

ओ३म् ।

गुरुकुल काङ्गड़ी के ब्रह्मचारियों की नामावली

मध्ये १९६७

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
		चतुर्दश श्रेणी	
१	हरिश्चन्द्र	श्री० मुन्शीरामजी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार	
२	जयचन्द्र	पण्डित काशीराम रिटायर्ड पोस्टल इन्सपेक्टर वज़ीराबाद (जिला गुजरांवाला)	
३	इन्द्रचन्द्र	श्री० मुन्शीरामजी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार	
		द्वादशश्रेणी	
४	विश्वनाथ	म० प्रीतमदास ठेकेदार मंडला (C. P.)	
५	भारद्वाज	म० लक्ष्मणदास बी० ए० मुख्याध्यापक गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
६	ब्रह्मदत्त	पण्डित चेतराम क्लर्क लोको आफिस N. W. R. लाहौर	
७	यज्ञदत्त	म० रूडामल आर्य्य बज़ाज़ जालन्धर शहर	
८	चन्द्रमणि	म० शालिगराम भण्डारी द्वारा राधामल मूलामल फैंनटन गंज जालन्धर शहर	
		एकादश श्रेणी ।	
९	विश्वमित्र	म० रूलियाराम स्टेशनमास्टर N. W. R. टिब्बीइज्जत रियासत बहावलपुर	
१०	ब्रह्मानन्द	पं० रूपकिशोर शर्मा सैकन्ड क्लर्क डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बिजनौर	
११	चन्द्रकेतु	म० सुन्दरसिंह ज़िमींदार पिंजौर (डाकखाना) माहलपुर (ज़िला) होशयारपुर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
१२	जयदेव	श्री० मुंशीरामजी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार	
१३	देवदत्त	म० मुन्शीराम स्टेशन मास्टर N. W. R. दुश्की (बलोचिस्तान)	
१४	युधिष्ठिर	म० किदारनाथ थापर क्लर्क पोस्टमास्टर जनरल ऑफिस पंजाब लाहौर	
		दशम श्रेणी ।	
१५	प्राणनाथ	म० श्यामसिंह गुरुकुल फर्रुखाबाद	
१६	देवदत्त	पं० रूपकिशोर शर्मा सैकन्ड क्लर्क डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बिजनौर	
१७	देवराज	म० ज्वालाप्रसाद ज़मींदार मोहल्ला सत्तोमालन नजीबाबाद (ज़ि० बिजनौर)	
१८	भीष्म	म० गणेशदास डिपुटी सुपरिनटैनडैन्ट पुलिस क्वेटा (बलोचिस्तान)	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
१९	प्रमुदत्त	म० मथुरादास सिग्नेलर इंचार्ज N. W. R. रावलपिण्डी	
२०	बलभद्र	म० सुन्दरसिंह ज़िमींदार पिंजौर (डाकख़ाना) माहलपुर ज़िला होशयारपुर	
२१	धर्म्मपाल	ठाकुर गोविन्दसिंह ताअल्लुकेदार (डाकख़ाना) पातूर ज़ि० अकोला (बरार)	
२२	बुद्धदेव	पं० रामचन्द्र अध्यापक गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार	
२३	पूर्णदेव	म० मोहनलाल कौड़ा डाकख़ाना सिरीगोविन्दपुर ज़िला गुरुदासपुर	
२४	प्रियव्रत	पं० बालमुकन्द वकील नजीबाबाद, ज़ि० बिजनौर	
२५	विद्यानन्द	लाला बरकतराम थापर क्लर्क पोस्ट मास्टर जनरल पंजाब लाहौर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
२६	बलराम	डाक्टर गणेशदत्त मैडिकल हाल छोटा बाज़ार डेरा इसमाइल खां	
२७	जयदेव	म० खुशाबीराम स्टेशनमास्टर N. W. R. (डाकखाना) खानपुर रियासत बहावलपुर	
२८	जगत्प्रिय	महता झण्डाराम अर्ज़ीनवीस लायलपुर	
२९	विद्यासागर	म० ईश्वरदास क्लर्क पोस्ट आफिस लायलपुर	
		नवम श्रेणी ।	
३०	अमरनाथ	लाला लभ्भूराम चोपड़ा ठेकेदार कपूरथला	
३१	शशिभूषण	म० गोपीनाथ ओवरसीयर गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार	
३२	आत्मानन्द	म० दयालचन्द्र क्लर्क भारत इनशुअरैंस कम्पनी लाहौर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
३३	धर्म्मदत्त	म० खुशाबीराम स्टेशनमास्टर N. W. R. खानपुर (रियासत बहावलपुर)	
३४	ज्ञानप्रकाश	म० अयोध्याप्रसाद रईस डा० अम्बैहटा ज़ि० सहारनपुर	
३५	हरिदत्त	म० श्रीकृष्ण घड़ीसाज़ मुलतान छावनी	
३६	देवव्रत		
३७	जगन्नाथ	म० छोटेलाल अध्यापक मुहल्ला मज़ीद गंज नजीबाबाद ज़ि० बिजनौर	
३८	भूदेव	पं० माधोप्रसाद तिवाड़ी द्वारा पं० कालकाप्रसाद वैद्य आयुर्वेदीय औषधालय कानपुर	
३९	व्रतपाल	पं० रामरत्न उपदेशक आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब डाकख़ाना रायकोट ज़ि० लुधियाना	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
४०	भद्रदेव	म० चिरंजीलाल बजाज़ ऋषिकेश ज़ि० देहरादून	
४१	सत्यप्रिय	म० जगन्नाथ आर्य्य नूरमहल ज़ि० जालन्धर	
४२	श्वेतकेतु	पं० आत्माराम वेदी मुहल्ला पञ्चतीर्थ जम्बू	
४३	यज्ञेश्वर	म० चूनीलाल कौड़ा डा० सिरीगोविन्दपुर ज़ि० गुरदासपुर	
४४	वेदव्यास	पं० आत्माराम वेदी मुहल्ला पञ्चतीर्थ रियासत जम्बू	
		अष्टम श्रेणी	
४५	देवराज़	म० उमादत्त चोपड़ा कसूर ज़िला लाहौर	
४६	विनायकराव	म० केशवराव वकील हाईकोर्ट स्टेशन रोड चादर घाट हैदराबाद (दक्षिण)	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
४७	वासुदेव	म० भगवतीप्रसाद दिलावर ज़ि० गुजरांवाला	
४८	ओ३म् प्रकाश	म० हरगोलाल ट्रेज़ुरीहेडक्लर्क कलैक्टोरेट बिजनौर	
४९	सत्यानन्द	म० मोहनलाल कौड़ा सिरीगोविन्दपुर ज़ि० गुरुदासपुर	
५०	रामचन्द्र	म० ठाकुरदास गुप्त रईस हल्दौर ज़ि० बिजनौर	
५१	नन्दकिशोर	श्री० अमनसिंह जी रईस गुरुकुल काङ्गड़ी हरिद्वार	
५२	विद्यापति	म० गुरुदास मल सिग्नलर इंचार्ज N.W.R. डा० पादईदन हैदराबाद सिंध	
५३	कृष्णकुमार	पं० बलदेवप्रसाद शर्म्मा हैडक्लर्क कैवलरी स्कूल चन्दनभवन सागर (C. P.)	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
५४	विद्यासागर	म० बिहारीलाल मौहल्ला कुंवरपुर बरेली	
५५	जगन्नाथ	म० शंकरदास मंत्री आर्य्यसमाज मुकेरियां ज़ि० होश्यारपुर	
५६	देशबन्धु	पं० शंकरप्रसाद त्रिपाठी ठेकेदार असनि खरौना डा० रमौनी ज़ि० गया	
५७	यशपाल	पं० दीनानाथ जी अध्यापक कन्यामहाविद्यालय जालंधर शहर	
५८	याज्ञवल्क्य	पं० आत्माराम जी वेदी मुहल्ला पंजतीर्थ जम्बू	
५९	शांतिस्वरूप	पं० केशवराव वकील हाईकोर्ट स्टेशन, रोड चादर घाट, हैदराबाद दक्षिण	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
		७ म श्रेणी (क)	
६०	देवदत्त	पं० गंगाराम ओवरसीयर बहलोलपुर तैहसील समराला ज़ि. लुधियाना	
६१	देवशर्म्मा	पं० रामप्रसाद सब ओवरसीयर डिस्ट्रिक्टबोर्ड हमीरपुर	
६२	विद्याधर	म० राजाराम वर्मा गवर्नमैंट टेलीग्राफ दिल्ली	
६३	सोमदत्त	म० रामचन्द्र चावल बेचनेवाला सूहाबाज़ार लाहौर	
६४	सुखदेव	म. सरस्वती प्रसाद ठेकेदार दिलावर ज़ि० गुजरानवाला	
६५	सत्यव्रत	म० बालकराम सबप्लेट लेयर मीयांवाली	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
६६	परमानन्द	महता ज्ञानचन्द्र रिटायर्ड पुलिस इन्सपेक्टर डलवाल ज़ि० जेहलम	
६७	जगन्नाथ	म० शम्भू सहाय मुहल्ला भूर बरेली	
६८	ब्रह्मदत्त	म० रामकृष्ण रईस फलावदा ज़ि० मेरठ	
६९	सोमदत्त	म० गीलाराम हैडक्लर्क आरमी रीमौंट औफिस केटा (बलोचिस्तान)	
७०	रामचन्द्र	म० गोपीनाथ ओवरसीयर गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार	
७१	वेदव्रत	म० युगलकिशोर आर्य्य मुनीम दुकान दीवानसिंह, अमोलक राम बाज़ार मोर गंज सहारनपुर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
७२	विष्णुदत्त	म० गंगाराम ओवरसीयर वहलोलपुर तैहसील समराला ज़ि० लुधियाना	
७३	कृष्णस्वरूप	म० नारायणस्वरूप रईस डा० इस्लामनगर ज़ि० बदायूं	
७४	अमरनाथ.	म० वैशाखासिंह ठेकेदार खानकी ज़ि० गुजरानवाला	
७५	उपमन्यु	म० जगन्नाथ जिलेदार नहर सोनीपत दिल्ली	
७६	मेधातिथि	चौधरी रणजीतसिंह सिहोरा बिजनौर	
		(ख) सप्तम श्रेणी	
७७	जयचन्द्र	श्रीमति पार्वतीदेवी अध्यापिका पुत्रीपाठशाला कमालिया जि० मिन्टगुमरी	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
७८	धर्मचन्द्र	म० शिवराम अर्ज़ीनवीस मोहल्ला महतियां गुजर करीमपुरा पेशावर शहर	
७९	ईश्वरदत्त	पं० सुखदेवप्रसाद वेदपाठी जसपुर ज़ि० नैनीताल	
८०	देवेश्वर	म० शिवराम अर्ज़ीनवीस मोहल्ला महतियां गुजर करीमपुरा पेशावर शहर	
८१	सत्यभूषण	म० मिट्ठनलाल ठेकेदार रेलवे N. W. R. रियासत झीन्द	
८२	निरञ्जनदेव	म० गुलज़ारीलाल कौडा सिरी गोविन्दपुर ज़ि० गुरुदासपुर	
८३	चन्द्रपाल	म० मुकुन्दराम सब-ओवरसीयर लखीमपुर खेरी (अवध)	
८४	मनोहर	म० नारायणदास सर्वेयर मोहपानी ज़ि० नरसिंहपुर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
८५	विष्णुदत्त	श्रीमति मायादेवी द्वारा ला० शान्तिस्वरूप हवेली राय अर्जुनदास कोट किष्णचन्द जालंधर सहर	
८६	वीरेन्द्र	म० धृतराम पटवारी ग्राम भगाला मुकेरियां ज़िला होशियारपुर	
८७	वागीश्वर	श्री अमनसिंहजी रईस गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार	
८८	ब्रह्मानन्द	म० रामचन्द्र ग्राम सतुपुरा डा० असमौली ज़ि० मुरादाबाद	
८९	गुरुदेव	म० रामशरण दास सरिशतेदार दफ्ततर माल जालंधर शहर	
९०	विश्वेश्वर	म० महताबराय क्लर्क अदालत दीवानी जौरा ग्वालियर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
९१	शंकरदेव	महता जैमनी बी० ए० वकील लायलपुर	
९२	दीनानाथ	म० शंकरदास रिटायर्ड हैडमास्टर वा म्यूनिसपल कमिश्नर रामनगर ज़ि० गुजरांवाला	
९३	वासुदेव	चौधरी रामचन्द्र निवादा डा० नांगल ज़ि० बिजनौर	

षष्ठ श्रेणी

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
९४	महानन्द	धर्म्मपत्नी जी स्वर्गवासी म० शिवचरण रईस इस्लामनगर ज़ि० बदायूं	
९५	मदन गोपाल	म० भवानीप्रसाद गुप्त रईस हलदौर ज़ि० बिजनौर	
९६	शान्तिस्वरूप	पं० बलदेवसहाय कुण्डा डा० नूरपुर ज़ि० बिजनौर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
९७	ज्योतिप्रकाश	म० जानकीप्रसाद क्लर्क मीरपति की छावनी तहसील रोड मेरठ शहर	
९८	धारेश्वर	म० ठाकुरदास चीफ अकौन्टेन्ट परस्पर हिन्दू कुटुम्ब सहायक भंडार लाहौर	
९९	शम्भूनाथ	डाक्टर गंगाविष्णु सब असिस्टैंट सरजन कैथल ज़ि० कर्नाल	
१००	शान्ति स्वरूप	पं० विष्णुस्वरूप अकौंटैंट डिस्ट्रिक्टबोर्ड इंग्लिश ऑफ़िस कलेक्टर मुरादाबाद	
१०१	महामुनि	म० मोहनलाल मिसलख्वान अदालत आनरेरी मजिस्ट्रेटां कसूर ज़ि० लाहौर	
१०२	धर्म्मपाल	म० कृष्णस्वरूप मोहल्ला टिकैत गंज बदायूं	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
१०३	राजेन्द्रवल	पं० रामचन्द्र बी० ए० सायन्स मास्टर गवर्नमेंन्ट हाई स्कूल भेरा जि० शाहपुर	
१०४	भद्रदत्त	म० रामस्वरूप नायब टपादार ग्राम बलोचपुर डा० हसनपुर जि० गुड़गांवा	
१०५	विष्णुमित्र	पं० आत्माराम वेदी मोहल्ला पंजतीर्थ रियासत जम्बू	
१०६	त्रिलोकीनाथ १	म० छुट्टनलाल ड्राफ्टसमैन द्वारा बाबू मिठ्ठनलाल जी वकील अजमेर	
१०७	वासुदेव	ला० गणेशदास डिप्टी सुपरिंटेंडेंट पुलिस क्वेटा (बलोचिस्तान)	
१०८	सत्यदेव	म० प्रभूदयाल स्टेशनमास्टर N. W. R. सराय बनजारा जि० अम्बाला	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
१०९	त्रिलोकीनाथ	म० बद्रीप्रसाद बाज़ार चौधरी डा० जानसठ जि० मुज़फ्फरनगर	
११०	रत्नाकर	डाक्टर खुशीराम सब ऐसिस्टेण्ट सर्जन अमृतसर	
१११	विद्यानिधि	म० महताबराय क्लर्क अदालतदिवानी जौरा, रियासत ग्वालियर	
११२	इन्द्रदत्त	म० श्रीकृष्ण घड़ीसाज़ मुलतान छावनी	
११३	चिद्घन	म० नागप्रकार श्रीकृष्ण जयराम हैडमास्टर मरहटी पाठशाला वलगाम (मुम्बई)	
११४	महेन्द्रनाथ	म० बहादुरचन्द द्वारा लालाचन्द मोतीराम टोबा टेकसिंह ज़ि० लायलपुर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
११५	दीनानाथ	पं० गुरांदित्ता रिटायर्ड स्टेशनमास्टर कटरामिश्र बेलीराम कूचा नैथनसुख अमृतसर	
११६	भगवद्दत्त	म० झंडूसिंह कुर्क अमीन डा० कैराना ज़ि० मुज़फ्फ़रनगर	
११७	वाचस्पति	म० मथुराप्रशाद हदियाबाद ज़ि० जालन्धर	
११८	रविदत्त	म० दीवानचन्द जिलेदार मजीठा ज़ि० अमृतसर	
११९	हरिनाथ	म० तोलाराम नागपाल डा० गुरुमाणि ज़ि० मुज़फ्फ़रगढ़	
१२०	वीरभद्र	मलिक देवदत्त जी रईस म्याणी शाहपुर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
		(क) पञ्चम श्रेणी ।	
१२१	रामगोपाल	म० भवानी प्रसाद गुप्त रईस हलदौर ज़ि० बिजनौर	
१२२	धनराज	म० यादवराम दुकानदार रायपुर ज़ि० सहारनपुर	
१२३	राजेश्वर	म० जैन्तीप्रसाद सब ओवरसीयर फतहपुर (यू०पी०)	
१२४	भीमसैन	म० बिशनदास प्रधान आर्य्यसमाज सिरीगोबिन्दपुर ज़ि० गुरुदासपुर	
१२५	बलदेव	म० रुलियाराम स्टेशनमास्टर N. W. R. टिब्बी इज़्ज़त रियासत बहावलपुर	
१२६	विद्यानन्द	पं० गीताराम ब्राह्मण घोघड़ीपुर ज़ि० करनाल	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
१२७	विद्यारत्न	म० लक्ष्मणदास बी० ए० मुख्याध्यापक गुरुकुल काङ्गड़ी हरद्वार	
१२८	हरदत्त	म० दौलतराम ठेकेदार कालपी ज़ि० ओरई	
१२९	पुरुषोत्तम	म० जानकीप्रसाद मुख़्तार पीलीभीत	
१३०	देवेन्द्रनाथ	म० दुनिचन्द्र खोसला मेडिकलहाल जालन्धर शहर	
१३१	हरनाथ	चौ० ठाकुरदास कोतवाली बाज़ार धर्म्मशाला पर्वत ज़ि० काङ्गड़ा	
१३२	धर्म्मराज	म० श्यामसुन्दर द्वारा लक्ष्मीदास नायब मुहाफिज़ दफ्तर सदर झंग	
१३३	नित्यानन्द	म० हाकिमराय क्लर्क डी० टी० एस० औफ़िस सक्खर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
१३४	विद्याधर	म० खुशाबीराम स्टेशनमास्टर N. W. R. खानपुर रियासत बहावलपुर	
१३५	वेदपाल	म० गौरीशंकर विज्ज हेडऐसिस्टेंट होम डिपार्टमेंट रियासत काश्मीर जम्मू	
१३६	भीष्म	म० बद्रीप्रशाद वकील डा० रोपड़ ज़ि० अम्बाला	
१३७	हंसराज	म० भोजराज शर्म्मा मोहल्ला सीतल गंज बुलन्दशहर	

(ख) पंचम श्रेणी ।

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
१३८	सत्यदेव	म० भगवानदास बज़ाज़ लोरा लाई बिलोचिस्तान	
१३९	चूड़ामणि	म० गणेशदास भंडारी कूचा भावडयां जालन्धर शहर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
१४०	विद्या भास्कर	म० रघुवरदयाल रामपुर अकबराबाद ज़ि० बिजनौर	
१४१	अर्जुनदेव	म० अमृतराय ओवरसीयर डा० खानकी ज़ि० गुजरां वाला	
१४२	शान्तिस्वरूप	महता ज्ञानचन्द रिटायर्ड पुलिस इन्सपेक्टर दलवाल जेहलम	
१४३	शुकदेव	म० गणेशदत्त मेडिकलहाल छोटा बाज़ार डेरा इस्माइल खां	
१४४	दलीप	म० जहांगीरसिंह ज़िलेदार बुचियाना. लायलपुर	
१४५	शान्तिस्वरूप	म० हरिश्चन्द्र गिरदावर कानूंगो बैरोवाल, अमृतसर	
१४६	सत्यपाल	डा० हरप्रशाद सबअसिस्टेंट सरजन खोस्ट (बलोचिस्तान)	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
१४७	विद्यारत्न	म० भगवानदास मोहल्ला मूलचन्द समीप मंदिर आर्य्यसमाज पटियाला	
१४८	नरोत्तम	ला० कर्मचन्द्र सब डिविज़नल ओफिसर ब्रह्मपुरी चांदा C. P.	
१४९	भूमित्र	म० ठाकुरदास स्टेशनमास्टर चक N. W. R. ज़िला मुलतान	
१५०	उपेन्द्रनाथ	पंडित बृजनाथ मंत्री आर्य्यसमाज लोधरां, (मुलतान)	
१५१	उत्तमचन्द्र	म० हरिश्चन्द्र दारोगा नहर लोधरां, (मुलतान)	
१५२	रामपाल	म० माधोराम कपूर दुकान गोटा बोहड़ का चौक, जालन्धर शहर	
१५३	ब्रह्मदत्त	म० नथमल तिवाड़ी क्लर्क लोको ऑफिस अजमेर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
		(क) चतुर्थश्रेणी	
१५४	नचिकेता	म० गणपतिलाल द्वारा सरदार शिवचन्द कोठारी बाड़ा सराफां इन्दौर	
१५५	प्रेमप्रकाश	म० अमीरसिंह एण्डकम्पनी जर्नल मर्चेन्ट मुरादाबाद	
१५६	सोमदत्त	पं० विष्णुमित्र मुख्याधिष्ठाता शाखागुरुकुल देवबन्धु मुलतान	
१५७	प्रभुदेव	डा० रामलाल सबऐसिस्टेन्ट सर्जन रामनगर गुजरांवाला	
१५८	लक्ष्मण	म० उमादयाल मिश्र डिपुटी पोस्टमास्टर अलमोड़ा	
१५९	रामेश्वर	पं० जयराम ब्राह्मण नरवाना पटियाला	
१६०	जन्मेजय	म० अम्बिकाप्रसाद अहलमद अदालत खफीफा कानपुर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
१६१	प्राणनाथ	म० मोहनलाल कौड़ा सिरीगोबिन्दपुर ज़िला गुरुदासपुर	
१६२	कृष्णदत्त	म० अम्बालाल गोपाल देसाई गजपति देवी सुपरिण्टेंडेण्ड श्री फतहसुवाराव आर्य्यसमाज अनाथालय बड़ौदा	
१६३	नवरत्न	म० जगन्नाथ आर्य्यसमाज म० गंडामल गोविंदराय आर्य्यनमर्चैंट गुजरात पंजाब	
१६४	व्यासदेव	ला० बरकतराम थापर क्लर्क पोस्टमास्टर जनरल औफिस लाहौर	
१६५	इन्द्राजित	म० हरिश्चन्द्र अहलमद कलक्टरी मुज़फ्फरनगर	
१६६	भद्रसेन	म० लेखराम सबोवरसीयर खानकी गुजरांवाला	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
१६७	दिवाकर	म० घसीटाराम म्युनिस्पिल कमिश्नर मुकेरियां ज़ि० हुशयारपुर	
१६८	जनक	म० जौहरीलाल यार्ड फोरमैन स्टेशन गाज़ियाबाद	
१६९	भवनाथ	म० विदूभूषणराय बुकिंगक्लर्क मिरज़ापुर (*E.I. R.*)	
१७०	रामस्वरूप	म० बलदेवप्रसाद शर्मा हैडक्लार्क कैवलरी स्कूल सागर (C. P.)	
१७१	विद्याभूषण	म० द्वारकाप्रसाद ओवरसीयर म्यूनिस्पिलटी देहली	
१७२	विश्वनाथ	पं० गुरांदित्ता रिटायर्ड स्टेशनमास्टर कटरा मिश्र बेलीराम कूचा नैयनसुख अमृतसर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
१७३	राजहंस	म० भगवन्तराय कानूगो धामपुर (बिजनौर)	
		(ख) चतुर्थ श्रेणी	
१७४	भीमसेन	म० महाराज ओवरसीयर MYAUNGMYO Lower Burma	
१७५	प्रजापति	म० सत्यचरणराय ६/१ बड़तला स्ट्रीट कलकत्ता	
१७६	वंशधर	म० मूलचन्दर्जा क्लर्क नहर केटा (बलोचिस्तान)	
१७७	अमीचन्द्र	म० जीवनलाल सबोवरसीयर डा० महोवा ज़ि० हमीरपुर	
१७८	ईश्वरदत्त	डा० फकीरे रामजी मेडीकलहाल नई सड़क कानपुर	
१७९	रामनाथ	म० भोलानाथ रत्नलाल मौहल्ला कोट अमरोहा ज़िला मुरादाबाद	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
१८०	रणजीत	म० लक्ष्मणदास स्टेशनमास्टर लोधरां (मुलतान)	
१८१	शान्तिस्वरूप	म० किशनस्वरूप मुहल्ला टिकैत गंज बदायुं	
१८२	दिनमणिशंकर	पं० नर्मदाशंकर सदाशिव त्रिवेदी स्कूलमास्टर डा० पींजरत सूरत (गुजरात)	
१८३	नारायणदत्त	म० गोकलचन्द बौरा मकान बख़्शी गोकुलदास जेहलम	
१८४	देवराज	म० मेलाराम पुत्र म० सुखदयाल गुरुबाज़ार अमृतसर	
१८५	जगत्प्रकाश	म० अयोध्याप्रसाद रईस अम्बैठा सहारनपुर	
१८६	प्रभाकर	म० रामसरणदास सभासद आर्य्यसमाज मुकेरिय होशयारपुर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
१८७	आर्य्यमुनि	म० वज़ीरचन्द्र बैटरीदफ़ेदार नं० २ मियूलकोर रावलपिण्डी	
१८८	नरदेव	श्रीपाद दामोदर सातवलेकर सुख प्रकाश अनारकली, लाहौर	
१८९	शिवदत्त	म० भूमित्र शर्मा अध्यापक कन्यापाठशाला आर्य्यसमाज मुलतान शहर	
१९०	विजय	डा० रामजी रिटायर्ड I.S.M.D. बाबू मुहल्ला क्वेटा (बलोचिस्तान)	
१९१	ओ३म् प्रकाश	म० द्वारिकादास ओवरसियर म्यूनिसिपिलिटी देहली	
१९२	जयदेव	मलिक इन्द्रभान एकौन्टेन्ट ऐग्ज़ामीनर ओफिस P.W.D. लाहौर	
१९३	हरिप्रकाश	म० प्यारेलाल सबोवरसीयर P.W.D. मरदान ज़ि० पेशावर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
१९४	अर्जुनदेव	म० जीवनलाल नाज़र डेरा गाज़ी खां	
		तृतीयश्रेणी	
१९५	सुधन्वा	म० धनीराम कटरा आहलू वालियां अमृतसर	
१९६	परमानन्द	चौ० रामकृष्ण रईस शाखा गुरुकुल देवबन्धु मुलतान	
१९७	धर्मशील	म० काशीराम अध्यापक गुरुकुल काङ्गड़ी हरिद्वार	
१९८	अर्जुन	ला० परमेश्वरीदास सबओवरसीयर डा० वांगावाला जेहलम	
१९९	देवदत्त	मा० मूलचन्द शर्म्मा ओवरसीयर नहर डाकख़ाना रशीदा रेलवे स्टेशन मुलतान	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
२००	वीरेश्वर	म० हजारासिंह ठेकेदार मांडले रोड नं० ७० मांडले ब्रह्मा	
२०१	विक्रमादित्य	पं० ब्रह्मानन्द उपदेशक गुरुकुल काङ्गड़ी हरिद्वार	
२०२	सुयोधन	म० बोसाराम दफ्तर चीफस्टोरकीपर N. W. R. नौलक्खा लाहौर	
२०३	दुष्यन्त	म० शंकरदास वकील शाहपुर (पंजाब)	
२०४	लोकपाल	म० हरनामदास रिवन्यू एकौंटेंट तहसील देहली	
२०५	देवदत्त	म० भगवानदास क्लर्क दफ्तर एग्ज़िक्टिव इंजिनीयर रेलवेस्टेशन भटिण्डा	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
२०६	महाव्रत	म० हरदयालजी आर्य्य द्वारा डाक्टर के० आर० नवलकिशोरजी वर्म्मा आर्य्य मेडीकलहाल पहाड़ी धीरज मुत्तसिल हाथीखाना, देहली	
२०७	धर्म्म प्रकाश	म० अयोध्या प्रसादजी रईस अम्बहैटा ज़ि० (सहारनपुर)	
२०८	चन्द्रगुप्त	म० रामस्वरूपजी सबोवरसीयर मियांमीर सदरबाज़ार लाहौर	
२०९	सोमकीर्ति	हकीम हरीरामजी लूणम्याणी शाहपुर	
२१०	काशीनाथ	पं० राधाचरणजी मिश्र द्वारा पं० शिवप्रसादजी नायब वकील रायगढ़ B. N. R.	
२११	गङ्गादत्त	म० गोबिन्द प्रसादजी पंसारी उपमन्त्री आर्य्यसमाज ग़ाज़ियाबाद	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
२१२	कृपालचन्द्र	म० चिरञ्जीलाल वैश्य वस्तु भंडारी गुरुकुलकाङ्गडी	
२१३	महेन्द्रमणि	डाक्टर इन्द्रमणि पेन्शनर गणेश गंज लखनऊ	
२१४	आत्म प्रकाश	म० रत्नचन्द नागपाल डा० गुरुमाणि मुज़फ्फ़रगढ़	
२१५	धनञ्जय	श्री निवासाचार्य इनामदार अर्ली कट्टी किला रायचूर हैदराबाद दक्षिण	
२१६	विश्वम्भर	म० लक्ष्मणदास स्टेशनमास्टर डा० लोधरां (मुल्तान)	
२१७	श्रीकृष्ण	म० जानकी प्रसाद मुख्तार (पलीभीत)	
२१८	भीम	म० अछरूराम ठेकेदार डा० सतघरा ज़ि० मण्टगुमरी	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
२१९	आनन्दस्वरूप	मुंशीराम स्टेशनमास्टर किला अब्दुल्ला बिलोचिस्तान	
२२०	बलदेव	...वकील डा० मरदान ज़ि० पिशावर	
२२१	यशपाल	श्री रामदेवजी बी० ए० गुरुकुल काङ्गड़ी हरिद्वार	
२२२	सत्यव्रत	श्रीमती अशर्फ़ीदेवी धर्मपत्नी चौधरी फतहसिंह स्वर्गवासी निवादा डा० नांगल ज़ि० बिजनौर	

(क) २ य श्रेणी

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
२२३	बृहस्पति	महाशय श्यामसिंह गुरुकुल फ़र्रुख़ाबाद	
२२४	रघुवीर	म० पतराम प्रधान आर्य्यसमाज नरवाणा रियासत पटियाला	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
२२५	प्रद्युम्न	म. आसाराम ग्रा. आलमपुर डा. रायपुर ज़ि. सहारनपुर	
२२६	[illegible]	म. चेतनानन्द मुख़्तार डाकख़ाना राजनपुर डेरा गाजी खां	
२२७	रणजीत	म. बहादुरसिंह मोहर्रिर ला. गणेशदास जी मुख़्तार मुहल्ला खखरा पीलीभीत	
२२८	रघुनाथ	म. झीनाभाई देवाभाई मंत्री आर्य्यसमाज ग्रा. वीज़लपुर डाकख़ाना जलालपुर ज़ि. सूरत	
२२९	दयानन्द	डाकटर ... पटेल कैमिस्ट एण्ड डैन्टिस्ट अलफिन्स स्टन स्ट्रीट कैम्प करांची	
२३०	भद्रसेन	म. महताबराय कारकुन अदालत दीवानी जौरा ग्वालियर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सुचना
२३१	भवभूती	म. मुरारीलाल शर्म्मा ठेकेदार मुसताबाद जि. रायबरेली	
२३२	लोकेश्वर	पं. रलाराम शास्त्री गुरुकुल काङ्गड़ी हरिद्वार	
२३३	लव	मा० गोवर्धन जी बी. ए. गुरुकुल काङ्गड़ी हरिद्वार	
२३४	भीमसेन	लाला ताराचन्द हेड क्लर्क बुराला डिविज़न लोअर चनाब कैनाल लायलपुर	
२३५	जगदीश	ला. किदारनाथ थापर क्लर्क पोष्टमास्टर जनरल औफिस पंजाब लाहौर	
२३६	अत्रि	ला. लौतिराम ग्रा. आलमपुर डाकख़ाना रायपुर जि. सहारनपुर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सुचना
		(ख) २ य श्रेणी	
२३७	नारायणदत्त	ला. ठाकुरदास द्वारा रामजीदास अत्तार कश्मीरी दरवाज़ा देहली	
२३८	रामचन्द्र	म. पूर्णचन्द द्वारा आर्य्यसमाज स्यालकोट शहर	
२३९	शान्तिस्वरूप	म. रामचन्द्र बी. ए. साईन्स मास्टर गवर्मेन्ट हाई स्कूल भेरा (शाहपुर)	
२४०	ज्ञानचन्द्र	म. हरकृष्णलाल नाका हिंडोलना मुहल्ला लखनऊ	
२४१	शिवदत्त	म. मुन्नासिंह अर्ज़ीनवीस कैम्बलपुर (अटक)	
२४२	विवेकानन्द	पं. ब्रह्मानन्द गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार	
२४३	विराट	म. अमीरचन्द अर्ज़ीनवीस लायलपुर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
२४४	आनन्दस्वरूप	म. धनीराम ठेकेदार नहर नौशहरा पुनुवा ज़ि० अमृतसर	
२४५	श्रीकृष्ण	म. कृपाराम स्टेशन मास्टर नवासा ब्रिटिश ईस्ट अफ़रीका	
२४६	वशिष्ठ	म. दौलतराम रेविन्यू क्लार्क महकमा नहर लायलपुर डिवीज़न लायलपुर	
२४७	विष्णुमित्र	म. नौरंगराय मंत्री आर्य्यसमाज लुधियाना	
२४८	चिरंजीव	म० सर्व दयाल मूसा जी बिलडिंग गाढ़ी खाना कराची	
२४९	दलपति	म. ईश्वरदत्त स्टेशनमास्टर N. W. R. द्वारा कसियांना रेलवे स्टेशन डा० हड़प्पा मंटगुमरी	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
२५०	समरसिंह	महाराणा श्री रणमलसिंह जी ठाकुर साहब सानन्द कोट ज़ि० अहमदाबाद गुजरात	
२५१	मनोरम	म० गोपालदास इन्स्पेक्टर गवर्नमैंट टैलिग्राफ मुलतान शहर	
२५२	सनत्कुमार	डाक्टर गणपतराय ऐसिस्टैण्टसर्जन सदरहास्पिटल आज़म गढ़	
२५३	सुबन्धु	मास्टर देवीचरण मक्खनपुर मैनपुरी	

प्रथम श्रेणी

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
२५४	धर्म्म पाल	म. काशीनाथ फिदा ग्राम जाफरपुर डा. गढ़ी अब्दुल्लाखां ज़ि. सहारनपुर	
२५५	रणधीर	म. बीरसिंह हैड क्लार्क वाटर वर्कस शिमला	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
२५६	ईश्वरदत्त	म. केसरमल द्वारा आर्य्यसमाज स्यालकोट शहर	
२५७	गौतम	म. शंकरदास सराफ मुहल्ला बनियां पाड़ा मेरठ शहर	
२५८	रामचन्द्र	म. हज़ारीलाल डा. मीठापुर (बांकीपुर) (E. I. R.) पटना	
२५९	देवदत्त	म. नत्थूराम बज़ाज़ कियामारी कराची	
२६०	अमरनाथ	म. सुजान सिंह क्लर्क औफिस एजण्ट गवर्नर जनरल क्वेटा (बलोचिस्तान)	
२६१	ब्रह्मदत्त	बाबू वृजलाल क्लर्क दफ़तर सिविलसर्जन मरदान (पेशावर)	
२६२	भरत	म. लक्ष्मणदास गुरुबाज़ार अमृतसर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
२६३	धर्मपाल	म. सुन्दरदास पटवारी नहर चक नं. २०२ डा. २०४ ज़ि. लायलपुर	
२६४	अङ्गिरा	म. अरूड़ीमल क्लर्क द्वारा बाबू चिरंजीत परमेनन्ट वे इंसपैक्टर गुज्जरखां	
२६५	चेतनदेव	म. बधावामल द्वारा पोस्टमास्टर स्यालकोट शहर	
२६६	सोमदत्त	म. कर्मचन्द हलवाई बाज़ार सूर्ज गंज क्वेटा (बलोचिस्तान)	
२६७	महेन्द्रसिंह	म. गोबिन्दसहाय एगज़ामिनर अकौंटैंट जनरल औफिस सिरीनगर काश्मीर	
२६८	वामदेव	म. दयालजी लल्लू भाई महता ग्राम गढ़त डा. गणदेवी, रियासत बड़ोदा	
२६९	विश्वावसु	म. उदेराम नायब मुदर्रिस मदर्सा नांगल ज़ि. बिजनौर	

संख्या	नाम	संरक्षक का नाम तथा पता	सूचना
२७०	सत्यकाम	ला. [illegible] बी० ए. वकील लुधियाना	
२७१	तारादत्त	पं. [illegible] शर्म्मा अध्यापक गुरुकुल फ़र्रुखाबाद	
२७२	जयचन्द्र	श्रीमती पार्वती देवी अध्यापिका पुत्रीपाठशाला कमालिया मण्टगुमरी	
२७३	भृगु	[illegible] परताप सिंह परमानैंट वेइन्स्पैक्टर ग्रा. कुतुबपुर लोधरां, ज़ि. मुलतान	
२७४	[illegible]	ला. कन्हैयालाल रामगोपाल मारवाड़ी नया गंज कानपुर	